सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 02, अंक 276, नई दिल्ली । रविवार, 15 दिसम्बर 2024, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

अगर भाग्य पर भरोसा है तो जो तकदीर में लिखा है वही पाओगे, और अगर खुद पर भरोसा है तो जो चाहोगे वही पाओगे।

03 मेट्रो और सड़क परिवहन के क्षेत्र में ₹आपश सरकार में आए सुधार से

06 बोर्ड परीक्षा में प्रश्न पत्र कैसे हल करें? विजय गर्ग

08 सर्दियों में उच्च रक्तचाप को नियंत्रित करने के प्रभावी उपाय: विशेषज्ञों की सलाह

ग्रैप-2 के नियम होंगे सख्त, राजधानी में प्रवेश नहीं कर सकेंगे ये वाहन; CAQM ने किया संशोधन

एनसीटी दिल्ली व एनसीआर में डीजल चलित चार पहिया वाहनों पर रोक रहेगी। हालांकि, आपातकालीन वाहनों को छूट दी गई है।

संजय बाटला

नईदिल्ली। दिल्ली-एनसीआर में सर्दी के समय में वायु प्रदूषण को नियंत्रण करने को लेकर केंद्रीय वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) सख्त है। ऐसे में ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान (ग्रैप) में संशोधन किया है। अब ग्रेप में चरण तीन और चार के तहत कुछ प्रतिबंधों को चरण दो और तीन में शामिल किया है। ऐसे में ग्रैप दो और तीन को और सख्त बना दिया है।

इसमें ग्रैप दो लागू होते ही एनसीआर से आने वाली इंटरस्टेट बसों को दिल्ली में नहीं आने दिया जाएगा। इलेक्ट्रिक बसों, सीएनजी बसों और बीएस-6 डीजल बसों को इसमें छूट दी गई है। साथ ही, ऑल इंडिया टूरिस्ट परमिट वाली बसों, टेम्पो ट्रैवलर को भी छूट दी गई है। वहीं, सार्वजनिक परिवहन को मेट्रो व बसों के फेरों को बढ़ाना होगा। रेजिडेंट वेलफेयर एसोसिएशन (आरडब्ल्यूए) को सुरक्षा स्टाफ को हीटर उपलब्ध कराना होगा।

यही नहीं, जब वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 401 से 450 पहुंचेगा तब ग्रैप तीन लागू होते ही दिल्ली के आसपास के अन्य राज्यों से केवल सीएनजी, इलेक्ट्रिक, बीएस-6 वाहनों को एंट्री की इजाजत मिलेगी। इसमें बीएस तीन पेट्रोल और बीएस चार की चार पहिया वाहनों पर प्रतिबंध रहेगा। हालांकि, इसमें दिव्यांग लोगों को छूट मिलेगी।

एनसीटी दिल्ली व एनसीआर में डीजल चलित चार पहिया वाहनों पर रोक रहेगी। हालांकि, आपातकालीन वाहनों को छूट दी गई है। दिल्ली में ट्रकों के प्रवेश पर पूरी तरह से रोक रहेगी। हालांकि, केवल जरूरी सामान लेकर आने वाले ट्रकों और एलएनजी, सीएनजी और इलेक्ट्रिक ट्रकों को आने की अनुमति रहेगी।

प्रदूषण फैलाने वाले ट्रक, वाणिज्यिक चार पहिया वाहनों के दिल्ली में प्रवेश पर प्रतिबंध रहेगा। उधर, एनसीआर की सरकारों को बढ़ते प्रदूषण स्तर को देखते हुए पांचवीं कक्षा तक कक्षाएं हाइब्रिड मोड में संचालित करनी होगी। दूसरी ओर केंद्र सरकार को ऑफिस में 50 फीसदी कर्मचारियों के लिए घर से काम करने का फैसला लेना होगा।

नोएडा मेट्रो: एक्वा लाइन विस्तार में जुड़ेंगे 11 नए स्टेशन

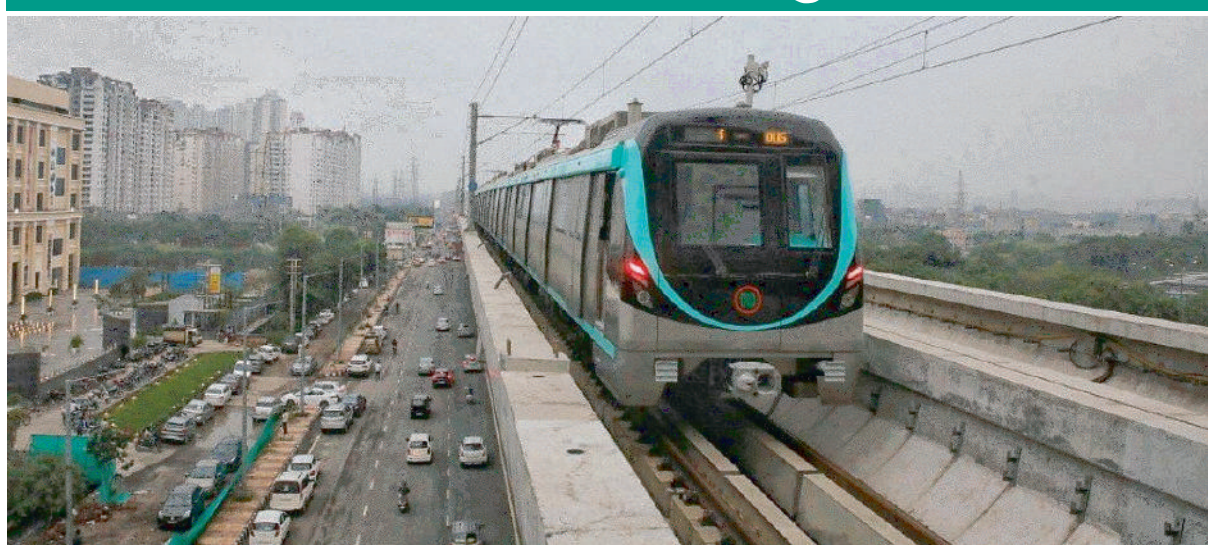

इशिका मुख्य रिपोर्टर न्यूज परिवहन विशेष

नोएडा मेट्रो के एक्वा लाइन का विस्तार अब एक नई दिशा में बढ़ रहा है। नोएडा मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन (NMRC) ने घोषणा की है कि एक्वा लाइन में 11 नए स्टेशन जोड़े जाएंगे, जिससे यात्रियों को और अधिक सुविधा मिलेगी। यह विस्तार नोएडा और ग्रेटर नोएडा के बीच यात्रा को और भी आसान बनाएगा।

नए स्टेशनों की सूची

एक्वा लाइन के तहत जोड़े जाने वाले नए स्टेशनों की सूची निम्नलिखित है:

1. नोएडा सेक्टर-137
2. नोएडा सेक्टर-142
3. नोएडा सेक्टर-143
4. नोएडा सेक्टर-144
5. नोएडा सेक्टर-145
6. नोएडा सेक्टर-146
7. नोएडा सेक्टर-147
8. ग्रेटर नोएडा वेस्ट
9. ग्रेटर नोएडा सेक्टर-1
10. ग्रेटर नोएडा सेक्टर-2
11. ग्रेटर नोएडा सेक्टर-3

यात्रियों को मिलेगी सुविधा

इस विस्तार से यात्रियों को कई लाभ होंगे। नए स्टेशनों के जुड़ने से यात्रा का समय कम होगा और ट्रैफिक जाम से राहत मिलेगी। इसके अलावा, यह क्षेत्रीय विकास में भी सहायक साबित होगा, जिससे आर्थिक गतिविधियाँ बढ़ेंगी।

परियोजना की प्रगति

NMRC ने बताया कि नए स्टेशनों का निर्माण तेजी से किया जाएगा और यह परियोजना समय पर पूरी करने का लक्ष्य रखा गया है। इस परियोजना के तहत आवश्यक सभी सुविधाओं का ध्यान रखा जाएगा, ताकि यात्रियों को बेहतर अनुभव मिल सके

नोएडा मेट्रो का एक्वा लाइन विस्तार न केवल यात्रियों के लिए सुविधाजनक होगा, बल्कि यह क्षेत्र के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। नए स्टेशनों के जुड़ने से लोगों को बेहतर परिवहन सुविधा मिलेगी, जिससे वे अपने कार्यस्थलों और अन्य स्थानों तक आसानी से पहुँच सकेंगे।

इस विस्तार की प्रक्रिया पर नजर रखी जाएगी और उम्मीद है कि जल्द ही ये स्टेशन चालू हो जाएंगे।

दिल्ली के इस इलाके से हटेंगे ट्रैफिक सिग्नल बनेगा यू-टर्न, लोगों को मिलेगा जाम से छुटकारा

इशिका मुख्य रिपोर्टर न्यूज परिवहन विशेष

नई दिल्ली। दिल्लीवासियों के लिए एक बड़ी राहत भरी खबर है। राजधानी के ट्रैफिक जाम से परेशान लोगों के लिए नई योजना तैयार की गई है। दक्षिणी दिल्ली के व्यस्ततम इलाके पंचशील फ्लाईओवर के पास से ट्रैफिक सिग्नल हटाने का निर्णय लिया गया है। इसकी जगह यू-टर्न बनाया जाएगा, जिससे ट्रैफिक जाम की समस्या का समाधान होने की उम्मीद है।

कहां हो रहा है यह बदलाव?

यह परिवर्तन मालवीय नगर और पंचशील फ्लाईओवर के पास किया जा रहा है। यह इलाका दिल्ली के सबसे व्यस्ततम मार्गों में से एक है, जहां हर दिन हजारों वाहन गुजरते हैं। ट्रैफिक सिग्नल के कारण यहां अक्सर जाम की समस्या होती थी, जिससे यात्रियों को काफी परेशानी होती थी।

कैसे होगा फायदा?

- यात्रा समय में कमी: सिग्नल हटाने और यू-टर्न बनाने से वाहनों की आवाजाही तेजी से हो सकेगी।
- कम जाम: बिना रुकावट के ट्रैफिक बहाव से जाम की समस्या घटेगी।
- ईंधन की बचत: ट्रैफिक में फंसे रहने से होने वाली ईंधन की बर्बादी को रोका जा सकेगा।
- पर्यावरण संरक्षण: ट्रैफिक जाम से होने वाले प्रदूषण में कमी आएगी।

योजना का उद्देश्य

दिल्ली सरकार और ट्रैफिक पुलिस का उद्देश्य इस बदलाव के जरिए ट्रैफिक प्रबंधन को बेहतर बनाना है। दिल्ली के ट्रैफिक उपायुक्त ने बताया कि पंचशील फ्लाईओवर और उसके आसपास की सड़कों पर हर समय भारी ट्रैफिक रहता है। सिग्नल हटाने से इन मार्गों पर वाहन चालकों को बड़ी राहत मिलेगी।

सड़क पर ट्रैफिक सुधार की अन्य योजनाएं

इस योजना के अलावा दिल्ली सरकार और नगर निगम अन्य प्रमुख इलाकों में भी ट्रैफिक सुधार के लिए काम कर रहे हैं। खासतौर पर स्कूलों और अस्पतालों के पास यातायात को सुगम बनाने पर जोर दिया जा रहा है।

निर्माण कार्य और संभावित दिक्कतें

यू-टर्न के निर्माण के दौरान कुछ दिनों के लिए ट्रैफिक पर असर पड़ सकता है। लेकिन ट्रैफिक पुलिस का कहना है कि वैकल्पिक मार्ग बनाए गए हैं, ताकि लोगों को परेशानी न हो।

दिल्ली जैसे महानगर में ट्रैफिक जाम की समस्या का समाधान समय की मांग है। पंचशील फ्लाईओवर के पास सिग्नल हटाने और यू-टर्न बनाने की योजना इस दिशा में एक सकारात्मक कदम है। उम्मीद है कि इससे न केवल समय और ईंधन की बचत होगी, बल्कि दिल्ली का ट्रैफिक भी सुगम होगा।

नई योजना से दिल्लीवासी कितने संतुष्ट होंगे, यह तो वक्त ही बताएगा। लेकिन फिलहाल, यह बदलाव उनके लिए राहत की उम्मीद जरूर लेकर आया है।

महाकुंभ के लिए 'भगवा रंग' में रफ्तार भरेंगी रोडवेज बसें, गाजियाबाद में इन इलाकों से होंगी रवाना

परिवहन विशेष न्यूज

उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में महाकुंभ मेले को लेकर तैयारी जोरों-शोरों से जारी है। भगवा रंग में भारतीय संस्कृति हिंदू का प्रतीक माना जात है। इसी को देखते हुए यूपी में परिवहन निगम की रोडवेज बसों को भगवा रंग में बदला जा रहा है। अगले साल 13 जनवरी से 26 फरवरी तक महाकुंभ मेले का आयोजन बहुत ही धूमधाम से होगा।

साहिबाबाद। भगवा रंग में भारतीय संस्कृति, हिंदू धर्म व जीवन पद्धति का संदेश छिपा है। अब यह रंग श्रद्धालुओं को महाकुंभ में ले जाने वालीं परिवहन निगम की रोडवेज बसों पर भी दिखाई देगा। जो श्रद्धालुओं को इसका एहसास कराएगा। शासन के आदेश पर बसों को भगवा रंग से रंगने का कार्य शुरू कर दिया गया है।

इसके लिए निगम को शासन से करीब 20.48 लाख का बजट भी मिला है। प्रदेश के प्रयागराज में 13 जनवरी से 26 फरवरी तक महाकुंभ मेले का आयोजन होगा। श्रद्धालुओं को कुंभ मेला में शामिल होने के लिए किसी तरह की परेशानी न हो इसके लिए गाजियाबाद क्षेत्र के कौशांबी, लोनी, साहिबाबाद, हापुड़, सिकंदराबाद, खुर्जा और बुलंदशहर डिपो की 600 रोडवेज बसें भी आरक्षित की गईं हैं।

344 बसें पहले ही भगवा रंग में रंगी जा चुकीं

इनमें से 344 बसें पहले ही भगवा रंग की हैं। इनमें से 256 बसें ऐसी हैं, जो भगवा रंग की नहीं हैं। ये बसें लाल और सफेद रंग की हैं। शासन से आदेश जारी किए गए हैं कि जो बसें महाकुंभ में शामिल होंगी, वह भगवा रंग में रंगी होनी चाहिए। लाल और सफेद रंग की बसों को भी भगवा रंग में रंगा जाएगा।

इसके लिए शासन से प्रत्येक बस के लिए आठ हजार का बजट मिला है। बसों को रंगने का कार्य शुरू कर दिया गया है। दिसंबर के अंत तक रंगाई का कार्य पूरा कर लिया जाएगा। दरअसल, रीजन की बसों का मऊ, गोरखपुर, आंबेडकर नगर, हापुड़, गाजियाबाद और बाराबंकी समेत कुल 11 रूटों से बसों का संचालन किया जाएगा।

हर बस पर लिखा होगा "महाकुंभ चलें"

जिन बसों को भगवा रंग में रंगा जा रहा है उन सभी बसों पर "महाकुंभ चलें" भी लिखा होगा। इससे श्रद्धालु महाकुंभ मेला में जाने वाली बसों की आसानी से पहचान कर सकेंगे। इसके साथ ही श्रद्धालुओं की आस्था को ध्यान में रखते हुए बसों में भजन भी बजेंगे।

एक हजार से अधिक चालक-परिचालकों को दिया जाएगा प्रशिक्षण

महाकुंभ जाने वाली बसों पर एक हजार से अधिक चालक-परिचालकों की ड्यूटी लगाई गई है उन्हें प्रशिक्षण दिया जाएगा।

प्रशिक्षण में उन्हें श्रद्धालुओं से व्यवहार से लेकर किसी तरह की परेशानी आने पर उससे निपटने के बारे में बताया जाएगा।

श्रद्धालुओं को परेशानी न हो।

यूनिफॉर्म में होंगे चालक-परिचालक

रोडवेज बसों में सामान्य तौर पर चालक-परिचालक बिना यूनिफार्म के देखने को मिल जाएंगे, लेकिन महाकुंभ के लिए संचालित बसों में प्रत्येक चालक-परिचालक यूनिफार्म में ही होंगे।

महाकुंभ की तैयारी प्राथमिकता से की जा रही है। महाकुंभ के लिए आरक्षित बसों को भगवा रंग में रंगा जाएगा। रंगने का कार्य शुरू कर दिया गया है। प्रत्येक बस के लिए आठ हजार का बजट मिला है। - विजय चौधरी, सेवा प्रबंधक, उत्तर प्रदेश राज्य सड़क परिवहन निगम।

महाकुंभ के दौरान रोडवेज चलाएगा 7550 बसें, इनमें सात हजार बसें रोडवेज होंगी

यूपी परिवहन विभाग ने महाकुंभ के लिए सात हजार से ज्यादा बसें चलाने का निर्णय लिया है। वहीं, मुख्य स्नान के पर्वों के लिए निशुल्क बसें चलाई जाएंगी।

लखनऊ। अगले महीने से शुरू होने वाले महाकुंभ के लिए रोडवेज प्रशासन ने तैयारियां तेज कर दीं हैं। रोडवेज महाकुंभ के दौरान सात हजार स्पेशल बसें चलाएगा। इसके अलावा 350 शटल और 200 इलेक्ट्रिक सिटी बसें भी चलेंगी। मुख्य स्नान पर्वों पर शटल बसों से श्रद्धालुओं को निशुल्क यात्रा कराई जाएगी।

परिवहन राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) दयाशंकर सिंह ने बताया कि पहले चरण के लिए दो हजार बसों की व्यवस्था की गई है। मौनी अमावस्या पर्व पर सात हजार बसें चलाई जाएंगी। इनमें 6800 साधारण और 200 एसी बसें होंगी। सभी शटल बसें नई होंगी। इन सभी बसों पर महाकुंभ का लोगो भी रहेगा। इन बसों के संचालन के लिए रोडवेज के 22 अफसरों को जिम्मेदारी सौंपी गई है।

मुरादाबाद के सेवा प्रबंधक अनुराग यादव को इंचार्ज बनाया गया है। प्रयागराज जाने वाले सात मार्गों पर आपात स्थिति से निपटने के लिए क्विक रिस्पॉन्स टीमें तैनात की गई हैं। टीम में

प्रवर्तन अधिकारी और तकनीकी कर्मचारी भी होंगे। मेला क्षेत्र में आठ अस्थायी बस अड्डे बनाए गए हैं। मुख्यालय से प्रधान प्रबंधक स्तर के अधिकारियों सहित कुछ सेवानिवृत्त सलाहकार भी तैनात किए गए हैं।

गौरव वर्मा बने रोडवेज के मेला अधिकारी

रोडवेज एमडी मासूम अली सरवर ने बताया कि गौरव वर्मा को रोडवेज का मेला अधिकारी बनाया गया है। अस्थायी बस स्टेशनों पर ब्राउजर तैनात किए जाएंगे जो मोबाइल डीजल डिस्पेंसिंग यूनिट का काम करेंगे। रोडवेज का टोल फ्री नंबर 18001802877 और व्हाट्सएप नंबर 9415049606 है। यह नंबर 24 घंटे काम करेगा।

अपनी ऐतिहासिक धरोहर, शानदार किलों और रंगीन बाजारों के लिए प्रसिद्ध है जोधपुर

उम्मेद भवन पैलेस, जोधपुर का एक और प्रमुख आकर्षण है। यह पैलेस 20वीं शताब्दी की शुरुआत में बना था और इसे महाराजा उम्मेद सिंह ने बनवाया था। यह पैलेस एक विशाल और भव्य संरचना है, जिसे सफेद बलुआ पत्थर से बनाया गया है

नई दिल्ली। राजस्थान का जोधपुर, जिसे ब्लू सिटी के नाम से भी जाना जाता है, अपनी ऐतिहासिक धरोहर, शानदार किलों और रंगीन बाजारों के लिए प्रसिद्ध है। यह शहर राजस्थान के पश्चिमी हिस्से में स्थित है और देश-विदेश के पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है। जोधपुर का ऐतिहासिक महत्व और यहाँ की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर इसे एक प्रमुख पर्यटन स्थल बनाती है। आइए, जानते हैं जोधपुर के प्रमुख पर्यटन स्थलों के बारे में।

1. मेहरानगढ़ किला

जोधपुर का सबसे प्रमुख और प्रसिद्ध स्थल है मेहरानगढ़ किला। यह किला शहर के ऊपर एक पहाड़ी पर स्थित है और जोधपुर का सबसे बड़ा किला माना जाता है। इस किले का निर्माण 1460 में राव जोधा ने करवाया था। किले में प्रवेश करने के लिए एक विशाल गेट और ऊँची दीवारें हैं, जो इसे बेहद मजबूत और प्रभावशाली बनाती हैं। किले के अंदर आप राजपूत शासनकाल के अद्भुत आर्टिफैक्ट्स, संग्रहालय, महल और खूबसूरत आंगनों का अनुभव कर सकते हैं। किले से जोधपुर शहर का दृश्य अद्भुत होता है, और यह एक शानदार फोटोस्पॉट है।

2. उम्मेद भवन पैलेस

उम्मेद भवन पैलेस, जोधपुर का एक और प्रमुख आकर्षण है। यह पैलेस 20वीं शताब्दी की शुरुआत में बना था और इसे महाराजा उम्मेद सिंह ने बनवाया था। यह पैलेस एक विशाल और भव्य संरचना है, जिसे सफेद बलुआ पत्थर से बनाया गया है। इस पैलेस के अंदर एक संग्रहालय और होटल भी है, जो पर्यटकों को एक लग्ज़री अनुभव प्रदान करता है। इस पैलेस के विशाल बागीचों और सुंदर वास्तुकला के कारण यह जोधपुर के प्रमुख पर्यटन स्थलों में से एक है।

3. जसवंत ठाकुर महल

यह महल जोधपुर के बाहर स्थित है और यह जसवंत सिंह के सम्मान में बनवाया गया था। महल में एक सुंदर संग्रहालय है, जिसमें राजपूतों की ऐतिहासिक वस्तुएं और चित्र प्रदर्शित किए गए हैं। महल की वास्तुकला अत्यंत सुंदर है और यह पर्यटकों को एक शांतिपूर्ण वातावरण में समय बिताने का अवसर प्रदान करता है।

4. साधी-होली (Clock Tower) और मांडोर गार्डन

जोधपुर का प्रसिद्ध घड़ी टॉवर (Clock Tower) और मांडोर गार्डन पर्यटकों के लिए एक अन्य आकर्षण स्थल हैं। घड़ी टॉवर के पास स्थित बाजार में राजस्थान की पारंपरिक कला और हस्तशिल्प के सामान मिलते हैं, जो यहां के पर्यटकों को बहुत पसंद आते हैं। मांडोर गार्डन ऐतिहासिक स्मारकों और छतरियों से घिरा हुआ एक शांतिपूर्ण स्थान है, जो शाही परिवारों की याद में बनाया गया था। यहां के मंदिर, छतरियां और बागीचे दर्शनीय हैं।

5. काठियावाड़ी बाजार और ओल्ड जोधपुर

जोधपुर का काठियावाड़ी बाजार शहर के ऐतिहासिक क्षेत्र में स्थित है और यह जगह खरीदारी के शौकिनों के लिए आदर्श है। यहां पर आपको राजस्थान की पारंपरिक वस्तुएं, जैसे कि चूड़ियां, राजस्थानी आर्टिफैक्ट्स, कालीन, पंखे और ऊन के कपड़े मिल सकते हैं। ओल्ड जोधपुर की संकरी गलियाँ और रंगीन घर भी देखने लायक हैं। इन गलियों में घूमते हुए आप राजस्थान के पारंपरिक जीवनशैली और वास्तुकला का अनुभव कर सकते हैं।

6. जोधपुर के मंदिर

जोधपुर में कई ऐतिहासिक और धार्मिक मंदिर भी हैं, जो पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं:

महा देवी मंदिर: यह मंदिर महाकाली को समर्पित है और मेहरानगढ़ किले के पास स्थित है।

रा की सर की छतरी: यह छतरी रानी की समाधि के रूप में प्रसिद्ध है और इसकी वास्तुकला बेहद आकर्षक है।

7. ओसियां और सोमलता मंदिर

ओसियां, जो जोधपुर से लगभग 65 किलोमीटर दूर स्थित है, एक ऐतिहासिक स्थल है जहाँ प्राचीन मंदिर और कला के अद्भुत उदाहरण देखने को मिलते हैं। सोमलता मंदिर यहाँ का प्रमुख आकर्षण है, जो अपने अद्भुत वास्तुकला और कलाकृतियों के लिए प्रसिद्ध है।

8. थार डेजर्ट सफारी

जोधपुर के नजदीक स्थित थार रेगिस्तान में सफारी का अनुभव भी एक अद्वितीय अनुभव है। पर्यटक यहाँ ऊंट की सवारी और जीप सफारी का आनंद ले सकते हैं। रेगिस्तान के बीच खुले आकाश के नीचे रात बिताने का अनुभव बहुत रोमांचक होता है।

कैसे पहुंचे जोधपुर?

हवाई मार्ग: जोधपुर का एक अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट है, जो प्रमुख शहरों से जुड़ा हुआ है। आप दिल्ली, मुंबई, जयपुर आदि से सीधी उड़ान से जोधपुर पहुंच सकते हैं।

रेल मार्ग: जोधपुर रेलवे स्टेशन प्रमुख भारतीय शहरों से जुड़ा हुआ है और यहां से ट्रेन द्वारा आसानी से पहुंचा जा सकता है।

सड़क मार्ग: जोधपुर राजस्थान के प्रमुख शहरों से सड़क मार्ग द्वारा भी जुड़ा हुआ है। यहां तक पहुंचने के लिए टैक्सी, बस और निजी वाहन उपलब्ध हैं।

सर्वोत्तम समय

जोधपुर घूमने का सबसे अच्छा समय अक्टूबर से मार्च के बीच है, जब मौसम ठंडा और सुखद रहता है। गर्मियों में यहाँ का तापमान बहुत बढ़ जाता है, इसलिए इस मौसम में यात्रा करने से बचना चाहिए।

जोधपुर राजस्थान के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर से भरपूर एक अद्भुत पर्यटन स्थल है। यहाँ के किले, महल, मंदिर और रेगिस्तान पर्यटकों को एक अद्वितीय अनुभव प्रदान करते हैं। जोधपुर का दौरा करने से आपको राजस्थान की राजपूत संस्कृति, वास्तुकला और इतिहास को नजदीक से जानने का अवसर मिलता है।

व्हाट्सएप ने लॉन्च किए ये 4 नए फीचर, अब कॉलिंग और वीडियो होगी

हाल ही में व्हाट्सएप ने कई शानदार फीचर को पेश किए है। इन फीचर की मदद से आप लोगों से किसी दोस्त या परिवार जन को ग्रुप कॉल पर सरप्राइज दे सकते हैं। इस फीचर के जरिए सामने वाले व्यक्ति को पता नहीं लगेगा।

मेटा स्वामित्व व्हाट्सएप ने हालिए में चार नए फीचर को रोलआउट किया है। यह मोबाइल यूजर के लिए मददगार होगा, वो लोग ऑडियो और वीडियो कॉलिंग के एक्सीरिएंस को पहले से काफी शानदार बना देंगे। वैसे यह अपडेट मोबाइल और डेस्कटॉप दोनों के लिए हैं। मेटा ओन्ड पर्सनल मैसेजिंग ऐप वॉट्सऐप ने अपने ब्लॉगपोस्ट से नए अपडेट की जानकारी प्रदान की है।

अब वॉट्सऐप पर सरप्राइज दे सकते

वॉट्सऐप ने से खास लोगों को सरप्राइज देने के लिए एक नया फीचर पेश किया है। इसके फीचर के जरिए सेलेक्टेड यूजर को ग्रुप कॉल में जोड़ने का ऑप्शन दिया है। यह फीचर मजेदार तब होगा, जब आप किसी के लिए सीक्रेट तरीके से पार्टी या फिर गिफ्ट देना चाहते हैं।

वीडियो कॉल इफेक्ट मिलेगा

इतना ही नहीं, वॉट्सऐप ने वीडियो कॉलिंग में नया नाइट मोड और कॉल इफेक्ट जोड़ा जा रहा है। यह कई तरह के इफेक्ट जैसे पपी ईयर, माइक्रोफोन, अंडरवाटर इफेक्ट जोड़ने की इजाजत दी जाती है।

वॉट्सऐप ने वादा किया है कि 1:1 और ग्रुप वीडियो कॉलिंग में हायर रेजोल्यूशन वीडियों क्वॉलिटी ऑफर की जा रही है, इससे वीडियों कॉलिंग करने से शानदार पिक्चर क्वॉलिटी मिलती है।

डेस्कटॉप के लिए इंप्रूव्ड कॉलिंग एक्सपीरिएंस

वॉट्सऐप की ओर से डेस्कटॉप के लिए बदलाव किए गए हैं। अब वॉट्सऐप डेस्कटॉप यूजर सीधे नंबर डायल कर पाएंगे। इतना ही नहीं, आप ऐप ओपन करने के साथ ही कॉल टैब पर क्लिक कर पाएंगे। इस पर कॉल शुरु करने के साथ लिंक क्रिएट करने में सुविधा मिलेगी।

न्यू टाइपिंग फीचर

वॉट्सऐप ने नया टाइपिंग इंडिकेटर फीचर जोड़ा जा रहा है, इससे चैट्स में रियल-टाइम चैटिंग का शानदार एक्सपीरिएंस मिलेगा। इस फीचर की मदद से यूजर सामने के टाइमिंग के एक्टिव होने को देख पाएंगे। बता दें कि यह टाइपिंग के मौजूदा विजुअल्स को रिप्लेस करेगा।

जड़ी-बूटियों से बना ये घोल लगाने से 6 महीने तक काले रहेंगे बाल, असर देख आप भी रह जाएंगे हैरान

बालों की हेल्थ को बनाए रखने के लिए आप घरेलू नुस्खे भी आजमा सकते हैं। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको एक ऐसे नुस्खे के बारे में बताने जा रहे हैं, जिसको अपनाने से आपके सफेद बाल नेचुरली काले हो जाएंगे।

हम में से कई लोग सफेद बालों की समस्या से परेशान रहते हैं। सफेद बालों की समस्या से निजात पाने के लिए डाई या फिर केमिकल वाली मेहंदी का इस्तेमाल करते हैं। आजकल बालों का सफेद होना आम समस्या है। लेकिन इसका मतलब यह भी नहीं कि आप सफेद बालों पर केमिकल घिस-घिसकर इन्हें बेजान कर दें। बालों की हेल्थ को बनाए रखने के लिए आप घरेलू नुस्खे भी आजमा सकते हैं। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको एक ऐसे नुस्खे के बारे में बताने जा रहे हैं, जिसको अपनाने से आपके सफेद बाल नेचुरली काले हो जाएंगे और इसका असर 6 महीने तक बना रहेगा।

एक्सपर्ट से जानिए कमाल का नुस्खा

एक्सपर्ट के मुताबिक इस नुस्खे को अपनाने से 6 महीने तक आपके बाल नेचुरल काले रहेंगे। वहीं ये मेहंदी आपके बालों पर 6 महीने तक टिकी रहेगी। तो आइए जानते हैं कि बालों को काला करने वाले इस घोल को तैयार करने के लिए क्या-क्या सामग्री चाहिए होगी।

इन चीजों की होगी जरूरत

चाय पत्ती- 2 चम्मच
मेहंदी पाउडर- 100 ग्राम
खाने वाला चूना- 1/4 चम्मच
मुर्दा सिंगी- 1/4 चम्मच
सरसों का तेल- जरूरत अनुसार

नोट- मुर्दा सिंगी आपको पंसारी की दुकान में आसानी से मिल जाएगा।

ऐसे तैयार करें लेप

एक बाउल में 2 चम्मच पिसी हुई चायपत्ती लें और इसमें खाने वाला चूना, मुर्दा सिंगी और 100 ग्राम मेहंदी पाउडर मिलाएं।

अब इसे अच्छे से मिक्स कर लें और घोल बनाने लायक जरूरत के मुताबिक सरसों का तेल मिलाएं।

यह घोल ज्यादा गाढ़ा या ज्यादा गीला नहीं होना चाहिए। वरना यह बालों पर अधिक देर तक टिक नहीं पाएगा या फिर बालों में चिपक जाएगा।

इसको लगाने के 20 मिनट बाद बाल धो लें।

इस नुस्खे का इस्तेमाल करने से आप पाएंगे कि आपका एक-एक बाल काला हो गया है और यह बालों को भी हेल्दी बनाता है।

डाई भी होगी फेल

एक्सपर्ट की मानें, तो इस नुस्खे का इस्तेमाल करने के बाद आप मार्केट में मिलने वाली केमिकल वाली मेहंदी को भूल जाएंगे। आप देखेंगे कि इसका इस्तेमाल करने से आपके बालों में नेचुरल शाइन आएगी।

जानिए क्या होती है मुर्दा सिंगी

बता दें कि मुर्दा सिंघी पत्थर की तरह दिखने वाली जड़ी-बूटी है। जो ब्यूटी के लिए इस्तेमाल की जाती है और यह बालों के लिए भी बहुत फायदेमंद होती है। मुर्दा सिंघी में मौजूद प्राकृतिक मिनरल्स बालों के पोषण की कमी को दूर कर उन्हें मजबूती देते हैं। साथ ही यह एक्ने, डार्क स्पॉट, पिंपल्स, एक्जिमा और सूजन जैसी कई त्वचा संबंधी समस्या को ठीक करने के लिए भी किया जाता है।

सर्दियों में गर्मा-गर्म चाय पीने हो सकता है भारी नुकसान, एक गलती से कैंसर का खतरा बढ़ जाता

सर्दियों में गर्मा-गरम चाय पीना सभी को पसंद है लेकिन से हद से ज्यादा गर्म चाय पीने से नुकसान हो सकता है। शायद ही आप जानते हैं कि ज्यादा गर्म ड्रिंक पीने से कैंसर का खतरा बढ़ने लगता है। आइए आपको इस बारे में जानकारी बताते हैं।

ठंडे के मौसम में सबसे ज्यादा गर्मा-गर्म चाय-कॉफी अधिक पीने लगते हैं। इसके सेवन से हमें गर्माहट को तो मिलती है साथ ही सर्दी-जुकाम भी दूर हो जाता है। लेकिन एक गलती के कारण पेट और आंत का कैंसर होने का खतरा बना रहता है। चाय-कॉफी ही नहीं, हॉट चॉकलेट, गर्मा-गर्म सूप या फिर कोई और हॉट ड्रिंक्स का सेवन करते हैं, तो इससे कैंसर का खतरा बढ़ने लगता है। टाइम्स ऑफ इंडिया की रिपोर्ट के मुताबिक, एकदम गर्म चाय-कॉफी पीने से कैंसर का खतरा अधिक बढ़ जाता है।

कितनी गर्म चाय पीने से कैंसर का खतरा होता है

इंटरनेशनल एजेंसी फॉर रिसर्च ऑन कैंसर (IARC) के रिपोर्ट से पता चला है कि 65 डिग्री सेल्सियस से अधिक गर्म ड्रिंक इंसानों के लिए संभावित रुप से कार्सिनोजेनिक हो सकती हैं। यानी इतनी गर्म चाय या कॉफी में स्टमक कैंसर या इंटेस्टाइनल कैंसर का खतरा बढ़ सकता है।

आखिर क्यों खतरा है

अगर आप गर्मा-गर्म ड्रिंक का सेवन सबसे ज्यादा करते हैं, तो तापमान अधिक खाने की नली को थर्मल डैमेज पहुंचा सकती है। यह नुकसान पेट और आंतों को करता है। क्लिवलैंड क्लिनिक हेल्थ एसेशियल स्टडी कहती है कि ऐसी ड्रिंक्स से गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल ट्रैक्ट खराब हो सकता है। इसी समस्या से टिश्यू कैंसर बन जाता है।

यह लोग सावधान रहें

- स्मोकिंग करने वाले
- शराब का सेवन करने वाले
- पहले से गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल बीमारी के मरीज

डॉक्टर का भी मानना है कि कम तापमान वाली चाय पीना सही होता है, वहीं अत्याधिक गर्म चाय न पिएं।

कैसे बचा जाए

इस खतरे को कम करने के लिए आप हॉट ड्रिंक्स को पीने से पहले थोड़ा ठंडा होने दें। इसके बाद ही इसका सेवन करें। चाय-कॉफी पीने से पहले इसे फूंक मारकर भी ठंडा किया जा सकता है।

त्रिदेव का अंश और कलियुग के भगवान हैं दत्तात्रेय, जानिए मुहूर्त और पूजन विधि

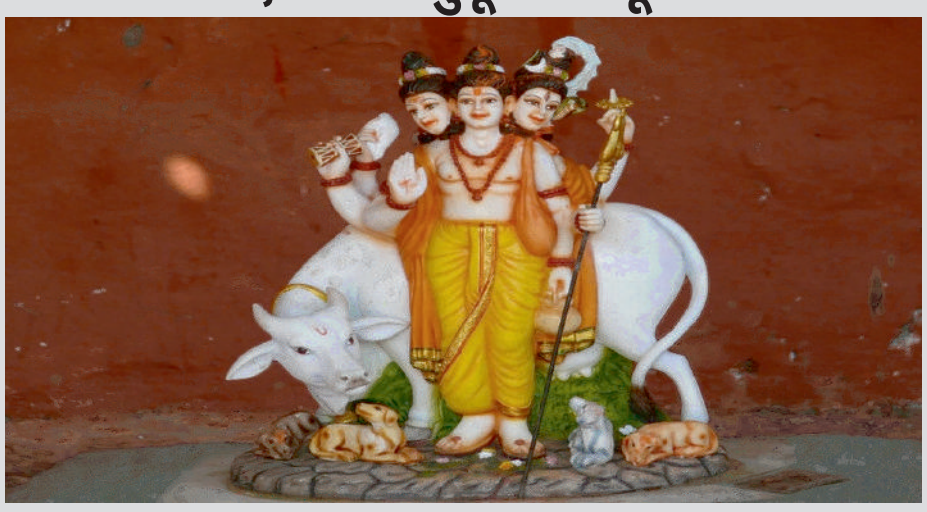

इस बार आज यानी की 14 दिसंबर 2024 को दत्तात्रेय जयंती मनाई जा रही है। जो भी व्यक्ति दत्तात्रेय जयंती के दिन सच्चे मन और विधि-विधान से भगवान दत्तात्रेय की पूजा-अर्चना करते हैं, उनको सभी परेशानियों से छुटकारा मिल जाता है।

हिंदू धर्म में भगवान विष्णु, ब्रह्माजी और भगवान भोलेनाथ की पूजा का विशेष महत्व माना जाता है। इन्हें त्रिदेव भी कहा जाता है। भगवान दत्तात्रेय त्रिदेव के अंश हैं, जिनकी पूजा करने से व्यक्ति को तीनों देवों की पूजा के समान फल मिलता है। तो वहीं कुछ लोग भगवान दत्तात्रेय को गुरु का रूप भी मानते हैं। हर साल मार्गशीर्ष माह की पूर्णिमा तिथि को दत्तात्रेय जयंती मनाई जाती है। इस बार आज यानी की 14 दिसंबर 2024 को दत्तात्रेय जयंती मनाई जा रही है।

धार्मिक मान्यता है कि जो भी व्यक्ति दत्तात्रेय जयंती के दिन सच्चे मन और विधि-विधान से भगवान दत्तात्रेय की पूजा-अर्चना करते हैं, उनको सभी परेशानियों से छुटकारा मिल जाता है। बता दें कि मार्गशीर्ष माह की पूर्णिमा तिथि को भगवान दत्तात्रेय अवतरित हुए थे। तो आइए जानते हैं दत्तात्रेय जयंती पर पूजन का महूर्त, महत्व और पूजन विधि के बारे में...

दत्तात्रेय जयंती 2024

हिंदू पंचांग के मुताबिक इस साल 14 दिसंबर 2024, दिन शनिवार की शाम 04:58 मिनट से पूर्णिमा तिथि की शुरूआत हो रही है। वहीं अगले दिन यानी की 15 दिसंबर 2024 की दोपहर 02:31 मिनट पर इस तिथि की समाप्ति होगी। उदयातिथि के हिसाब से आज यानी की 14 दिसंबर को दत्तात्रेय जयंती मनाई जा रही है।

दत्तात्रेय जयंती का महत्व

बता दें कि मार्गशीर्ष माह में आने वाली पूर्णिमा तिथि बेहद खास है। पूर्णिमा तिथि का संबंध देवी-देवताओं से होता है। इसलिए इस दिन स्नान-दान करना शुभ माना जाता है। वहीं इस तिथि का संबंध चंद्र देव से भी है। मार्गशीर्ष पूर्णिमा का संबंध भगवान दत्तात्रेय से भी है। इस दिन भगवान दत्तात्रेय की पूजा-अर्चना करने से जातक के घर-परिवार में सुख-शांति और समृद्धि का वास होता है।

दत्तात्रेय जयंती पर भगवान दत्तात्रेय के साथ मां लक्ष्मी, भगवान विष्णु, भगवान शिव और चंद्र देव की पूजा करना शुभ माना जाता है। इस दिन के अलावा मार्गशीर्ष पूर्णिमा के दिन भगवान दत्तात्रेय की पूजा-अर्चना करनी चाहिए।

क्रूज टूर पैकेज का लेना है मजा तो इस तरह से IRCTC से बुक करें, ये टूर पैकेज

अगर आप कहीं घूमने का प्लान बनाते हैं, तो सबसे बढ़िया होता है कि आप टूर पैकेज जरिए घूमने जाएं। टूर पैकेज बुक करके जाने से आपको होटल में रुकना, खाना-पीना और ट्रैवलिंग की चिंता नहीं होती है। भारतीय रेलवे की आधिकारिक वेबसाइट पर आपको टूर पैकेज में मिलने वाली सुविधाएं और जानकारी वेबसाइट पर मिल जाएगी।

वैसे कहीं घूमने जाने के लिए टूर पैकेज एकदम बढ़िया होते हैं। कई बार टूर पैकेज जरिए ट्रैवलिंग करना बेहद फायदेमंद होता है। ग्रुप बुकिंग करने पर कम कीमत पर बेहतर सुविधाए प्रदान होती है। चाहे प्राइवेट कंपनी का टूर पैकेज हो या फिर भारतीय रेवले का टूर पैकेज सभी लोग ग्राहकों काफी सुविधाएं प्रदान करवाते हैं। आप ने भारतीय रेलवे का टूर पैकेज के बारे में तो सुना ही होगा, लेकिन क्या आप जानते हैं IRCTC क्रूज टूर पैकेज भी प्रदान करती है। अगर आप इस बारे में जानना चाहते हैं, तो इस आर्टिकल में हम आपको बताने जा रहे हैं। आईआरसीटीसी का क्रूज टूर पैकेज के बारे में, इसे कैसे बुक किया जाता है।

कैसे बुक करें क्रूज टूर पैकेज

- सबसे पहले आप गूगल पर भारतीय रेलवे की आधिकारिक वेबसाइट irctctourism.com को सर्च करें।
- इसके बाद आपको सबसे पहले ऊपर लोकेशन के हिसाब से अलग-अगल पैकेज के नाम जरुर आएंगे।
- यहां पर आपको होटल, फ्लाइट, पैकेज और क्रूज जैसे टिकट बुकिंग का आइकन देखने को मिलेगा।
- फिर आप यहां पर क्रूज टूर पैकेज बुक करना है, इसलिए आप क्रूज के ऑप्शन पर क्लिक करें।
- अब आप देखेंगे की सामने 2 तरह के पैकेज ऑप्शन खुल जाएंगे। इसमें आपको डोमेस्टिक और इंटरनेशनल टूर पैकेज बुक करने का ऑप्शन नजर आएगा।
- यहां आपको डोमेस्टिक रिवर क्रूज के ऑप्शन पर क्लिक करें।
- यहां आपको अलग-अलग लोकेशन से चलाए जाने वाले क्रूज पैकेज के ऑप्शन दिख जाएंगे।
- बता दें कि, क्रूज टूर पैकेज को बुक करने से पहले इंक्वायरी फॉर्म भरना होता है।
- जब आप अपनी ईमेल आईडी, अपना फोन नंबर, कितने लोग यात्रा करने वाले हैं और साथ में कितने बच्चे हैं, इन सब की जानकारी देनी होगी। इसके बाद आप पास मेल पर Reference No. दिया जाएगा। इसके बाद रेलवे की तरफ से कॉल आएगी। फिर आप टूर पैकेज बुक कर पाएंगे।

दिल्ली एनसीआर में प्रदूषण बढ़ने से फिर सख्ती

परिवहन विशेष

नई दिल्ली। केंद्र सरकार के पैनल ने दिल्ली-एनसीआर में प्रदूषण से निपटने के लिए एक संशोधित योजना जारी की है। राज्यों को वायु गुणवत्ता खराब होने पर सख्त उपाय लागू करने के लिए कहा है। इसके अलावा गंभीर वायु प्रदूषण वाले दिनों में स्कूलों के लिए हाइब्रिड मोड में चलाना अनिवार्य कर दिया गया है।

सर्दियों के दौरान नवंबर से जनवरी तक लंबे समय तक खराब बनी रहती है। संशोधित योजना के अनुसार, एनसीआर राज्यों से अंतरराज्यीय बसें, ईवी और सीएनजी या बीएस-VI डीजल से चलने वाली बसों को छोड़कर दिल्ली में प्रवेश करने की अनुमति नहीं दी जाएगी। विकलांग व्यक्तियों को चरण ।।। के तहत दिल्ली और गुरुग्राम, फरीदाबाद, गाजियाबाद और गौतमबुद्ध नगर जिलों में बीएस-।।। पेट्रोल और बीएस-IV डीजल कारों पर लगाए गए प्रतिबंधों से छूट दी गई है।

दिल्ली सरकार को स्टेज III के तहत शहर के भीतर आवश्यक सामान या सेवाएं ले जाने वाले वाहनों को छोड़कर, बीएस-IV या पुराने मानकों क डीजल मध्यम माल वाहनों (एमजीवी) पर प्रतिबंध लगाने का निर्देश दिया गया है। इसी तरह, दिल्ली के बाहर पंजीकृत बीएस-IV या पुराने मानकों के गैर-आवश्यक डीजल हल्के वाणिज्यिक वाहनों (एलसीवी) को शहर में प्रवेश करने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

पैनल ने यह भी अनिवार्य कर दिया है कि दिल्ली, गुरुग्राम, फरीदाबाद, गाजियाबाद और गौतमबुद्ध नगर में स्कूल स्टेज III के तहत पांचवीं तक की कक्षाओं को हाइब्रिड मोड (ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों) में चलाएं। छात्रों और अभिभावकों के पास उसे चुनने का विकल्प होगा। AQI 450 पार करने पर जब ग्रैप स्टेज IV लागू होता है तब दिल्ली और NCR जिलों के स्कूलों को कक्षा VI से IX और XI तक के छात्रों के लिए हाइब्रिड मोड में संचालित करने की जरूरत होगी।

दिल्ली और एनसीआर राज्य सरकारों को चरण ।।। के तहत सार्वजनिक कार्यालयों और

नगर निकायों के लिए समय अलग-अलग करने का भी निर्देश दिया गया है। केंद्र दिल्ली-एनसीआर में केंद्रीय सरकारी कार्यालयों के लिए इसी तरह के अलग-अलग समय पर निर्णय ले सकता है।

इस समय के दौरान, दिल्ली में अक्सर ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान (जीआरएपी) के तहत प्रतिबंध लागू होता है। यह वायु गुणवत्ता को चार चरणों में बांटती है। स्टेज ।(खराब) 201 और 300 के बीच AQI, स्टेज ॥ (बहुत खराब) 301 और 400 के बीच, स्टेज III (गंभीर), 401 और 450 के बीच और 450 से ऊपर AQI के लिए स्टेज IV (गंभीर प्लस) लागू किया जाता है।

पश्चिम विहार के स्कूल में बम की धमकी, दिल्ली पुलिस ने आरोपी को किया ट्रेस

परिवहन विशेष

दिल्ली के पश्चिम विहार इलाके के एक स्कूल में बम धमाके की धमकी ने हड़कंप मचा दिया। एक ईमेल के जरिए स्कूल को धमकी दी गई थी, जिसमें कहा गया था कि स्कूल में बम प्लांट किया गया है। इस घटना के बाद स्कूल प्रशासन, छात्रों और अभिभावकों में दहशत का माहौल बन गया। हालांकि, दिल्ली पुलिस की त्वरित कार्रवाई ने स्थिति को संभाल लिया।

क्या था मामला?

पश्चिम विहार के एक प्रतिष्ठित स्कूल को मंगलवार सुबह एक ईमेल प्राप्त हुआ, जिसमें बम धमाके की चेतावनी दी गई थी। ईमेल मिलने के तुरंत बाद स्कूल प्रशासन ने पुलिस को इसकी सूचना दी। पुलिस ने तुरंत स्कूल परिसर को खाली करवाया और बम निरोधक दस्ते के साथ पूरे इलाके की तलाशी ली।

बम की धमकी निकली फर्जी

तलाशी के दौरान पुलिस को कोई विस्फोटक सामग्री नहीं मिली। जांच के बाद यह स्पष्ट हो गया कि ईमेल फर्जी था और इसे केवल डर पैदा करने के उद्देश्य से भेजा गया था।

पुलिस ने आरोपी को किया ट्रेस

दिल्ली पुलिस की साइबर सेल ने तकनीकी जांच शुरू की और धमकी भेजने वाले आरोपी को जल्द ही ट्रेस कर लिया। आरोपी की लोकेशन और ईमेल सर्वर के जरिए उसे पकड़ने में सफलता मिली। हालांकि, आरोपी की पहचान अभी तक सार्वजनिक नहीं की गई है, लेकिन पुलिस के मुताबिक, वह मानसिक रूप से परेशान हो सकता है या किसी व्यक्तिगत दुश्मनी के चलते ऐसा कदम उठाया हो सकता है।

अभिभावकों की चिंता बढ़ी

घटना के बाद से अभिभावकों में बच्चों की सुरक्षा को लेकर चिंता बढ़ गई है। कई अभिभावकों ने स्कूल प्रशासन से सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम करने की मांग की है।

पुलिस ने क्या कहा?

दिल्ली पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा, ₹हमने आरोपी को ट्रेस कर लिया है और उससे पूछताछ की जा रही है। यह घटना गंभीर है, और ऐसे मामलों में सख्त कार्रवाई की जाएगी।₹ पुलिस ने यह भी बताया कि स्कूलों को अपनी साइबर सुरक्षा मजबूत करने और इस तरह की धमकियों से निपटने के लिए सतर्क रहने की जरूरत है।

स्कूल प्रशासन की प्रतिक्रिया

स्कूल प्रशासन ने अभिभावकों को आश्वासन दिया है कि बच्चों की सुरक्षा उनकी प्राथमिकता है। उन्होंने कहा, "हम पुलिस के साथ मिलकर इस मामले की जांच कर रहे हैं और भविष्य में ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए सभी जरूरी कदम उठाएंगे।"

बम की धमकी ने दिल्ली के पश्चिम विहार इलाके में डर का माहौल बना दिया था, लेकिन पुलिस की त्वरित कार्रवाई से स्थिति नियंत्रण में आ गई। यह घटना स्कूलों की सुरक्षा व्यवस्था और साइबर खतरों के प्रति जागरूकता बढ़ाने की जरूरत को उजागर करती है।

अरविंद केजरीवाल ने अमित शाह को पत्र लिख दिल्ली की बिगड़ी कानून व्यवस्था पर चर्चा के लिए मिलने का मांगा समय

सुषमा रानी

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने दिल्ली में बिगड़ी कानून व्यवस्था के मुद्दे पर शनिवार को केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह को पत्र लिखकर इस मुद्दे पर चर्चा करने के लिए उनसे मिलने का समय मांगा है। उन्होंने पत्र में कहा है कि दिल्ली में जबरन वसूली वाले गैंग सक्रिय हैं, एयरपोर्ट और स्कूल को धमकी मिल रहीं हैं। ड्रग्स से जुड़े अपराधों में 350 फीसद की बढ़ोतरी हुई है। भारत के 19 मेट्रो शहरों में दिल्ली महिलाओं के खिलाफ होने वाले अपराध और हत्या के मामलों में नंबर वन है। इसलिए मैं लोगों की सुरक्षा को लेकर चिंतित हूं। दिल्ली अब देश- विदेश में अपराध की राजधानी के रूप में पहचानी जा रही है। चूंकि दिल्ली की कानून व्यवस्था केंद्र के अधीन है। लिहाजा, इस पर आपकी तरफ से उचित कार्रवाई और सहयोग बेहद जरूरी है।

अरविंद केजरीवाल ने अपने पत्र में लिखा है कि मैं आपको यह पत्र इसलिए लिख रहा हूं, क्योंकि देश के गृह मंत्री होने के नाते दिल्ली की क़ानून व्यवस्था की जिम्मेदारी आपकी है। लेकिन यह बताते हुए बहुत दुख होता है कि दिल्ली अब देश और विदेश में अपराध की राजधानी के रूप में पहचानी जा रही है।

अरविंद केजरीवाल ने पत्र में कहा है कि दिल्ली में जहां महिलाओं के खिलाफ अपराध तेजी से बढ़ रहे हैं, वहीं जबरन वसूली करने वाले गिरोह और गैंगस्टर्स हर गली में सक्रिय हो चुके हैं। ड्रग्स माफिया पूरी दिल्ली में अपने पैर पसार चुके हैं। मोबाइल और चैन स्नैचिंग से पूरी दिल्ली परेशान है। आज अपराधियों के हौसले इतने बुलंद हैं कि दिल्ली की सड़कों पर दिनदहाड़े गोलीबारी, हत्या, अपहरण और चाकूबाजी जैसी घटनाओं को अंजाम दिया जा

रहा है।

उन्होंने आगे कहा है कि पिछले 6 महीनों में दिल्ली के 300 से ज्यादा स्कूलों-कॉलेजों, 100 से ज़्यादा अस्पतालों, एयरपोर्ट और मॉल पर लगातार बम धमाकों की धमकियां दी जा रही हैं। ये रोज़- रोज नक़ली धमकी देने वाले पकड़े क्यों नहीं जा रहे? क्या आप सोच सकते हैं एक बच्चे पर क्या गुजरती है, उसके मां-बाप पर क्या गुजरती है जब बम की धमकी की वजह से स्कूल खाली करवा कर बच्चों को घर भेज दिया जाता है? आज दिल्ली के हर माता पिता और हर बच्चा बम के डर के साये में जी रहा है। यह कितना शर्मनाक है कि आपकी देखरेख में हमारी गौरवशाली राजधानी क़ानून व्यवस्था की असफलता के कारण अब 'रेप कैपिटल', 'ड्रग कैपिटल' और 'गैंगस्टर कैपिटल' जैसे नामों से जानी जा रही है।

अरविंद केजरीवाल ने पत्र मैं केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह का ध्यान दिल्ली की कानून व्यवस्था से जुड़े कुछ चिंताजनक आँकड़ों पर भी आकर्षित किया है। उन्होंने बताया है कि भारत के 19 मेट्रो शहरों में महिलाओं के खिलाफ होने वाले अपराधों में दिल्ली प्रथम स्थान पर है और हत्या के मामलों में भी दिल्ली नंबर एक पर है। दिल्ली में 2019 से अब तक ड्रग्स से जुड़े अपराधों में 350 फीसद की वृद्धि हुई है। औसतन हर दिन 3 महिलाएँ बलात्कार का शिकार होती हैं। हर दूसरे दिन हमारे किसी व्यापारी भाई को फिरौती की कॉल आती है। ये आंकड़े बदहाल हो चुकी कानून व्यवस्था की गवाही दे रहे हैं।

अरविंद केजरीवाल ने कहा है कि अमित शाह , मैं दिल्ली के लोगों के बीच लगातार जा रहा हूँ और राजधानी में बढ़ते अपराधों को लेकर जनता में गहरी चिंता देख रहा हूँ। माताएँ और बहनें सवाल कर रही हैं, ₹क्या हमारे लिए दिल्ली सुरक्षित नहीं हो सकती?" व्यापारी भाई पूछ रहे हैं, "क्या हम बिना अपराधियों के डर के अपना व्यवसाय नहीं चला सकते?" आज, दिल्लीवासियों के मन में सबसे बड़ा सवाल यही है: "क्या देश की राजधानी दिल्ली में हम बेहतर कानून व्यवस्था के हकदार नहीं हैं?"

पत्र के अंत में उन्होंने कहा कि दिल्ली पुलिस और कानून व्यवस्था केंद्र सरकार के अधीन है, ऐसे में इस गंभीर विषय में आपकी तरफ से उचित कार्रवाई और सहयोग की बहुत जरुरत है। गृहमंत्री अमित शाह , स्थिति बहुत खराब है। हमें राजनीति से ऊपर उठना होगा और दिल्ली की कानून व्यवस्था को तुरंत दुरुस्त करना होगा। मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप बहुत जल्द अपना कीमती समय दें ताकि मैं आपको इस विषय की पूरी जानकारी दे सकूँ । मैं आपके जवाब का इंतजार करूँगा।

दिल्ली में घुसपैठियों पर पुलिस ने शुरू की कार्रवाई, पहचान कर वापस बांग्लादेश भेजा जा रहा; इन इलाकों पर नजर

परिवहन विशेष

नई दिल्ली, दिल्ली में लाखों की संख्या में विभिन्न झुग्गी बस्तियों में अवैध तरीके से रहने वाले बांग्लादेशी नागरिकों की पहचान कर उन्हें वापस बांग्लादेश भेजने की कार्रवाई शुरू कर दी गई है। पिछले एक सप्ताह में सात बांग्लादेशी घुसपैठिये की पहचान की गई जो लंबे समय से दिल्ली के विभिन्न इलाकों में रह रहे थे लेकिन उनके पास भारतीय नागरिकता से संबंधित कोई भी दस्तावेज जैसे पैन, आधार व वोटर कार्ड नहीं मिले। उनमें छह घुसपैठिये को वापस बांग्लादेश भेज दिए गए। उन्हें वापस भेजने में कोई कानूनी अड़चन नहीं आई। शेष एक बांग्लादेशी को सराय रोहिल्ला के शाहजादाबाद स्थित डिटेंशन सेंटर में रखा गया है।

उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना के निर्देश पर सभी 15 जिले के सभी थाना पुलिस ने अपने-अपने इलाके में अवैधरूप से रह रहे बांग्लादेशी घुसपैठियों की पहचान करने के लिए एक सप्ताह से विशेष अभियान चला रखा है। अभियान के तहत अब तक सात बांग्लादेशी पकड़े गए हैं। पुलिस अधिकारी का कहना है कि दिल्ली में दो तरह के बांग्लादेशी नागरिक रहते हैं। एक जो बांग्लादेश से नदी पार कर भारत की सीमा में प्रवेश किए। उनके पास बांग्लादेश से संबंधित कोई भी दस्तावेज नहीं पाए गए।

अवैध तरीके से पहले उनके आधार कार्ड बनवा दिए

दिल्ली में रहने के बाद कुछ राजनीतिक पार्टियों के सिंडिकेट ने अवैध तरीके से पहले उनके आधार कार्ड बनवा दिए उसके बाद उनके वोटर कार्ड व पैन कार्ड बन गए। दूसरा ऐसे बांग्लादेशी हैं जिनके पास बांग्लादेश के पासपोर्ट थे। वे भारतीय वीजा लेकर भारत आए। ऐसे नागरिक अधिकतम छह माह तक ही भारत में रह सकते हैं। लेकिन बड़ी संख्या में ऐसे बांग्लादेशी रह रहे हैं जिनके वीजा की अवधि खत्म हो चुकी हैं। उन्होंने एजेंटों के जरिये दिल्ली में आधार, पैन व वोटर कार्ड बनवा रखा है। वे वापस बांग्लादेश नहीं गए।

बांग्लादेशी नागरिकों का हॉट स्पॉट हैं कई इलाके

पुलिस अधिकारी का कहना है कि दिल्ली में सीमापुरी, बवाना, भलस्वा डेरी, जामिया नगर, शाहीनबाग, जैतपुर, ओखला, संगम विहार, गोविंदपुरी, नूर नगर, शास्त्री पार्क आदि इलाका बांग्लादेशी नागरिकों का हॉट स्पॉट माना जाता है। इन इलाकों में रहने वाले सभी की गहन जांच की जा रही है। इनके अलावा सभी थाना पुलिस से कहा गया है कि वे अपने-अपने इलाके में जाकर झुग्गी बस्तियों में रहने वाले हर एक नागरिक से पूछताछ करें।

हजारों बांग्लादेशी नागरिकों की सूची तैयार की गई

बांग्लादेश के जिन नागरिकों ने अवैध तरीके से दिल्ली में रहने के दौरान आधार, वोटर व पैन कार्ड बनवा लिए उनकी सूची तैयार करें। उनसे यह जानने की कोशिश करें वे दिल्ली में किस वर्ष आए थे, उनके भारतीय दस्तावेज कब और किस तरह बने। उनके पैतृक गांव के बारे में पता करें। उनकी तस्वीरें भी लेकर सूची में शामिल करें। सभी थाना पुलिस ने इस तरह की कवायद शुरू कर दी है। हजारों बांग्लादेशी नागरिकों की सूची तैयार की गई है, जिनके पास भारतीय दस्तावेज पाए गए हैं।

मेट्रो और सड़क परिवहन के क्षेत्र में "आप" सरकार में आए सुधार से खुश दिख रही दिल्ली की जनता

सुषमा रानी

आम आदमी पार्टी की सरकार ने बीते दस सालों में दिल्ली की जनता को बिजली, पानी, स्वास्थ्य और शिक्षा समेत अन्य कई सुविधाएं देने के साथ-साथ दिल्ली के सार्वजनिक परिवहन के क्षेत्र में भी रिकॉर्ड बनाया है। रेवड़ी पर चर्चा के दौरान आम आदमी पार्टी के कार्यकर्ता सार्वजनिक परिवहन के क्षेत्र में आए बदलाव पर भी खुल कर चर्चा कर रहे हैं। इस दौरान कार्यकर्ता मेट्रो और सड़क परिवहन के क्षेत्र में हुए विस्तार के बारे में भी बता रहे हैं कि बीते दस साल में हमारी सरकार ने मेटों लाइन को 200 किमी से बढ़ाकर 450 किमी किया, 10 हजार किमी सड़कें और 38 फ्लाईओवर बनवाया है। इस दौरान लोगों से फीडबैक लेकर शीर्ष नेताओं तक पहुंचाया जा रहा है। मेट्रो और सड़क परिवहन के क्षेत्र में ₹आप₹ सरकार में आए सुधार से दिल्ली की जनता खुश दिख रही है।

आम आदमी पार्टी सरकार ने दिल्ली की इन्फ्रास्ट्रक्चर को सुधारने में बड़ा काम किया है। इन्फ्रास्ट्रक्चर की उपलब्धियां यह दिखाती हैं कि सरकार राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली को आधुनिक और टिकाऊ शहर बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। आम आदमी पार्टी के कार्यकर्ता पूरी दिल्ली में रोजाना दो हजार बैठकें कर रेवड़ी पर चर्चा के रही है। इस चर्चा में दिल्ली की जनता को दी जा रही मुफ्त सुविधाओं के साथ-साथ इन्फ्रास्ट्रक्चर के क्षेत्र में हुए विकास के बारे में भी बताया जा रहा है।

रेवड़ी पर चर्चा के दौरान ₹आप₹ कार्यकर्ता बता रहे हैं कि पहले दिल्ली में मेट्रो लाइन केवल 200 किलोमीटर थी, लेकिन ₹आप₹ सरकार ने 9 साल में इसे बढ़ाकर 450 किलोमीटर कर दिया है। अब दिल्ली के कई इलाके मेट्रो से जुड़ गए हैं। इससे लाखों लोगों

को सफर करने सहूलियत मिली है। अभी कई इलाकों में मेट्रो का विस्तार हो रहा है और आने वाले दिनों में लाखों लोगों का सफर आसान होने जा रहा है।

पार्टी कार्यकर्ता रेवड़ी पर चर्चा के दौरान दिल्ली की सड़कों में आए सुधार के बारे में भी खुलकर बात कर रहे हैं। सभाओं में आए लोगों को बता रहे हैं कि ₹आप₹ सरकार ने सड़कों को सुधारने के लिए बड़े स्तर पर काम किया है। पिछले नौ सालों में विभिन्न इलाकों को सड़कों से जोड़ा है। अब तक करीब 10 हजार किलोमीटर नई सड़कों को बनाया है। इतना ही नहीं, दिल्ली को जाम से बचाने के लिए कई फ्लाईओवर का भी निर्माण किया है, ताकि लोग कम समय में अपने गंतव्य को पहुंच सकें। पार्टी के कार्यकर्ता लोगों को बता रहे हैं कि आम आदमी पार्टी की सरकार बनने से पहले और आजादी के बाद बीते 65 सालों में केवल 62 फ्लाईओवर बने थे, जबकि ₹आप₹ सरकार ने मात्र 9 साल में 38 नए फ्लाईओवर बनवाया है। यह दिखाता है कि आदमी पार्टी दिल्ली के सड़कों के सुधार को लेकर कितना गंभीर है।

रेवड़ी पर चर्चा के दौरान लोगों को यह भी बताया जा रहा है कि हमारी सरकार से पहले दिल्ली में बसों की भारी कमी थी। लोगों को लंबे समय तक बसों का इंतजार करना पड़ता था और बसों के अंदर भारी भीड़ हुआ करती थी। काफी बसें अपनी उम्र भी पूरी कर चुकी थी, जिन्हें बदलने की जरूरत थी। ₹आप₹ सरकार ने आम आदमी की जरूरों को ध्यान में रखते हुए बस बेड़े का विस्तार करना शुरू किया। पुरानी और उम्र पूरी कर चुके बसों की जगह नई बसों को लाया गया। साथ ही दिल्ली में प्रदूषण को कम करने के लिए इलेक्ट्रिक बसों को भी लाया गया। आज दिल्ली के अंदर 7700 बड़ों की संख्या है। जबकि पहले इनकी संख्या केवल 5 हजार थी।

पार्टी के कार्यकर्ता रेवड़ी पर चर्चा के दौरान लोगों से फीडबैक भी ले रहे हैं। लोग ₹आप₹ सरकार में सार्वजनिक परिवहन के क्षेत्र में आए बदलाव से बेहद खुश नजर आ रहे हैं। लोगों से मिले फीडबैक को पार्टी के कार्यकर्ता शीर्ष नेताओं तक पहुंचा रहे हैं ताकि फरवरी में फिर से सरकार बनने पर दिल्ली के अंदर सार्वजनिक परिवहन को और मजबूत किया जा सके।

सर्दियों में उच्च रक्तचाप को नियंत्रित करने के प्रभावी उपाय: विशेषज्ञों की सलाह

इशिका मुख्य रिपोर्टर न्यूज परिवहन विशेष

सर्दियों का मौसम आते ही कई स्वास्थ्य समस्याएँ बढ़ जाती हैं, जिनमें उच्च रक्तचाप (हाइपरटेंशन) प्रमुख है। ठंड के मौसम में रक्त वाहिकाएँ सिकुड़ जाती हैं, जिससे रक्त का प्रवाह धीमा हो जाता है और रक्तचाप बढ़ जाता है। इससे दिल पर अधिक दबाव पड़ता है, जो हृदय संबंधी समस्याओं का कारण बन सकता है। विशेषज्ञों का कहना है कि इस मौसम में उच्च रक्तचाप को नियंत्रित करने के लिए कुछ महत्वपूर्ण उपाय अपनाने चाहिए।

उच्च रक्तचाप के लक्षण और कारण

उच्च रक्तचाप के लक्षणों में सिरदर्द, चक्कर आना, सांस लेने में कठिनाई और थकान शामिल हैं। इसके कई कारण होते हैं, जैसे तनाव, अस्वस्थ आहार, शारीरिक गतिविधियों की कमी और धूम्रपान। सर्दियों में इन सभी कारकों का प्रभाव बढ़ जाता है।

सर्दियों में उच्च रक्तचाप को नियंत्रित करने के उपाय

1. स्वस्थ आहार अपनाएं:

- सर्दियों में जंक फूड्स से दूर रहें और हरी पत्तेदार सब्जियाँ, फल और साबुत अनाज का

सेवन करें।

- नमक का सेवन कम करें, क्योंकि यह रक्तचाप को बढ़ा सकता है।

2. नियमित व्यायाम करें:

- सर्दियों में व्यायाम करना महत्वपूर्ण है। योगासन और प्राणायाम करें, जिससे न केवल शरीर गर्म रहेगा बल्कि मानसिक तनाव भी कम होगा।

- सुबह की सैर या हल्की एक्सरसाइज करें, जिससे रक्त संचार बेहतर होगा।

3. तनाव प्रबंधन:

- ध्यान और मेडिटेशन से मानसिक तनाव को कम करें। तनाव सीधे तौर पर उच्च रक्तचाप को प्रभावित करता है।

- अपने शौक पर ध्यान दें और परिवार के साथ समय बिताएं।

4. पर्याप्त पानी पिएं:

- सर्दियों में लोग कम पानी पीते हैं, लेकिन शरीर को हाइड्रेटेड रखना जरूरी है। यह रक्त के गाढ़ेपन को कम करता है।

5. धूम्रपान और शराब से बचें:

- धूम्रपान और शराब का सेवन रक्तचाप को बढ़ा सकता है। इनसे दूर रहना बेहतर होगा।

6. नियमित स्वास्थ्य जांच:

- नियमित रूप से अपने रक्तचाप की जांच कराएं। अगर आपको उच्च रक्तचाप की समस्या है, तो डॉक्टर से सलाह लें और निर्धारित दवाइयाँ लें।

विशेषज्ञों की सलाह

विशेषज्ञों का कहना है कि सर्दियों में उच्च रक्तचाप को नियंत्रित करने के लिए जागरूकता जरूरी है। सही खान-पान और नियमित व्यायाम से इस समस्या पर काबू पाया जा सकता है। इसके अलावा, यदि किसी को पहले से ही उच्च रक्तचाप की समस्या है, तो उन्हें अपने डॉक्टर से संपर्क करके उचित उपचार लेना चाहिए।

सर्दियों में उच्च रक्तचाप एक गंभीर समस्या बन सकती है, लेकिन सही उपायों के साथ इसे नियंत्रित किया जा सकता है। स्वस्थ जीवनशैली अपनाने से न केवल आप अपने स्वास्थ्य को बेहतर बना सकते हैं बल्कि इस मौसम में होने वाली अन्य स्वास्थ्य समस्याओं से भी बच सकते हैं।

'अमित शाह जी मैं आपसे मिलना चाहता हूं', केजरीवाल ने गृहमंत्री को लिखी चिट्ठी; बोले- दिल्ली में...

परिवहन विशेष

दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने गृह मंत्री अमित शाह को पत्र लिखकर राष्ट्रीय राजधानी में बिगड़ती कानून व्यवस्था पर चिंता जताई है। केजरीवाल ने कहा कि दिल्ली अब अपराध की राजधानी बन गई है और महिलाओं के खिलाफ अपराध हत्या और जबरन वसूली के मामले बढ़ रहे हैं। उन्होंने अमित शाह से मिलने का समय मांगा है ताकि इस मुद्दे पर चर्चा की जा सके।

नई दिल्ली। दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री और आप प्रमुख अरविंद केजरीवाल ने आज गृहमंत्री अमित शाह को पत्र लिखकर राष्ट्रीय राजधानी में कानून व्यवस्था की स्थिति पर तत्काल चर्चा का आग्रह किया।

अपनी चिट्ठी में केजरीवाल ने बिगड़ती कानून व्यवस्था पर अमित शाह से मिलने का समय मांगा है। पत्र में दिल्ली के पूर्व सीएम ने दिल्ली की कानून व्यवस्था को लेकर कहा कि यह केंद्र सरकार के अधीन है। दिल्ली को अब अपराध की राजधानी के नाम से जाना जा रहा है।

हत्या के मामलों में दिल्ली नंबर वन- केजरीवाल

भारत के 19 मेट्रो शहरों में दिल्ली महिलाओं के खिलाफ होने वाले अपराध में नंबर वन पर है। इतना ही नहीं बल्कि हत्या के मामलों में दिल्ली नंबर वन है। दिल्ली में जबरन वसूली वाले गैंग सक्रिय हुए हैं।

एयरपोर्ट और स्कूल को धमकी मिल रहीं हैं। मैं और पूरी दिल्ली में लोग सुरक्षा को लेकर चिंतित हैं। दिल्ली अब देश विदेश में अपराध की राजधानी के रूप में पहचानी जा रही है।

केजरीवाल ने अपनी चिट्ठी में लिखा

मैं आपको यह पत्र इसलिए लिख रहा हूं क्योंकि देश के गृह मंत्री होने के नाते दिल्ली की कानून व्यवस्था की जिम्मेदारी आपकी है। लेकिन यह बताते हुए बहुत दुख होता है कि दिल्ली अब देश और विदेश में अपराध की राजधानी के रूप में पहचारी जा रही है।

दिल्ली में जहां महिलाओं के खिलाफ अपराध तेजी से बढ़ रहे हैं, वहीं जबरन वसूली करने वाले गिरोह और गैंगस्टर्स हर गली में सक्रिय हो चुके हैं। ड्रग्स माफिया पूरी दिल्ली में अपने पैर पसार चुके हैं। मोबाइल और चैन स्नैचिंग से पूरी दिल्ली परेशान है।

पिछले 6 महीनों में दिल्ली के 300 से ज्यादा स्कूलों को बम की धमकी

आज अपराधियों के हौसले इतने बुलंद हैं कि दिल्ली की सड़कों पर दिनदहाड़े गोलीबारी हत्या, अपहरण और चाकूबाजी जैसी घटनाओं को अंजाम दिया जा रहा है। पिछले 6 महीनों में दिल्ली के 300 से ज्यादा स्कूलों को 100 से ज्यादा अस्पतालों, एयरपोर्ट और मॉल पर लगातार बम धमाकों की धमकियों दी जा रही हैं।

ये रोज-रोज नकली धमकी देने वाले पकड़े क्यों नहीं जा रहे? क्या आप सोच सकते हैं एक बच्चे पर क्या गुजरती है, उसके मां-बाप पर क्या गुजरती है जब बम की वजह से स्कूल खाली करवा कर बच्चों को घर भेज दिया जाता है? आज दिल्ली के हर माता-पिता और बम के साये में जी रहे हैं।

यह कितना शर्मनाक है कि आपकी देखरेख में हमारी गौरवशाली राजधानी कानून व्यवस्था की असफलता के कारण अब रेप कैपिटल कैपिटल और गैंगस्टर कैपिटल के नामों से जानी जा रही है।

हवाला के जरिए आता था रुपया, 9 महिला और 67 पुरुष इस तरह करते थे ठगी

नोएडा के सेक्टर 63 में पकड़े गए फर्जी कॉल सेंटर में हवाला के जरिए तीन लाख रुपये आए थे। स्टाफ को प्रति कॉल सक्सेस पर डॉलर के हिसाब से मोटा इनसेंटिव मिलता था। पुलिस मामले की जांच कर रही है। कॉल सेंटर के संचालक पहले भी जेल जा चुके हैं। पकड़े गए कॉल सेंटर को हवाला के माध्यम से नकद धनराशि प्राप्त हो रही थी।

नोएडा। गौतमबुद्ध नगर के सेक्टर 63 थाना पुलिस, क्राइम रेस्पांस टीम (सीआरटी) व स्वॉट टीम ने सेक्टर 63 के ए ब्लॉक में पकड़े फर्जी कॉल सेंटर मामले में दो-तीन दिन पहले ही हवाला से नकद तीन लाख रुपये आए थे। स्टाफ को प्रति कॉल सक्सेस होने पर डॉलर के हिसाब से मोटा इनसेंटिव मिलता था। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

पुलिस के अनुसार, पकड़े गए कॉल सेंटर को हवाला के माध्यम से नकद धनराशि प्राप्त हो रही थी। हाल ही में भी तीन लाख रुपये की धनराशि आई थी। इसको स्टाफ को बांटा गया था। वहीं, कुछ स्टाफ ने एक दिसंबर के आसपास ज्वॉइनिंग की थी। इनमें मुंबई, पश्चिम बंगाल के आए युवक शामिल थे।

नया स्टाफ भी कर रहा था ट्रेनिंग

कॉल सेंटर पर ही नए स्टाफ को ट्रेनिंग दी जा रही थी। इनसे करीब एक माह इनिशियल ट्रेनिंग पूरी होने के बाद काम लिया जाना था। उधर, थाना पुलिस को आरोपी संचालक कुरुनाल रे और अन्य दो संचालक सौरभ व सादिक पर दर्ज मुकदमों का पोर्टल पर कोई रिकॉर्ड नहीं मिला है।

दूसरे राज्यों से पुलिस लेगी जानकारी

हालांकि पुलिस आरोपियों से मिले केस की जानकारी के आधार पर काम कर रही है। गुजरात, गुरुग्राम व अन्य राज्यों की पुलिस से संपर्क करने पर जोर है। डीसीपी सेंट्रल नोएडा शक्तिमोहन अवस्थी ने बताया कि कॉल सेंटर फर्जीवाड़े में पुलिस की ओर से जांच जारी है।

यह है मामला

सेक्टर 63 थाना पुलिस ने संयुक्त रूप से कार्रवाई करते हुए कॉल सेंटर से चार सरगना समेत नौ महिला और 67 पुरुषों को गिरफ्तार किया था। आरोपी विदेशी नागरिकों को फर्जी पार्सल भेजने, टेक सपोर्ट व लोन दिलाने के नाम पर ठगी कर रहे थे।

नागरिकों से गिफ्ट कार्ड, चेक आदि की डिटेल लेकर ब्लॉगर के माध्यम से धनराशि ठग रहे थे। कॉल सेंटर कर्मियों को हवाला के माध्यम से धनराशि मिल रही थी।

कॉल सेंटर के संचालक पहले जा चुके हैं जेल

वड़ोदरा (गुजरात) जिले के थाना करोली बाग के प्रकाश नगर के रहने वाले कुरुनाल रे, फतेहगंज थाना क्षेत्र स्थित निर्मला अपार्टमेंट में रहने वाले साजिद, थाना क्षेत्र गौरवा के अलीमान मधुनगर निवासी सादिक ठाकुर और अहमदाबाद के थाना वटवा क्षेत्र के सोनू पार्क निवासी सौरभ राजपूत कॉल सेंटर के सरगना हैं।

गुजरात, नॉर्थ ईस्ट, मुंबई, यूपी, पंजाब, पश्चिम बंगाल के रहने वाले अन्य आरोपी स्टाफ के रूप में काम कर रहे थे। कुरुनाल, सौरभ, साजिद फर्जी कॉल सेंटर (Noida Fake Call Center) संचालन मामले में पहले जेल जा चुके हैं।

तीन तरह से कर रहे थे ठगी

पूछताछ में बताया कि चारों पार्टनर यूएस के शातिरों से स्काईप एप के माध्यम से विदेशी नागरिकों का लोन संबंधित व्यक्तिगत डाटा खरीदते थे और यूएसडीटी में पमेंट करते थे। आरोपित डाटा काल सेंटर के स्टाफ को मुहैया कराते। लोगों से सर्विस के नाम पर एप्पल, ई-बे, वालमार्ट गिफ्टकार्ड के माध्यम से पेमेंट लेते।

लोन फर्जीवाड़ा

आरोपित लोन लेने वाले विदेशी लोगों को मैसेज भेजकर संपर्क करते। लोन कराने के नाम पर 100 डालर पंजीकरण व 500 डालर पेमेंट होने के नाम पर चार्ज करते। फोटो खींचकर लोन होने का फर्जी चेक भेज देते थे। खाते में पैसा आने से पहले ही सर्विस चार्ज वसूल कर लेते।

टेक सपोर्ट फर्जीवाड़ा

विदेशी लोगों के सिस्टम पर बग का मैसेज भेजते और माइक्रोसाफ्ट अधिकारी व स्टाफ बताकर टेक सपोर्ट देते। सर्विस के नाम पर पीड़ित को एक कमांड बताते और पमेंट प्राप्त कर लेते।

पार्सल फर्जीवाड़ा

विदेशी नागरिकों को वाइस नोट भेजते कि आपका पार्सल रेडी टू डिलीवर है। ग्राहकों के मना करने पर अकाउंट चोरी होने की बात कहते और नया एकाउंट बनाने के नाम पर पमेंट लेते।

महाकुंभ के लिए 'भगवा रंग' में रफ्तार भरेंगी रोडवेज बसें, गाजियाबाद में इन इलाकों से होंगी रवाना

साहिबाबाद। भगवा रंग में भारतीय संस्कृति, हिंदू धर्म व जीवन पद्धति का संदेश छिपा है। अब यह रंग श्रद्धालुओं को महाकुंभ में ले जाने वालीं परिवहन निगम की रोडवेज बसों पर भी दिखाई देगा। जो श्रद्धालुओं को इसका एहसास कराएगा। शासन के आदेश पर बसों को भगवा रंग से रंगने का कार्य शुरू कर दिया गया है।

इसके लिए निगम को शासन से करीब 20.48 लाख का बजट भी मिला है। प्रदेश के प्रयागराज में 13 जनवरी से 26 फरवरी तक महाकुंभ मेले का आयोजन होगा। श्रद्धालुओं को कुंभ मेला में शामिल होने के लिए किसी तरह की परेशानी न हो इसके लिए गाजियाबाद क्षेत्र के कौशांबी, लोनी, साहिबाबाद, हापुड़, सिकंदराबाद, खुर्जा और बुलंदशहर डिपो की 600 रोडवेज बसें भी आरक्षित की गईं हैं।

344 बसें पहले ही भगवा रंग में रंगी जा चुकीं

इनमें से 344 बसें पहले ही भगवा रंग की हैं। इनमें से 256 बसें ऐसी हैं, जो भगवा रंग की नहीं हैं। ये बसें लाल और सफेद रंग की हैं। शासन से आदेश जारी किए गए हैं कि जो बसें महाकुंभ में शामिल होंगी, वह भगवा रंग में रंगी होनी चाहिए। लाल और सफेद रंग की बसों को भी भगवा रंग में रंगा जाएगा।

इसके लिए शासन से प्रत्येक बस के लिए आठ हजार का बजट मिला है। बसों को रंगने का कार्य शुरू कर दिया गया है। दिसंबर के अंत तक रंगाई का कार्य पूरा कर लिया जाएगा। दरअसल, रीजन की बसों का मऊ, गोरखपुर, आंबेडकर नगर, हापुड़, गाजियाबाद और बाराबंकी समेत कुल 11 रूटों से बसों का संचालन किया जाएगा।

हर बस पर लिखा होगा "महाकुंभ चलें"

जिन बसों को भगवा रंग में रंगा जा रहा है उन सभी बसों पर #महाकुंभ चलें# भी लिखा होगा। इससे श्रद्धालु महाकुंभ मेला में जाने वाली बसों की आसानी से पहचान कर सकेंगे। इसके साथ ही श्रद्धालुओं की आस्था को ध्यान में रखते हुए बसों में भजन भी बजेंगे।

एक हजार से अधिक चालक-परिचालकों को दिया जाएगा प्रशिक्षण

- महाकुंभ जाने वाली बसों पर एक हजार से अधिक चालक-परिचालकों की ड्यूटी लगाई गई है उन्हें प्रशिक्षण दिया जाएगा।
- प्रशिक्षण में उन्हें श्रद्धालुओं से व्यवहार से लेकर किसी तरह की परेशानी आने पर उससे निपटने के बारे में बताया जाएगा।
- श्रद्धालुओं को परेशानी न हो।

दिल्ली-गुरुग्राम बॉर्डर पर दिखा अद्भुत नजारा, करीब 4 घंटे तक लगा रहा लंबा जाम; लोगों को झेलनी पड़ी परेशानी

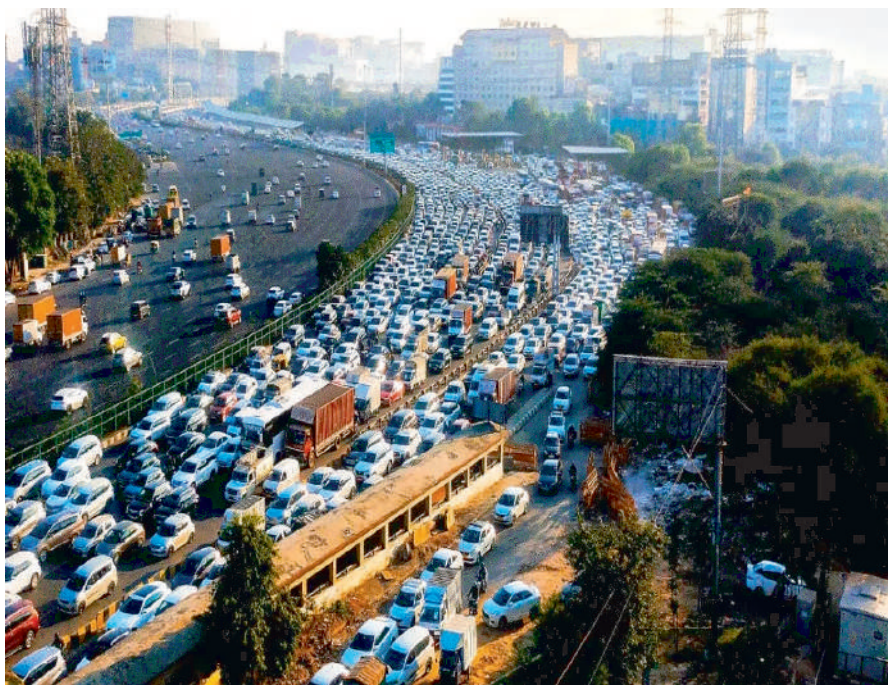

गुरूग्राम। दिल्ली-गुरुग्राम बॉर्डर पर शनिवार को दोपहर करीब एक बजे से शाम पांच बजे तक वाहनों के पहिए थम रहे। दिल्ली के महिपालपुर से सरहौल बॉर्डर से होते हुए गुरुग्राम के शंकर चौक फ्लाईओवर तक लंबा जाम लग गया। करीब चार घंटे बीत जाने के बाद भी अभी भी जाम से वाहन चालकों को जाम से राहत मिली।

जाम में फंसे वाहन चालकों ने बताया कि दिल्ली के महिपालपुर में चल रहे फ्लाईओवर के निर्माण कार्य के चलते आए दिन सुबह और शाम घंटे तक इसी तरह जाम में फंसना पड़ता है। दिल्ली से लेकर गुरुग्राम तक इस जाम को खुलवाने के लिए कोई जिम्मेदार अधिकारी या पुलिसकर्मी नजर नहीं आते हैं। समझ नहीं आता कि आखिर इसका जिम्मेदार अधिकारी कौन है? महिपालपुर से लेकर गुरुग्राम के शंकर चौक तक दिल्ली गुरुग्राम एक्सप्रेस वे पर करीब पांच से सात किलोमीटर तक लंबा जाम लगा हुआ है।

डेटिंग ऐप, होटल और अश्लील वीडियो... नोएडा में हनी ट्रैप गिरोह का भंडाफोड़, दो लड़कियां और तीन युवक गिरफ्तार

नोएडा पुलिस ने डेटिंग ऐप के जरिए हनी ट्रैप में फंसाकर लोगों से पैसे ऐंठने वाले गिरोह के पांच सदस्यों को गिरफ्तार किया है। गिरोह में दो महिलाएं भी शामिल हैं। आरोपी 25 से ज्यादा लोगों को अपने जाल में फंसाकर 30 लाख रुपये की ठगी कर चुके हैं। युवती कॉल कर मिलने बुलाती और अपने साथियों को बुलाकर ग्राहक युवक को दबोच लेते।

गाजियाबाद। नोएडा। फेस दो थाना पुलिस टीम ने लोगों को डेटिंग ऐप (Dating App) के माध्यम से हनी ट्रैप (Honey Trap) में फंसाकर रुपये ऐंठने वाले गिरोह के दो महिलाओं समेत पांच सदस्यों को शनिवार को बायोडायवर्सिटी पार्क से गिरफ्तार किया। आरोपियों से पांच मोबाइल, कार और 70 हजार रुपये की नगदी बरामद की। आरोपी 25 से ज्यादा लोगों को अपने जाल में फंसाकर 30 लाख रुपये की ठगी कर चुके हैं।

डीसीपी सेंट्रल नोएडा शक्ति मोहन अवस्थी ने बताया कि फेस दो थाना पुलिस को ककराला क्षेत्र के एक युवक की ओर से शिकायत मिली कि डेटिंग ऐप की मदद से युवती ने मिलने बुलाया। अपने साथियों के साथ मिलकर हनी ट्रैप में फंसाया और मारपीट कर 2.40 लाख रुपये ऐंठ लिए।

दबोचे गए पांच आरोपी

पीड़ित की शिकायत पर मुकमदा दर्ज कर पुलिस टीम ने जांच की तो पांच आरोपी दबोचे। आरोपियों की पहचान झारखंड गिरडीह बेरापाट व नोएडा मोरना के लालू यादव व अंजली बैंसला, बिहार सीतापुर व दिल्ली मालवीय नगर के अंकित, दिल्ली ग्रेटर कैलाश के ललित, चंडीगढ़ न्यू इंद्रा कॉलोनी व नोएडा सेक्टर 62 की सोनिया के रूप में हुई।

इस तरह कॉल करके फंसाया जाता

पूछताछ में बताया कि आरोपी गूगल पर रियल मीट गर्ल्स जैसे साइट सर्च करने वाले फोरम व वेबसाइट्स पर अपना फोन नंबर डाल देते। इससे लोगों के संपर्क में आकर लड़कियों के फोटो भेजकर कॉल करते। युवती कॉल कर मिलने बुलाती और अपने साथियों को बुलाकर ग्राहक युवक को दबोच लेते।

उसके साथ मारपीट कर अश्लील वीडियो बनाते। युवती झूठे दुष्कर्म के केस में फंसाकर पांच लाख रुपये तक की मांग करती। पीड़ितों को ब्लैकमेल कर रुपये ऐंठते। पीड़ितों के डरने पर आगे भी पैसे ऐंठना जारी रखते हैं।

गिरोह के मास्टरमाइंड रह रहे लिव-इन में

एसीपी राजीव कुमार गुप्ता ने बताया कि आरोपी लालू व अंजलि गिरोह के मास्टमाइंड हैं और दोनों लिवइन में रह रहे थे। आरोपी ठगी की धनराशि का हिस्सा आपस में बांट लेते। आरोपी अभी तक पुलिस के हत्थे नहीं चढ़े थे। आरोपी एक डेट के लिये ग्राहकों से पांच से दस हजार रुपये तक वसूलते थे।

क्रेडिट कार्ड की लिमिट बढ़ाकर फ्राड करने वाले छह धरे

वहीं, सेक्टर 39 थाना पुलिस टीम ने क्रेडिट कार्ड की लिमिट बढ़ाकर फ्राड करने वाले छह लोगों को शनिवार को गोदरेज बिल्डिंग के पहले पार्क के पास से गिरफ्तार किया। पीड़ितों के क्रेडिट कार्ड से खरीदारी करते हैं। खरीदारी के सामान को नोएडा बेचने के दौरान सभी ठग पकड़े गए। आरोपितों से लैपटाप, 28 मोबाइल, 12 चांदी के सिक्के, चार सोने के सिक्के, कार व स्कूटी बरामद की।

संसद से सड़क तक शाब्दिक बाण तानों (तंज़) का प्रचलन बढ़ा- हम अवसाद में आए तो लक्ष्य भेदी का मिशन सफ़ल

प्रशंसा, निंदा और तानों को सहज भाव में लेना मंजिल तक पहुंचने का मंत्र-यह तीनों ही क्षणिक प्रतिक्रिया मात्र

तानों तंज़ के जरिए ईर्ष्या, द्वेष या परपीड़ा में खुशी ढूंढने वालों की उपेक्षा करें तो वे खुद अवसाद ग्रस्त हो जाएंगे-एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

गोंदिया - विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र भारत में 25 नवंबर से 20 दिसंबर 2024 तक चलने वाले सेट सत्र में 26 जनवरी 2025 को संविधान के 75 वर्ष पूरे होने पर संसद में चर्चा 13-14 दिसंबर 2024 को संविधान पर चर्चा हुई जिसको मैंने चैनलों के माध्यम से देख के प्रथम प्रथम संविधान संशोधन से लेकर अनेक बातें पक्ष विपक्ष द्वारा कही गई जो एक दूसरे के ऊपर शाब्दिक बानो तानों तंज का प्रयोग कर गया जिसमें दोनों बचाओ मुद्रा में नजर आए इसलिए मेरा मानना है कि प्रशंसा, निंदा और तानों को सहज भाव में लेना मंजिल तक पहुंचने का मंत्र है। बता दें मानवीय स्वभाव की यह एक स्वाभाविक विशेषता रही है कि हम दूसरों की प्रतिक्रिया पर अत्यधिक निर्भर रहते हैं, यही हमारी आधुनिक डिजिटल युग में कमजोरी ज्ञात पड़ती है क्योंकि आज के प्रतियोगिता युग में अपने प्रतिद्वंदी को शाब्दिक पटखनी देने के लिए तानों तंज जैसे मजबूत कानूनी शेड प्राप्त हथियार और कोई नहीं है क्योंकि तानों और तंज से बिना का नाम लिए शाब्दिक बाण छोड़े जाते हैं और तीर ठीक निशाने पर लगा और लक्षित व्यक्ति या पार्टी अवसाद में आई तो लक्ष्य भेदी व्यक्ति का मिशन सफल हो गया समझो! और ताना या तंज ग्रहण करने वाले हम अवसाद में आ जाएंगे याने नुकसान हमें ही होगा। तानों, तंज की धमाचौकड़ी राजनीतिक व्यापारिक व्यवसायिक सामाजिक घरेलू और व्यक्तिगत स्तरपर भी खूब प्रचलित होते जा रही है क्योंकि इसमें नतो कोई टैक्स है और न ही कोई कानूनी झमेला !बस कर दिया !हालांकि आजकल हम मीडिया के माध्यम से राजनीतिक क्षेत्र में इसका उपयोग, प्रयोग होते हुए अधिक देख रहे हैं इसलिए आज हम इस आर्टिकल के माध्यम से तानों तंज पर चर्चा कर उसका मुकाबला करने पर विचार करेंगे।

साथियों बात अगर हम तानां मारने या तंज कसने कीपरिभाषा की करें तो, ताना मारना या तंज कस नें का मतलब होता है उल्टी बात या ऐसी बात बोलना जिससे सुनने वाले को बुरा लगे. जब कोई किसी का उपहास उड़ाता है तब वह तंज कसता है। जब कोई किसी को पसन्द नही करता है या उससे जलता है । तो इस तरह से उस व्यक्ति को अपने आप से निचा दिखाने के लिए या उसे दुखी करने या चिडाने के लिए कुछ ऐसी वैसी बात कह देते है जो स्पष्ट रूप से अर्थ प्रकट नही करती है फिर भी उसका अर्थ चिडाने या दुखी करने जैसे कार्यो के लिए निकलता है ।इस तरह की बात करने को व्यंग्य करना कहा जाता है,और इसी तरह से जब कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति के लिए किसी भी कारण से व्यंग्य करता है तो इसे ताना मारना कहा जाता है। व्यंग्य एक ऐसी विधा है जिसमें बातें कटाक्ष और हास्य का पुट लिये इशारों- इशारों में होती हैं।ग़ज़ल और शायरी इशारों की ही विधा है। किसी घटना पर रचनात्मक इशारा करना एक विधा है, लेकिन शायरी में व्यंग्य बड़े तरीके से किया गया है।

साथियों बात अगर हम तंज कसने के नमूनों की करें तो, महान रचनाकर्ताओं नें खूब लिखा है, लीडरों की धूम है और फॉलोवर कोई नहीं, सब तो जेनरेल हैं यहाँ आख़िर सिपाही कौन है, कोई हिन्दू कोई मुस्लिम कोई ईसाई है सब ने इंसान न बनने की क़सम खाई है , कोट और पतलून जब पहना तो मिस्टर बन गया, जब कोई तक़रीर की जलसे में लीडर बन गया , कब उन आँखों का सामना न हुआ, तीर जिन का कभी ख़ता न हुआ, 56 इंच चौड़ा सीना, 15 लाख बैंक खाते में जमा करना इत्यादि।

साथियों बात अगर हम मानवीय स्वभाव की करें तो, यह एक बहुत ही स्वभाविक विशेषता है मानवीय स्वभाव की, की हम दूसरों की प्रतिक्रिया पर निर्भर रहते है, अगर कोई हमारी प्रशंसा करता है तो, हम जिस बात के लिए हमारी प्रशंसा की है, उसको दोहराते है, जैसे कि किसी ने हमें सुंदर कहा तो, हम एक बार ज़रूर प्रशंसा करने वाले की नज़रों से आइने मैं देखते है, क्योंकि हम किसी की भी प्रशंसा को सच मानते है , और उसे देख कर या वैसा व्यवहार कर सत्यापित करते है। ठीक यही व्यवहार हम किसी के नकारात्मक व्यवहार के संदर्भ मैं भी करते है। कोई हमारी निंदा करे या ताने मारे या कटाक्ष करे तो हम तुरंत ही प्रतिक्रिया देते है, या तो ग़ुस्से मैं जवाब दे कर या विवाद कर के, लेकिन कई लोग अपने प्रति नकारात्मक प्रतिक्रिया का जवाब नहीं दे पाते है वे लोग अपना आत्म विश्वास खो कर अवसादग्रस्त हो जाते है।

साथियों इन सब से निपटने के लिए सबसे ज़रूरी है, हम कठपुतली न बने , प्रशंसा व निंदा दोनो को ही सहज भाव में ले , ये दोनो ही क्षणीक प्रतिक्रिया मात्र होती है। अगर हम दूसरों के व्यवहार से आहत होते है और यह बात जो हमको परेशान करना चाहते है,ताने मारते है तो हम उनके लिए ख़ुश होने के अवसर मुहेया करवा रहे है। हम उनकी मर्ज़ी और राय से जी रहे है। अगर कोई बार बार इस तरह का व्यवहार कर रहा है तो यह ज़रूर जानने की कोशिश करना चाहिए, कि आख़िर वो हमसे इस तरह का व्यवहार क्यों कर रहा है, ईर्ष्या,द्वेष या परपीड़ा में ख़ुशी ढूँढने का स्वभाव तो नहीं है , तो हम उन्हें ख़ुश होने का मोक़ा न दें , ख़ुद ही विश्लेषण करें, और जहाँ तक हो सके ऐसे लोगों की उपेक्षा करे,और उनकी किसी भी बात को महत्व न दे, हमारे इस तरह के व्यवहार से शायद कुछ दिनो बाद ताने मारने वाले लोग ख़ुद अवसादग्रस्त हो जाएंगे।

साथियों बात अगर हम उनके तानों के घेरे में आकर उन्हें बल देने की करें तो, जब हमने लोगों से तारीफें सुनकर अपने आप को गौरवान्वित और सुखी महसूस किया था, तभी हमने अपने जीवन की बागडोर उन्हें सौंप दी थी। हम उनके गुलाम हो गए। वे जब चाहें हमारी भर्त्सना करके हमें दुखी कर सकते हैं। हम अपने मालिक न रहे। वे पर्वत शिखर पर उठा सकते हैं तो फिर गहरी खाई में भी पटक सकते हैं। अहंकार दूसरों के ओपीनियन पर निर्भर करता है। इसलिये अभिमानी व्यक्ति सदैव चिंतित रहता है कि दूसरे मेरे बारे में क्या कहते हैं? क्या सोचते हैं? आपस में लोग मेरे विषय में पीठ पीछे क्या चर्चा करते हैं? मान-सम्मान देने वाले कहीं अपमान न करने लगें!

साथियों किसी ने यदि मुझे सुंदर कह दिया तो मैंने स्वयं को सुंदर मान लिया। किसी ने यदि मुझे बुद्धिमान कह दिया तो मैंने स्वयं को बुद्धिमान मान लिया। यह सब मान्यता का खेल है। इसमें कुछ यथार्थ नहीं है।अतःडर लगा ही रहता है कि कोई अपना वक्तव्य न बदल दे। कहीं दोस्त दुश्मन न बन जाये, प्रसंशक निंदक न बन जाये। वरना अवसाद की गर्त में मूर्ति जा गिरेगी। हमने कभी खुद को प्रेम नहीं किया। स्वयं से लगाव और आत्म-सम्मान कहां से होगा? अभी तो हम आत्मा को जानते ही नहीं। अपनी चेतना को पहचानते ही नहीं। हम खुद को सिर्फ तन-मन के रूप समझते हैं, चेतन-तत्व स्वरूप नहीं समझते। चेतना आत्मा है,जो इस आधारभूत सत्य को जान लेता है, वह दूसरों के मंतव्यों के पार चला जाता है। उसे दूसरों से पूछने की जरूरत नहीं कि मैं कैसा हूं? कि मैं क्या हूं? परोक्ष ज्ञान की आवश्यकता न रहीं। अब वह प्रत्यक्ष स्वयं को पहचानता है।अहम्ब्रह्मास्मि!

साथियों ऐसा व्यक्ति अपने परमात्म-स्वरूप होने के आनंद में जीता है। उसकी आंतरिक शाश्वत शांति में बाहरी दुनिया की कोई निंदा-आलोचना प्रभाव नहीं डालती। वह संसार में अलिप्त ऐसे जीता है जैसे जल में कमलः मान-अपमान के पार। न वह अभिमान से उत्तेजित होता, न कभी अवसाद ग्रस्त होता। उसे जीने की ठोस बुनियाद मिल गई,आत्म सत्ता, जो सच्चिदानंद स्वरूप है। जो किसी का मंतव्य नहीं, ध्यान में अनुभव किया गया सत्य है। आत्म-बोध प्राप्ति के बिना अवसाद से बचना असंभव है। कोई इस गड्ढे में कल गिरा था, कोई आज गिर रहा है तो कोई कल गिरेगा। बड़े बड़े सिकंदर और हिटलर भी न बच सके।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि संसद से सड़क तक शाब्दिक बाण तानों (तंज़) का प्रचलन बढ़ा- हम अवसाद में आए तो लक्ष्य भेदी का मिशन सफल। प्रशंसा निंदा और तानों को सहज भाव में लेना मंजिल तक पहुंचने का मंत्र है, क्योंकि यह तीनों ही क्षणिक प्रतिक्रिया मात्र हैं। तानों के जरिए ईर्ष्या द्वेष या परपीड़ा में खुशी ढूंढने वालों की उपेक्षा करें तो वे खुद ही अवसादग्रस्त हो जाएंगे।

– :सौजन्य :–
ईवी ड्राइव द फ्यूचर
EV
Drive the Future

कॉन्टिनेंटल की स्मार्ट कार ने भविष्य की इंटरेक्शन तकनीक के साथ CES 2025 में मचाएगी धूम

परिवहन विशेष न्यूज

कॉन्टिनेंटल लास वेगास में CES 2025 में अपनी अत्याधुनिक डेमो कार का प्रदर्शन करने जा रहा है, जिसमें ऐसी नवीन तकनीकें पेश की गई हैं जो लोगों और वाहनों के बीच बातचीत में क्रांतिकारी बदलाव ला सकती हैं। "इंटेलिजेंट व्हीकल एक्सपीरियंस कार" उपयोगकर्ता अनुभव और सुरक्षा को बढ़ाने के लिए बायोमेट्रिक सिस्टम, आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस और उन्नत सेंसर का उपयोग करती है।मुख्य विशेषताओं में चेहरे और गति पहचान शामिल है जो उपयोगकर्ताओं की पहचान करने और उनके कार्यों का अनुमान लगाने के लिए है, जैसे कि दरवाज़े खोलना, कार शुरू करना या ट्रंक खोलना। यह प्रणाली वाहन को लॉक करके और चेतावनी देकर अनधिकृत पहुँच को भी रोकती है। इन तकनीकों का उद्देश्य वाहनों को अधिक स्मार्ट, सुरक्षित और अधिक सहज बनाना है।डेमो में वाहनों के सॉफ्टवेयर-परिभाषित सिस्टम में विकास पर प्रकाश डाला गया है, जो मानव-मशीन इंटरफेस यानी ह्यूमन मशीन इंटरफेस का लाभ उठाते हुए उपयोगकर्ताओं को कार के पास पहुंचने के क्षण से ही सहज संपर्क प्रदान करता है। आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस एल्गोरिदम और एकीकृत सेंसर उपयोगकर्ता पहचान, इरादे की पहचान और सहज पहुंच जैसे कार्यों को शक्ति प्रदान करते हैं।कॉन्टिनेंटल के नवाचार सुविधा और सुरक्षा को प्राथमिकता देते हैं, जबकि डेटा गोपनीयता और ऊर्जा दक्षता चुनौतियों का समाधान करते हैं। अपडेट को सुरक्षित क्लाउड के माध्यम से वायरलेस तरीके से डिलीवर किया जा सकता है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि कार अपने पूरे जीवनचक्र में अप-टू-डेट रहे।सीईएस प्रदर्शनी 7 से 10 जनवरी, 2025 तक लास वेगास कन्वेंशन सेंटर के पास सेंट्रल प्लाजा में चलेगी। 1871 से मोबिलिटी समाधानों में अग्रणी कॉन्टिनेंटल, टिकाऊ, कनेक्टेड परिवहन के भविष्य को आकार देना जारी रखता है।

ग्रीन भारत शिखर सम्मेलन मे नितिन गडकरी जी कहा, दिल्ली से प्रमुख शहरों

परिवहन विशेष न्यूज

लिको मैटेरियल्स ने बेंगलुरु में अत्याधुनिक लिथियम-आयन बैटरी रीसाइक्लिंग सुविधा का उद्घाटन किया है, जो भारत के ईवी इकोसिस्टम में एक बड़ा कदम है। इस प्लांट की वार्षिक इन-फीड क्षमता 4 GWh है, जिसे अगले तीन से चार वर्षों में 10 GWh तक बढ़ाने की योजना है। यह विस्तार 2030 तक 30% ईवी अपनाने के भारत के लक्ष्य के अनुरूप है।कंपनी अगले दो से तीन वर्षों में हाइड्रोमेटेलर्जी प्लांट में ₹250 करोड़ का निवेश करने वाली है। यह डाउनस्ट्रीम सुविधा रीसाइक्लिंग के दौरान उत्पादित काले द्रव्यमान से उच्च शुद्धता वाले धातु लवणों को पुनर्प्राप्त करने पर ध्यान केंद्रित करेगी। इन पुनर्प्राप्त सामग्रियों को गीगाफैक्ट्री और ऊर्जा भंडारण प्रणालियों को आपूर्ति की जाएगी, जिससे बैटरी आपूर्ति श्रृंखला में लूप बंद हो जाएगा।लिको का लक्ष्य 2027 तक हर साल 2,00,000 मीट्रिक टन इलेक्ट्रिक वाहन बैटरियों को रीसाइकिल और पुनःउपयोग करना है, ताकि आवश्यक बैटरी सामग्रियों के लिए महत्वपूर्ण आपूर्ति श्रृंखला अंतराल को संबोधित किया जा सके। कंपनी की शून्य-तरल-निर्वहन रीसाइक्लिंग प्रक्रिया बैटरी अपशिष्ट प्रबंधन के लिए पर्यावरण की दृष्टि से टिकाऊ समाधान भी सुनिश्चित करती है।सीईओ गौरव डोलवानी के अनुसार, यह नई सुविधा महत्वपूर्ण बैटरी घटकों के लिए आयात पर निर्भरता को कम करने और भारत के स्वच्छ ऊर्जा में परिवर्तन का समर्थन करने की दिशा में एक कदम है। उन्होंने कहा कि यह पहल टिकाऊ ऊर्जा भंडारण समाधानों की बढ़ती मांग के अनुरूप है, क्योंकि ऊर्जा भंडारण क्षेत्र के 2032 तक 42 गीगावाट तक पहुंचने का अनुमान है।नया बेंगलुरू संयंत्र न केवल भारत की ईवी क्रांति को समर्थन देगा, बल्कि बैटरी के लिए एक चक्रीय अर्थव्यवस्था बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा, जो एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है क्योंकि आने वाले वर्षों में ईवी उद्योग अनुमानित 250% तक बढ़ेगा।

महाराष्ट्र और तमिलनाडु भारत के ईवी हॉटस्पॉट

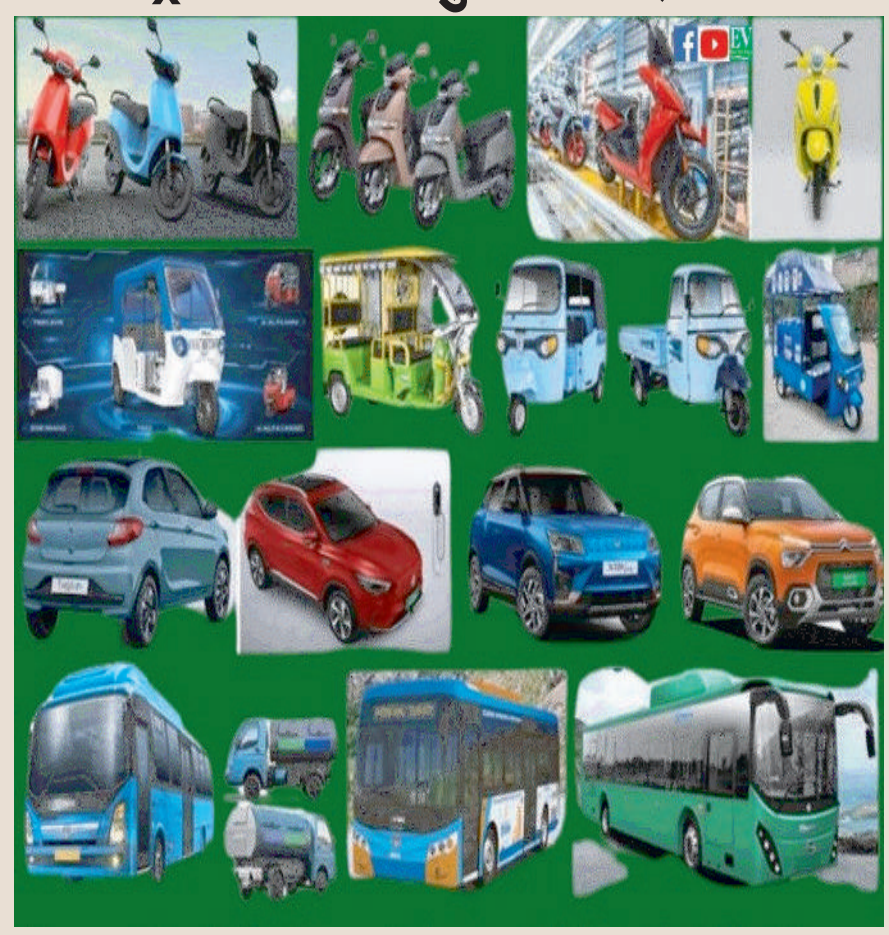

परिवहन विशेष न्यूज

महाराष्ट्र और तमिलनाडु ऑटोमोबाइल क्षेत्र के लिए केंद्र सरकार की उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन यानी पीएलआई योजना के प्रमुख लाभार्थियों के रूप में उभरे हैं, विशेष रूप से इलेक्ट्रिक वाहनों पर ध्यान केंद्रित करते हुए। भारी उद्योग मंत्रालय के हालिया आंकड़ों से पता चलता है कि सरकार की पहल के तहत ईवी विनिर्माण के केंद्र के रूप में इन राज्यों की बढ़ती प्रमुखता है।

केंद्रीय भारी उद्योग और इस्पात मंत्री एचडी कुमारस्वामी ने संसद में डाटा प्रस्तुत किया, जिसमें बैटरी इलेक्ट्रिक वाहनों और हाइड्रोजन ईंधन सेल वाहनों सहित शून्य-उत्सर्जन वाहनों पर पीएलआई योजना के फोकस को रेखांकित किया गया। यह योजना पाँच साल की अवधि यानी वित्त वर्ष 2022-23 से वित्त वर्ष 2026-27 को कवर करती है, जिसमें वित्त वर्ष 2023-24 से संवितरण शुरू होता है।

पीएलआई-ऑटो योजना ने 17 राज्यों में 257 विनिर्माण इकाइयों को मंजूरी दी है, जिसमें महाराष्ट्र 77 सुविधाओं के साथ सबसे आगे है, इसके बाद तमिलनाडु 46 के साथ दूसरे स्थान पर है। हरियाणा, कर्नाटक, उत्तर प्रदेश, गुजरात और उत्तराखंड की भी महत्वपूर्ण हिस्सेदारी है, जो पूरे भारत में ईवी विनिर्माण गतिविधि के व्यापक वितरण को प्रदर्शित करता है।

पीएलआई योजना के अलावा, सरकार ने भारत में इलेक्ट्रिक पैसेंजर कारों के विनिर्माण को बढ़ावा देने की योजना यानी एसपीएमईपीसीआई शुरू की है, जिसे इलेक्ट्रिक पैसेंजर वाहनों के घरेलू उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए डिज़ाइन किया गया है। इस योजना के तहत, स्वीकृत आवेदक 15% की कम सीमा शुल्क पर पूरी तरह से निर्मित इकाइयों (सीबीयू) का आयात कर सकते हैं, बशर्ते वे स्थानीय विनिर्माण सुविधाएँ स्थापित करें।

सितंबर 2021 में ₹25,938 करोड़ के बजट आवंटन के साथ शुरू की गई पीएलआई-ऑटो योजना ने नवंबर 2024 तक आवेदकों को अभी तक धनराशि वितरित नहीं की है। इस बीच, उन्नत रसायन सेल बैटरी निर्माण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से पीएलआई-एसीसी योजना अपने प्रारंभिक चरण में है, जिसके दिसंबर 2024 तक वितरण शुरू होने की उम्मीद है।

संसदीय डाटा ईवी विशेष रूप से दोपहिया वाहनों के उत्पादन में तेजी पर भी प्रकाश डालता है, जिसने विकास में तिपहिया वाहनों को पीछे छोड़ दिया। वित्त वर्ष 2023-24 में, वार्षिक ईवी उत्पादन पिछले वित्त वर्ष में 728.21 इकाइयों की तुलना में 948.42 इकाइयों की वृद्धि हुई।

ईवी विनिर्माण में महाराष्ट्र और तमिलनाडु का प्रभुत्व निवेश आकर्षित करने और नवाचार के लिए मजबूत पारिस्थितिकी तंत्र स्थापित करने की उनकी क्षमता को दर्शाता है। चूंकि सरकार स्थानीय उत्पादन को प्रोत्साहित करना जारी रखती है, इसलिए ये राज्य भारत के ईवी परिवर्तन में सबसे आगे रहने की स्थिति में हैं।

दिल्ली कॉमिक कॉन में यामाहा का धमाका: स्टाइल, स्पीड और रोमांच का शानदार मेल !

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। वडोदरा स्थित इलेक्ट्रिक वाहन निर्माता वार्डविज़ार्ड इनोवेशन एंड मोबिलिटी ने शुक्रवार, 13 दिसंबर को कहा कि उसे उम्मीद है कि आगे चलकर बिक्री का लगभग 30-35 प्रतिशत हिस्सा ई-थ्री-व्हीलर्स से आएगा। कंपनी ने यह भी कहा कि उसका लक्ष्य चालू वित्त वर्ष को 42,000 इकाइयों की बिक्री के साथ समाप्त करना है।

इससे पहले दिन में वार्डविज़ार्ड इनोवेशन एंड मोबिलिटी ने जॉय-ई-रिक और जॉय-ई-बाइक व्यवसाय के तहत अपने उत्पाद पोर्टफोलियो का विस्तार किया, जिसमें यात्री खंड में दो और वाणिज्यिक खंड के लिए दो नए लॉन्च किए गए। इसने एक हाई-स्पीड इलेक्ट्रिक टू-व्हीलर का भी अनावरण किया है।

बिक्री और रणनीति के निदेशक अख्तर खत्री ने मीडिया से बातचीत के दौरान कहा, "हमें उम्मीद है कि थ्री-व्हीलर की बिक्री हमारे कुल वाहन बिक्री में 30-35 प्रतिशत का योगदान देगी।"

कंपनी इस वित्त वर्ष में 2,000 तिपहिया वाहनों के अलावा लगभग 35,000-40,000 दोपहिया वाहन बेचने की योजना बना रही है, जबकि अगले वित्त वर्ष (वित्त वर्ष 26) के लिए लक्ष्य 50,000 ई-दोपहिया वाहन और 10,000 इलेक्ट्रिक तिपहिया वाहन बेचना है।

वार्डविज़ार्ड ने यह भी कहा कि वर्तमान उत्पादन क्षमता ई-दोपहिया वाहनों के लिए प्रति वर्ष 1.20 लाख इकाई और ई-तिपहिया वाहनों के लिए 60,000 इकाई है।

कंपनी ने कहा कि हाई-स्पीड इलेक्ट्रिक स्कूटर निमो की कीमत 99,000 रुपये (एक्स-शोरूम) है, जिसे शहरी सड़कों के लिए डिज़ाइन किया गया है, इसमें तीन ड्राइव मोड हैं - इको, स्पोर्ट और हाइपर, और यह विस्तारित जीवन और प्रदर्शन के लिए स्मार्ट बीएमएस के साथ 72V, 40Ah लिथियम-आयन (NMC) बैटरी से लैस है।

कंपनी ने दावा किया कि निमो की रनिंग कॉस्ट 17 पैसे प्रति किमी जितनी कम है।

कंपनी ने शुक्रवार, 13 दिसंबर से ई-स्कूटर की बुकिंग की भी घोषणा की और अगले महीने तक 98,000 रुपये की शुरुआती कीमत की पेशकश की है।

पैसेंजर सेगमेंट ई-थ्री-व्हीलर जॉय-ई-रिक, जिसकी शुरुआती कीमत 3.85 लाख रुपये (एक्स-शोरूम) है, कंपनी के अनुसार 10.24 किलोवाट की लिथियम-आयन बैटरी से लैस है, इसकी अधिकतम गति 50 किमी है और एक बार फुल चार्ज होने पर इसकी रेंज 150 किमी है।

पैसेंजर ई-रिक्शा जॉय बंधु 48V BLDC मोटर द्वारा संचालित है और 1.59 kW की अधिकतम शक्ति प्रदान करता है, जबकि 7.2 किलोवाट का लीड-एसिड बैटरी पैक एक चार्ज में 100-120 किमी की रेंज प्रदान करता है। वार्डविज़ार्ड इनोवेशन एंड मोबिलिटी ने कहा कि इसकी कीमत 1.34 लाख रुपये (एक्स-शोरूम) से शुरू होती है।

कार्गो सेगमेंट के लिए ई-थ्री-व्हीलर की कीमत 4.24 लाख रुपये (एक्स-शोरूम) और ई-रिक्शा (कार्गो सेगमेंट के लिए) की कीमत 1.30 लाख रुपये (एक्स-शोरूम) रखी गई है।

कंपनी के प्रबंध निदेशक यतिन गुप्ते ने कहा, "दोनों व्यावसायिक क्षेत्रों के तहत हमारे नए मॉडल भारत के हरित और पर्यावरण के अनुकूल गतिशीलता में बदलाव को आगे बढ़ाने की हमारी प्रतिबद्धता में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर हैं।"

अल्ट्रावॉयलेट ने मुंबई एक्सपीरियंस सेंटर के शुभारंभ के साथ किया अपना विस्तार

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। अल्ट्रावॉयलेट ने मुंबई में अपने प्रमुख अनुभव केंद्र, यूवी स्पेस स्टेशन का उद्घाटन करके भारत में अपनी उपस्थिति का विस्तार किया है। यह लॉन्च 12 दिसंबर को कोयंबटूर सुविधा के अनावरण के बाद दो दिनों में इस तरह के केंद्रों का दूसरा उद्घाटन है। इन केंद्रों का उद्देश्य ग्राहकों को एक इमर्सिव ब्रांड अनुभव प्रदान करना और स्वामित्व यात्रा के दौरान उनकी ज़रूरतों को पूरा करना है।

मुंबई यूवी स्पेस स्टेशन एक व्यापक 3एस सुविधा है, जो बिक्री, सेवा और स्पेयर पार्ट्स सहायता प्रदान करती है। ग्राहक ब्रांड की प्रमुख इलेक्ट्रिक मोटरसाइकिल, F77 MACH 2 का पता लगा सकते हैं और व्यक्तिगत परीक्षण सवारी के अवसरों और समर्पित सेवा सहायता का लाभ उठा सकते हैं।

F77 MACH 2, जो अपने उन्नत डिज़ाइन और इंजीनियरिंग के लिए जाना जाता है, में 40.2 hp और 100 Nm का टॉर्क देने वाला पावरट्रेन है, जो 2.8 सेकंड में 0 से 60 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ़्तार पकड़ सकता है। यह 10.3 kWh की बैटरी से लैस है, जो एक बार चार्ज करने पर 323 किलोमीटर की IDC रेंज प्रदान करती है। अतिरिक्त सुविधाओं में LED लाइटिंग, ब्लूटूथ कनेक्टिविटी के साथ एक TFT इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, कई राइड मोड और एक ट्रैक्शन कंट्रोल सिस्टम शामिल हैं।

अल्ट्रावॉयलेट के सह-संस्थापक और सीईओ नारायण सुब्रमण्यम ने कहा कि मुंबई में लॉन्च कंपनी के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है। उन्होंने कहा, "मुंबई हमारे लिए एक महत्वपूर्ण बाजार है और यह केंद्र भारत में उच्च प्रदर्शन वाले इलेक्ट्रिक वाहनों को और अधिक सुलभ बनाएगा।"

सह-संस्थापक और सीटीओ नीरज राजमोहन ने अल्ट्रावॉयलेट के व्यापक दृष्टिकोण पर प्रकाश डाला, जिसमें नवाचार, स्थिरता और प्रदर्शन को एकीकृत करने वाला एक पारिस्थितिकी तंत्र बनाना शामिल है। उन्होंने कंपनी के पदचिह्न को मजबूत करने और ग्राहक अनुभव को बढ़ाने में नए अनुभव केंद्रों की भूमिका पर जोर दिया।

ग्रीन भारत शिखर सम्मेलन मे नितिन गडकरी जी कहा, दिल्ली से प्रमुख शहरों तक सात नए एक्सप्रेस हाईवे कुछ वर्षों में बनकर हो जाएंगे तैयार

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी जी ने शुक्रवार, 13 दिसम्बर को नई दिल्ली के ताज पैलेस में कहा कि दिल्ली से आसपास के प्रमुख शहरों तक सात नए एक्सप्रेस हाईवे पर काम चल रहा है और अगले कुछ वर्षों में ये बनकर तैयार हो जाएंगे।

ग्रीन भारत शिखर सम्मेलन में बोलते हुए गडकरी जी ने कहा कि सार्वजनिक परिवहन की गुणवत्ता में सुधार से वायु प्रदूषण को कम करने में मदद मिलेगी, साथ ही देश की अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने में भी मदद मिलेगी।

शुक्रवार, 13 दिसंबर को नई दिल्ली में ग्रीन भारत शिखर सम्मेलन में सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने घोषणा की कि दिल्ली-देहरादून राजमार्ग परियोजना में दो पैकेज हैं और अक्षरधाम से एक एलिवेटेड रोड का उद्घाटन अगले 15-20 दिनों में किया जाएगा। दिल्ली और देहरादून के बीच की दूरी 2-2.5 घंटे में तय की जाएगी।

उन्होंने कहा कि दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे फरवरी 2024 तक बनकर तैयार हो जाएगा। दोनों मेट्रो शहरों के बीच यात्रा का समय घटकर 12 घंटे रह जाएगा। दिल्ली से जयपुर की दूरी दो घंटे में पूरी की जाएगी। अमृतसर से दिल्ली की दूरी चार घंटे रह जाएगी, दिल्ली से मनाली की दूरी 10 घंटे से ज़्यादा नहीं लगेगी, दिल्ली से श्रीनगर सिर्फ़ 8 घंटे में और दिल्ली से कटरा की दूरी 6 घंटे में तय होगी।

गडकरी जी ने बताया कि 669 किलोमीटर में से 137 किलोमीटर हरियाणा में, 399 किलोमीटर पंजाब में और 135 किलोमीटर जम्मू-कश्मीर में बनाए जाएंगे।

उन्होंने कहा, "मेरे मंत्रालय ने अब तक 78 लाख पेड़ फिर से लगाए हैं।" "सड़क मुद्रीकरण भारत में एक बड़ी सफलता रही है। आगे चलकर सड़क मुद्रीकरण हमें राष्ट्रीय राजमार्गों पर गुणवत्ता और सुविधाओं को बेहतर बनाने में मदद करेगा।"

गडकरी जी ने कहा कि राष्ट्रीय राजधानी के आसपास राजमार्ग बनाने के लिए 80 लाख टन अपशिष्ट पदार्थ का इस्तेमाल किया गया है। मंत्री के अनुसार, ₹समस्याओं को अवसरों में बदलना भारत के नेतृत्व का ध्यान केंद्रित होना चाहिए₹।

उन्होंने कहा कि भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण राष्ट्रीय राजमार्गों के किनारे 770 सड़क किनारे सुविधाएं स्थापित कर रहा है, जिनमें इलेक्ट्रिक वाहन चार्जिंग स्टेशन भी शामिल होंगे।

डिब्बाबंद भोजन से सेहत को खतरा

विजय गर्ग

हाल में 'एक्सेस टू न्यूट्रीशन इनिशिएटिव' (एटीएनआई) की नई रपट में यह तथ्य सामने आया है कि कुछ प्रमुख वैश्विक कंपनियां भारत जैसे निम्न आय वाले देशों में, उच्च आय वाले देशों की तुलना में कम पौष्टिक खाद्य उत्पाद बेच रही हैं। इस अध्ययन में स्वास्थ्य स्टार रेटिंग प्रणाली का उपयोग किया गया है, जिसमें उत्पादों को एक मानक के अनुसार एक से पांच के बीच बताया जाता है। इसमें 3.5 या उससे अधिक रेटिंग वाले उत्पादों को स्वस्थ माना जाता है। इस रपट के मुताबिक निम्न आय वाले देशों में इन उत्पादों की औसत रेटिंग 1.8 पाई गई, जबकि उच्च आय वाले देशों में यह 2.3 थी। इससे साबित होता है कि गरीब देशों कम गुणवत्ता वाले खाद्य पदार्थ बेचे जा रहे हैं, जो वहां के उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकते हैं। दरअसल, इन देशों में पैकेट में बिकने वाले खाद्य उत्पादों में चीनी, नमक और 'सैचुरेटेड फैट' की मात्रा अधिक पाई गई है।

इस रपट : के मुताबिक भारत में 'पेप्सिको' के केवल 28 फीसद, 'यूनिलीवर' के 16 फीसद और 'मोंडेलेज' के मात्र दस फीसद उत्पाद स्वास्थ्य के न्यूनतम मानकों पर खरे उतरते हैं। इन कंपनियों के उत्पादों में पोषण की कमी है और इन्हें लंबे समय तक खाने से मोटापा, मधुमेह, हृदय रोग और अन्य गंभीर बीमारियां हो सकती हैं। भारत में, जहां पहले से ही स्वास्थ्य सेवाएं कमजोर हैं और आम जनता के पास स्वास्थ्य देखभाल के सीमित साधन हैं, वहां इस प्रकार के उत्पादों का प्रसार स्थिति को और गंभीर बना देता है।

हाल के वर्षों में डिब्बाबंद या पैकेट वाले खाद्य पदार्थों का चलन तेजी से बढ़ा है। शहरीकरण, बदलती जीवनशैली और सुविधाजनक विकल्पों की तलाश ने इन उत्पादों को घर-घर पहुंचा दिया है। हालांकि यह प्रवृत्ति जितनी तेजी से बढ़ी है, उतनी ही तेजी से इस पर सवाल भी उठने लगे हैं। एटीएनआइ की रपट ने पैकेट वाले खाद्य पदार्थ के उन पहलुओं को उजागर किया है, जो न केवल उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं, बल्कि इससे जुड़े उद्योग की नैतिकता और दोहरे मानकों पर भी गंभीर सवाल खड़े करते हैं। यह समस्या केवल खाद्य उत्पादों तक सीमित नहीं है। सार्वजनिक स्वास्थ्य, उपभोक्ता अधिकार और वैश्विक न्याय जैसे बड़े मुद्दों से भी जुड़ी है। डिब्बाबंद खाद्य पदार्थों की मांग और उसकी बढ़ती लोकप्रियता का मुख्य कारण इसकी सुविधा और विविधता तो हैं ही, ये लंबे समय तक खराब नहीं होते। ये उत्पाद न केवल झटपट तैयार हो जाते हैं, बल्कि उपभोक्ताओं को स्वाद भी देते हैं। यात्रा के दौरान ले जाने में सुविधाजनक होते हैं। इन खाद्य पदार्थों ने एक विकल्प के रूप में अपनी पहचान बनाई है, लेकिन इस सुविधा की कीमत उपभोक्ताओं को अपने स्वास्थ्य से चुकानी पड़ रही है।

भारत में पैकेट फूड बनाने वाले उद्योग का तेजी से विस्तार हो रहा है। यह उद्योग भारतीय अर्थव्यवस्था का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है। बढ़ती आय, शहरीकरण और ई-कामर्स के प्रसार ने इस उद्योग को एक बड़ा बाजार दिया है। देश के हर कोने में इन उत्पादों की पहुंच है,

लेकिन इस उद्योग के बढ़ते प्रभाव के साथ, इसके नकारात्मक पहलुओं पर भी ध्यान देना आवश्यक है। प्लास्टिक पैकेजिंग से उत्पन्न कचरा पर्यावरणीय संकट बढ़ा रहा है। इसके अलावा, इस प्रकार के खाद्य पदार्थ पारंपरिक खानपान और स्थानीय खाद्य संस्कृति को भी प्रभावित कर रहे हैं। विकसित देशों में खाद्य सुरक्षा और गुणवत्ता के सख्त मानकों के कारण वहां के उपभोक्ताओं को उच्च गुणवत्ता वाले उत्पाद मिलते हैं,

लेकिन विकासशील देशों में ये कंपनियां गुणवत्ता से समझौता कर रही हैं। यह नीति न केवल अनैतिक है, बल्कि असमानता और अन्याय को भी बढ़ावा देती है। सबसे बड़ा उदाहरण यह है कि उच्च आय वाले देशों में इन कंपनियों के उत्पादों की पोषण रेटिंग बेहतर होती है, जबकि भारत जैसे देशों में यही कंपनियां निम्न गुणवत्ता वाले उत्पाद बेचती हैं।

डिब्बाबंद स्वास्थ्य संबंधी नुकसान स्पष्ट हैं। इनमें नमक, चीनी और 'ट्रांस फैट' की अत्यधिक मात्रा होती है, जो न केवल मोटापा और मधुमेह जैसी बीमारियों का कारण बनती, बल्कि हृदय रोग और कैंसर का खतरा भी बढ़ाती है। इन उत्पादों में आवश्यक पोषक तत्त्वों की कमी होती है, जिसके कारण बच्चों और किशोरों के शारीरिक तथा मानसिक विकास पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इसके अलावा, इन उत्पादों की आकर्षक पैकेजिंग बच्चों को अपनी ओर आकर्षित करती है, जिससे वे इन्हें खाने के आदी हो जाते हैं। इन खाद्य पदार्थों से बच्चों में मोटापा भी बढ़ रहा है। अत्यधिक चीनी और वसा वाले ये उत्पाद मधुमेह जैसे रोग का खतरा बढ़ाते हैं। साथ ही, इनसे बच्चों की प्रतिरक्षा प्रणाली कमजोर हो सकती है। इससे वे जल्दी बीमार पड़ते हैं। विज्ञापनों से प्रभावित होकर बच्चे घर का खाना छोड़ कर जंक फूड पर निर्भर हो जाते हैं। नतीजा, उनकी आदत बिगड़ जाती है।

इन उत्पादों में कई बार कृत्रिम रंग और परिरक्षक होते हैं, जो बच्चों के लिए नुकसानदेह हो सकते हैं। इनसे एलर्जी, पाचन संबंधी समस्याएं और ध्यान केंद्रित करने में कठिनाई हो सकती है। ऐसे खाद्य पदार्थों का लगातार सेवन बच्चों में ऊर्जा की कमी और थकान का कारण भी बन सकता है। कंपनियां अक्सर लागत में कमी और लाभ बढ़ाने के लिए कम गुणवत्ता वाले उत्पाद इन बाजारों में बेचती हैं। भारत जैसे देशों में, जहां बड़ी आबादी कम कीमत के उत्पादों पर निर्भर करती है, यह एक बड़ा मुद्दा बनता जा रहा है। निम्न आय वाले देशों में उपभोक्ताओं को पोषण महत्त्व और इन खाद्य उत्पादों में छिपे हानिकारक प्रभावों की सीमित जानकारी होती है। इसके अलावा बड़े ब्रांड की लोकप्रियता और कम कीमत, उपभोक्ताओं को ऐसे उत्पाद खरीदने के लिए प्रेरित करती है। सरकार ने पैकेट फूड उद्योग को विनियमित करने के लिए कई कदम उठाए हैं। खाद्य सुरक्षा और मानक अधिनियम, 2006 के तहत खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण (एफएसएसएआई) का गठन किया गया, जो खाद्य उत्पादों की गुणवत्ता और सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए जिम्मेदार है। एफएसएसएआई ने पोषण के बारे में जानकारी देना अनिवार्य बनाया है। सरकार ने जागरूकता बढ़ाने के लिए कई अभियान चलाए हैं, लेकिन इन प्रयासों को और मजबूत करने की जरूरत है। यह समझना आवश्यक है कि मुनाफा स्वास्थ्य से अधिक महत्त्वपूर्ण नहीं हो सकता। कंपनियों को उत्पादों की गुणवत्ता में सुधार करना होगा और उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य को प्राथमिकता देनी होगी। पोषक तत्त्वों से भरपूर उत्पाद विकसित करने के लिए उन्हें अनुसंधान और नवाचार में निवेश करना चाहिए। एक स्वस्थ समाज का निर्माण तभी संभव है, जब उपभोक्ता जागरूक हों, सरकार जिम्मेदार हो और उद्योग नैतिकता का पालन करें। यह न केवल उपभोक्ताओं, बल्कि पूरे समाज और पर्यावरण के लिए भी फायदेमंद होगा। स्वास्थ्य और मुनाफे के बीच संतुलन बनाना एक चुनौती हो सकता है, लेकिन यह असंभव नहीं है। स्वस्थ जीवनशैली और पौष्टिक भोजन तक पहुंच सुनिश्चित करना प्रत्येक व्यक्ति का अधिकार है।

• बदलते रंगों का मौसम

बदलाव प्रकृति का नियम है और इस बदलाव की प्रक्रिया में ऋतुओं का चक्र हर नए मौसम की नई उमंगों और नई तरंगों के साथ मानवीय मन-मस्तिष्क और हृदय में नई ऊर्जा का संचार करता है। प्राकृतिक रंगों और बदलते मौसम का यह खूबसूरत दृश्य संपूर्ण धरती और सौरमंडल को रंगों के इस उत्सव में भिगो देता है। जब से मनुष्य का जन्म हुआ है, तब से रंगों की प्रक्रिया, बदलते मौसम और ऋतुओं के इस चक्र से पूरा जहान रंगों के आनंद में बह जाता है। बदलते मौसम की यह प्रक्रिया और रंगों की रूमानी चादर इस तरह से बदलती है कि धरती का हर लम्हा हर मौसम में नया लगता है। इसका मर्म यह है कि धरती पर रहने वाले सब पशु- पक्षी और इंसान अपनी जिंदगी के लिए रंगों के आवरण में रंग कर मौसम का लुत्फ लेकर अपने आप को हर मौसम के लिए जिंदा रख सकें। जिंदा रहने और आगे बढ़ने का एक नया रास्ता मनुष्य को नई सांसों की पूंजी से भर देता है।

खूबसूरती यह है कि जिंदगी और रंगों की इस अद्भुत दौड़ में यह सब कुछ ऐसे होता जाता है और इस तरह जीवन में और मौसम के साथ आता है कि हम अंदाजा भी नहीं लगा सकते कि किस वक्त कौन - सा मौसम और ऋतुओं का चक्र और कौन - सा मौसमी रंग बदल गया है। गर्मी, सर्दी, बारिश और बसंत का मौसम आंख झपकते ही हमें नए जोश और उत्साह से भर देता है । यों दुनिया भर के साहित्य में मौसमों को प्रकृति और इंसान के बीच बदलाव की प्रक्रिया को खूबसूरत शब्दों में बयान किया गया है। कहते हैं कि हर सुबह बदलते मौसम सूचक है। सूर्य की पहली किरणें हर नए रंग से हमें इस धरती पर रहने वाले जीव-जंतु, पौधे, वनस्पति को रोमांस से भर देती हैं। यही धूप का साया है और यही रंगों की आमद है, जो जिंदगी की निशानी है । पर इन बदलते मौसम में रंगों का मौसम कैसे धीरे से हमारे जीवन में बिना आहट के आ जाता है कि हम अंदाजा भी नहीं लगा पाते। अक्तूबर में हल्की गर्मी की ढलान से थकी हुई धूप के बाद नवंबर में गुलाबी ठंड की दस्तक भी अब दिसंबर के सफर पर चल पड़ी है। यही शरद ऋतु का नजारा और रंग ऋतुओं के रंगों की महकती हुई हवा नई जिंदगी और नए समय की

प्रभात का एक नया रंग है। रंगों का यह मौसम है जो जिंदगी को अपने रंग से ढक देता है ।

बदलते मौसम में सही से प्रकृति के जादू का मौसम शुरू हो रहा है। विज्ञान की दुनिया में धरती के जिन मुद्दों को लेकर इन दिनों बहस है कि बदलते हुए मौसम और बदलते हुए रंगों में से जिस तरह से हमने पर्यावरणीय तत्त्वों को लेकर पूरी धरती को जहरीली गैसों से भर दिया है, उससे हमारे जीवन पर इन प्राकृतिक रंगों के ऐसे धब्बे पड़ गए हैं, जिनसे हमारा जीवन और जीने के लिए साफ हवा - पानी प्रायः खत्म होता जा रहा है।

हमने प्रकृति के दिए हुए सारे रंगों को नष्ट कर दिया है। बदलते मौसम और प्रकृति के इन रंगों के पर्यावरण मुद्दों ने रंगों की प्रक्रिया को इतना बिगाड़ दिया है कि अब हमारे जीने पर ही प्रश्नचिह्न लग गया है। इस समय सच यह है कि हमने पूरी दुनिया के जल, जंगल, जीवन और समंदर को भी जिस तरह से दूषित कर दिया है, वह दूसरे ही रंग की कहानी कहता है।

रंगों का यह मौसम एक नई शुरुआत का मौसम है और यह धीरे से हमारे जीवन में हल्की गुलाबी सर्दी के आकाश में नए रंगों की आमद और उसकी आभा के रंग है और और शरद ऋतु के आते-जाते चारों तरफ धरती पर लाल, नारंगी, पीले और गहरे हरे रंग में नजर आती धरती पर छाई हुई चादर पहाड़ी और नीम पहाड़ी इलाकों में पूरी दुनिया में एक-सी धवल दृश्य को दिखाती है।

रंगों के प्राकृतिक बदलाव की सत्ता को भी देखा जा सकता है और हम अंदाजा नहीं लगा सकते कि यह कौन चित्रकार है, कौन इसको रखता है और किस तरह से इस धरती को रंगों के श्रृंगार से हल्की ठंड और गुलाबी सम्मोहन की धूप से पेड़ पौधों में और वनस्पति में आदमी को नए क्षितिजों की ओर देखने के लिए एक नए उत्साह और उमंग से भर देता है। कश्मीर और पूर्वोत्तर में जिस तरह की वनस्पतियां होती हैं, वे अद्भुत हैं। वह स्विट्जरलैंड के बर्फ से लदे पहाड़ों से भी कहीं ज्यादा खूबसूरत है । हमारे कश्मीर में इस मौसम को हरुद कहा गया है और सूफियों से लेकर नए कवियों तक लिखने वालों ने इस मौसम की खूबसूरती को बयां किया है। कश्मीर के लोग जानते हैं कि इन दिनों वहां पर बहुतायत में पाए जाने वाले मेपल के पेड़ों के पत्ते किस तरह रंग बदलते हैं और भूरे रंग से वहां की पहाड़ियां और धरती ढक जाती हैं।

वहां के आदि सूफियों की कविता में इसे जादुई मौसम का नाम दिया गया है और यह मौसम का जादू ही होता है जो आदमी को नए मरहलों की तरफ और नई ऊंचाइयों की तरफ देखने का उत्साह देता है। दुनिया भर के साहित्य में मौसमों के बदलाव को प्रकृति का जादू कहा गया है। सवाल है कि हम इन रंगों से क्या कर रहे हैं। अगर हमने जल, जंगल, जीवन, आकाश, पहाड़ और इस धरती को नहीं बचाया, तो यही रंग बदरंग होकर हमारी जीवन लीला को समाप्त कर देंगे। अभी भी समय है कि हम हवा, पानी और पहाड़ को बचाकर इस जमीन पर जिंदा रहने के अवसर को बचा लें। धरती के रंगों से विमुख होना शायद हमें इतना महंगा पड़ जाएगा... हम अपनी और हवा से महरूम हो जाएंगे।

कंप्यूटर-आधारित परीक्षण के माध्यम से शैक्षिक विभाजन को पाटना

विजय गर्ग

एक सफल कक्षा केवल किताबों और संसाधनों के बारे में नहीं है; यह एक ऐसा वातावरण बनाने के बारे में है जहां छात्र सफल होने के लिए मूल्यवान, सुने जाने वाले और सशक्त महसूस करते हैं भारत जैसे आबादी वाले और विविधतापूर्ण देशों में, शैक्षिक परिदृश्य अक्सर शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच स्पष्ट विरोधाभासों को प्रतिबिंबित करता है। शहरी क्षेत्र उन्नत बुनियादी ढांचे और व्यापक शैक्षिक अवसरों तक पहुंच से लाभान्वित होते हैं, जबकि ग्रामीण क्षेत्र अक्सर सीमित संसाधनों और अवसरों के साथ संघर्ष करते हैं। यह असमानता ग्रामीण समुदायों में छात्रों को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है, जिससे उनके करियर की संभावनाएं सीमित हो जाती हैं और गरीबी का चक्र बना रहता है। हालाँकि, कंप्यूटर-आधारित परीक्षण (सीबीटी) जैसे नवोन्मेषी समाधान इस विभाजन को पाटने की क्षमता रखते हैं, जिससे रोजगार क्षमता और सामाजिक आर्थिक प्रगति में वृद्धि को बढ़ावा मिलता है। प्रमाणन के माध्यम से सशक्तीकरण: शैक्षिक केंद्र व्यक्तियों को रोजगार और उद्यमिता की ओर ले जाने वाले कौशल से लैस करके सामाजिक आर्थिक विकास को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ऑनलाइन शिक्षण पहल और सीबीटी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक समान पहुंच प्रदान करते हैं, जिससे ग्रामीण शिक्षार्थियों को उनके शहरी समकक्षों के बराबर अवसर मिलते हैं। सीबीटी पाठ्यक्रमों और प्रमाणपत्रों की एक विस्तृत श्रृंखला को सक्षम करके इन पहलों को बढ़ाता है, जिसमें कोडिंग और डेटा विश्लेषण जैसे तकनीकी कौशल और संचार और नेतृत्व जैसे सॉफ्ट कौशल शामिल हैं। राष्ट्रीय या विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त प्रमाणपत्र व्यक्तियों के कौशल में मूल्य जोड़ते हैं, जिससे वे नौकरी बाजार में अधिक प्रतिस्पर्धी बन जाते हैं। जैसे-जैसे अधिक लोग कौशल बढ़ाते हैं और रोजगार सुरक्षित करते हैं, समुदाय आर्थिक उत्थान का अनुभव करते हैं। शिक्षित व्यक्ति अक्सर अपने समुदायों के भीतर ज्ञान साझा करते हैं, जिससे एक प्रभावशाली प्रभाव पैदा होता है जो निरंतर सीखने और विकास को बढ़ावा देता है। कौशल अंतराल को संबोधित करना: विश्व स्तर पर तकनीकी कौशल की मांग बढ़ रही है। विश्व आर्थिक मंच की नौकरियों का भविष्य रिपोर्ट 2023 इस बात पर प्रकाश डालती है कि प्रौद्योगिकी और आईटी भूमिकाएँ शीर्ष 100 उभरती नौकरियों में से 16 हैं, जो तकनीक से संबंधित विशेषज्ञता के बढ़ते महत्व को दर्शाती हैं। इसके विपरीत, मैनपावर ग्रुप की ग्लोबल टैलेंट शॉर्टेज रिपोर्ट एक महत्वपूर्ण कौशल अंतर का खुलासा करती है, जिसमें 77 प्रतिशत नियोक्ता योग्य प्रतिभा खोजने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। इस अंतर को पाटना वर्तमान और भविष्य की बाजार मांगों को पूरा करने के लिए महत्वपूर्ण है, खासकर आईटी और तकनीक-केंद्रित पाठ्यक्रमों के माध्यम से। पियर्सन वीयूई की 2023 वैल्यू ऑफ आईटी सर्टिफिकेशन कैंडिडेट रिपोर्ट के अनुसार, जिन पेशेवरों ने आईटी प्रमाणन अर्जित किया, उन्हें अपनी क्षमताओं पर विश्वास हुआ, 81 प्रतिशत ने नई नौकरी के अवसर तलाशने के लिए सशक्त महसूस किया। सीबीटी क्षमताओं वाले शैक्षिक केंद्र ग्रामीण क्षेत्रों में व्यक्तियों को बाजार की जरूरतों के अनुरूप प्रमाणपत्र प्राप्त करने में सक्षम बनाते हैं, जिससे पूरे देश में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और रोजगार क्षमता को बढ़ावा मिलता है। कंप्यूटर-आधारित परीक्षण की व्यापक पहुंच: सीबीटी की लचीली प्रकृति पारंपरिक परीक्षण विधियों की तुलना में अद्वितीय लाभ प्रदान करती है। उम्मीदवार सुविधाजनक परीक्षण स्थान और समय स्लॉट चुन सकते हैं, जिससे तनाव कम होगा और प्रदर्शन में सुधार होगा। यह दृष्टिकोण कोवडा-19 महामारी के दौरान अमूल्य साबित हुआ, जिससे व्यक्तियों को दूर से परीक्षा देने की अनुमति मिली। आईटी प्रमाणन रिपोर्ट का 2023 मूल्य प्रमाणन के वास्तविक लाभों को रेखांकित करता है: 35 प्रतिशत भारतीय उम्मीदवारों ने नौकरी में पदोन्नति का अनुभव किया, जबकि 37 प्रतिशत ने अपने उद्योग में नए अवसर हासिल किए, और 20 प्रतिशत ने विभिन्न क्षेत्रों में संक्रमण किया। शहरी-ग्रामीण असमानताओं को पाटना: सीबीटी केंद्रों की बढ़ती उपलब्धतासुदूरवर्ती क्षेत्र शिक्षा और रोजगार में क्षेत्रीय असमानताओं को दूर करने की दिशा में एक कदम है। ये केंद्र व्यक्तियों को कौशल बढ़ाने, मान्यता प्राप्त प्रमाणपत्र प्राप्त करने और उनके करियर की संभावनाओं में सुधार करने का मार्ग प्रदान करते हैं। जैसे-जैसे भारत अपने सीबीटी बुनियादी ढांचे का विस्तार करना जारी रखता है, राष्ट्र समान शैक्षिक अवसरों को साकार करने और समावेशी सामाजिक आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के करीब पहुंचता है।

इंडिया गठबंधन की दशा और दिशा

ममता बनर्जी का यह कहना कि वह बंगाल से बाहर नहीं जा सकती, ऐसे में चुनाव के दौरान देशभर में रैलियों और सभाओं की जिम्मेदारी कैसे निभा पाएंगी। यदि गठबंधन के दल ममता को नेता मान भी लें तो फिर वही यक्ष प्रश्न सीटों के बंटवारे और राष्ट्रीय स्तर पर घोषणा पत्र को लेकर फिर से खड़ा होगा। भाजपा विपक्षी गठबंधन पर मुस्लिम प्रेम और भ्रष्टाचार को लेकर हावी रही है। भाजपा के सफलता पाने की भी यही प्रमुख वजह है

सूत न कपास, जुलाहों में लठ्ठम लठ। इंडिया गठबंधन के विपक्षी दलों की हालत कुछ ऐसी हो गई है। भाजपा गठबंधन से मुकाबला करने में विफल रहे विपक्षी दल के नेता नेतृत्व की कलह से जूझ रहे हैं। भाजपा से बुरी तरह शिकस्त खाने और राजनीतिक धरातल पर हैसियत को स्वीकार किए बगैर विपक्षी नेता गठबंधन के नेतृत्व के जरिए भविष्य का प्रधानमंत्री बनने का सपना पाले हुए हैं। इन दलों का आधार बेशक एक राज्य से ज्यादा नहीं हो, किन्तु देश को नेतृत्व देने की आपसी होड़ में पीछे नहीं हैं। विपक्षी दलों के पास भाजपा से मुकाबला करने के लिए कोई एजेंडा तक नहीं है। लोकसभा चुनाव और हाल ही में हुए उपचुनावों में इंडिया गठबंधन के दल आपस में ही मुकाबला करते रहे। विपक्षी दलों का ख्वाब है कि जिसके हाथ में नेतृत्व की कमान होगी, उसी के हाथ में देश की बागडोर होगी। ठोस रणनीति के अभाव में यह दिन में ख्वाब देखने जैसा है। इंडिया गठबंधन के दलों में आपस में ही नेतृत्व की होड़ मची हुई है। भाजपा के खिलाफ कोरी बयानबाजी से विपक्षी दलों के नेता बयानवीर साबित हो रहे हैं। लोकसभा और उससे पहले विधानसभा चुनावों में इंडिया गठबंधन ताश के पत्तों की तरह बिखर गया। विपक्षी दलों ने चुनाव जीतने के लालच में गठबंधन की धज्जियां उड़ाने में कसर बाकी नहीं रखी। गठबंधन की हालत उस घोड़ा-गाड़ी जैसी हो गई जिसके घोड़े को हर घुड़सवार अपने हिसाब से हांकना चाहता है।

ऐसे में यह गठबंधन देश को नेतृत्व देने के मामले में आगे बढने के बजाय पीछे खिसकता जा रहा है। इसी का परिणाम है कि भाजपा ने लोकसभा चुनाव में इंडिया गठबंधन को चारों खाने चित्त कर दिया। इंडिया गठबंधन में नेतृत्व का मसला पहले भी कई बार उठ चुका है। गठबंधन का हर घटक दल नेतृत्व का दावा जताता रहा है। हास्यास्पद यह है कि दावा जताने वाले अपने प्रभाव वाले राज्य में भी भाजपा को हराने में कामयाब नहीं हो सके। इस बार नेतृत्व की दुदुंभि तृणमूल कांग्रेस प्रमुख और पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की तरफ से बजाई गई है। ममता बनर्जी ने हालिया चुनावों और उपचुनावों में इंडिया ब्लॉक के प्रदर्शन पर निराशा जाहिर की और कहा कि वह इसकी कमान संभालने को तैयार हैं। ममता ने हालिया हरियाणा और महाराष्ट्र चुनाव में इंडिया ब्लॉक के खराब प्रदर्शन पर असंतोष जाहिर किया है और संकेत दिया कि अगर मौका मिला तो वह इंडिया ब्लॉक की कमान संभालने के लिए तैयार हैं। टीएमसी सुप्रीमो ने कहा कि वह बंगाल की मुख्यमंत्री के रूप में अपनी भूमिका जारी रखते हुए विपक्षी मोर्चे को चलाने की दोहरी जिम्मेदारी संभाल सकती हैं। ममता बनर्जी ने कहा कि मैंने इंडिया ब्लॉक का गठन किया था, अब मोर्चा का नेतृत्व करने वालों पर इसका प्रबंधन करने की जिम्मेदारी है। अगर वे इसे नहीं चला सकते, तो मैं क्या कर सकती हूं? मैं सिर्फ इतना कहूंगी कि सभी को साथ लेकर चलना होगा। ममता के इस बयान के बाद अन्य विपक्षी दलों के नेताओं की अतृप्त इच्छा में उबाल आ गया। गठबंधन के दल के नेता अब नेतृत्व का दावा ठोक रहे हैं। कांग्रेस सांसद वर्षा गायकवाड़ ने कहा कि ममता बनर्जी को ऐसा लगता है, पर हमें ऐसा नहीं लगता। इस पर चर्चा करेंगे। उनके कहने से उनकी पार्टी चलती है। हम तो कांग्रेस के कहने से चलते हैं। वहीं कांग्रेस सांसद इमरान मसूद ने कहा कि ममता जी बड़ी नेता हैं, लेकिन राहुल गांधी के अलावा देश में कोई नेतृत्व करने की स्थिति में नहीं है। लेफ्ट नेता डी. राज्या ने कहा कि कांग्रेस को आत्मचिंतन करने की जरूरत है।

हालात इंडिया ब्लॉक की मीटिंग की मांग करते हैं। कांग्रेस ने हरियाणा और महाराष्ट्र चुनावों में गठबंधन सहयोगियों को समायोजित नहीं किया। अगर कांग्रेस ने इंडिया ब्लॉक सहयोगियों की बात सुनी होती तो लोकसभा और हरियाणा-महाराष्ट्र में नतीजे अलग होते। शिवसेना यूबीटी के सांसद संजय राउत ने कहा कि हमें ममता बनर्जी की राय पता है। हम चाहते हैं कि ममता हमारे साथ रहें। हम सभी एक साथ हैं। अगर कोई मतभेद भी हैं तो वो छोटे मोटे हैं। हम कोलकाता जाकर ममता बनर्जी से बात करेंगे। सपा प्रवक्ता उदयवीर सिंह ने कहा कि अगर ममता जी ने कोई इच्छा जाहिर की है तो इंडिया ब्लॉक नेता उस पर विचार करके उनका सहयोग लें। इससे इंडिया गठबंधन मजबूत होगा। नेतृत्व को लेकर मचे इस घमासान में लालू यादव की पार्टी कैसे पीछे रह सकती है। बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री और आरजेडी प्रमुख लालू यादव ने भी ममता बनर्जी को विपक्षी गठबंधन का नेता बनाने की मांग कर दी। लालू ने कहा कि कांग्रेस की आपत्ति का कोई मतलब नहीं है। हम ममता का समर्थन करेंगे। ममता बनर्जी को इंडिया ब्लॉक का नेतृत्व दिया जाना चाहिए। लालू यादव का यह बयान कांग्रेस के लिए बड़ा झटका माना जा रहा है, क्योंकि लालू यादव लंबे समय से कांग्रेस के पुराने साथी रहे हैं। लालू यादव की यह मांग कांग्रेस के लिए मुसीबत बन सकती है। गठबंधन में शामिल कुछ दल पहले से ही ममता बनर्जी को इंडिया गठबंधन की कमान सौंपने की वकालत कर चुके हैं। आरजेडी प्रवक्ता मृत्युंजय तिवारी ने कहा कि भाजपा के खिलाफ विपक्षी गठबंधन के असली आर्किटेक्ट लालू प्रसाद यादव हैं। उनकी पहल पर ही पटना में इंडिया गठबंधन की पहली बैठक हुई थी। इस बैठक में ममता बनर्जी भी शामिल हुई थी। सभी अपने-अपने राज्यों में भाजपा के खिलाफ लड़ाई में जुटे हुए हैं। अभी झारखंड में हमें सफलता मिली है। पश्चिम बंगाल में भाजपा के खिलाफ ममता बनर्जी मजबूती से लड़ाई लड़ती हैं। अब 2025 में बिहार की बारी है। भाजपा के खिलाफ हमारा गठबंधन पूरी तरह एकजुट है। गौरतलब है कि इंडिया गठबंधन को नेतृत्व देने की रस्साकशी में जुटे विपक्षी दलों के नेताओं में लोकसभा चुनाव से पूर्व हुई बैठकों में घोषणापत्र को लेकर एकराय कायम नहीं हो सकी।

घटक दल चुनावों में सीटों के वितरण को लेकर भी मतभेद का शिकार रहे। इनकी आपसी फूट का फायदा भाजपा को मिला। भाजपा गठबंधन तीसरी बार केंद्र में सरकार बनाने में कामयाब रहा। ममता बनर्जी का यह कहना कि वह बंगाल से बाहर नहीं जा सकती, ऐसे में चुनाव के दौरान देशभर में रैलियों और सभाओं की जिम्मेदारी कैसे निभा पाएंगी। यदि गठबंधन के दल ममता को नेता मान भी लें तो फिर वही यक्ष प्रश्न सीटों के बंटवारे और राष्ट्रीय स्तर पर घोषणा पत्र को लेकर फिर से खड़ा होगा। भाजपा विपक्षी गठबंधन पर मुस्लिम प्रेम और भ्रष्टाचार को लेकर हावी रही है। काफी हद तक भाजपा के लगातार तीसरी बार लोकसभा चुनाव में सफलता पाने की भी यही प्रमुख वजह मानी जाती है।

ऐसी बानी बोलिए

कहने को तो जीवन एक बार मिलता है, लेकिन इस यथार्थ से रूबरू होने के साथ हम यह भी जानते हैं कि इस एक जीवन को जीने के लिए रोज हमें कितनी ही चीजों की जरूरत पड़ती है। उस पर भी हर चीज संतुलित मात्रा में चाहिए । अगर कोई भी चीज अपनी निर्धारित मात्रा से कम या ज्यादा हो जाए तो बात बिगड़ते देर नहीं लगती । इसलिए जीवन की कुछ गतिविधियों के लिए उचित संतुलन का होना आवश्यक है, जैसे चलना, दौड़ना और यहां तक कि बिना गिरे खड़े रहना या बैठना जैसे सरल कार्य भी। दरअसल, संतुलन वह चीज है जो हम सबकी विभिन्न स्थितियों में स्थिरता बनाए रखने में मदद करती है। मसलन, किसी चट्टान पर कदम रखना या जब हम गिरते हैं तो खुद को संभालना । हमारे पास अपने संतुलन को बेहतर बनाने और उम्र के साथ होने वाली गिरावट को रोकने की क्षमता मौजूद होती है। बस जरूरत होती है उसे जानने की और समय पर सक्रिय होने की ।हम जितने अधिक सक्रिय होंगे, हमारा संतुलन उतना ही बेहतर होगा। अच्छा संतुलन हमें गिरने और चोट लगने से बचाने में मदद कर सकता है और हमें वह काम करने में मदद कर सकता है जो हमें पसंद है। साथ ही उम्र बढ़ने के साथ हमें लंबे समय तक स्वतंत्र रहने में सक्षम बनाता है। संतुलन के साथ एक और अहम चीज है 'विचार' ।

विचार एक तरह से हमसे अलग होते हैं। वे ऐसी वस्तु नहीं हैं जो स्वभाव के साथ एकाकार हो जाएं। वे आते हैं और चले जाते हैं, लेकिन हम बने रहते हैं 'स्थिर' । एक जगह कहीं पढ़ा है, विचारों को शून्य करने का तरीका है विचारों के प्रति पूरी तरह से सजग हो जाना। कोई व्यक्ति अपने विचारों के प्रति जितना ज्यादा सजग होगा, उतने ही कम विचार उसके मन में आएंगे। लेकिन ये विचार अपने आने और जाने के क्रम में बहुत कुछ कर सकते हैं, जिनसे जीवन की दिशा और दशा दोनों प्रभावित हो सकती है। ये हमारे मन, कर्म और वाणी को भी प्रभावित कर सकते हैं। विचारों और बोली की महत्ता पर कहा भी गया है कि 'बिना विचारे जो करें सो पाछे पछताय' । इसका मतलब यह है कि अगर कोई व्यक्ति किसी काम को करने से पहले कुछ नहीं सोचता और उसे बस कर ही डालता है, तो बाद में उसे अपनी गलती का एहसास होता है और वह पछताता है। कर्म करने से पहले जिस तरह ठीक से सोचना चाहिए, उसी तरह वाणी के प्रयोग करने से पहले भी कम से कम दस बार जरूर सोचना चाहिए। बल्कि गुस्से के वक्त तो चुप रह जाना ही बेहतर है। जीवन में कई बार ऐसी घटनाएं होती हैं, जो इस बात पर निर्भर करती हैं कि हम क्या कहते हैं और कैसे कहते हैं !

हम कल्पना कर सकते हैं कि हम किसी नौकरी के साक्षात्कार के लिए गए हों और वहां ऐसी बातें कह कर आ जाते हैं जो लापरवाही से भरा और विचारहीन हैं। इस क्रम में हम स्वयं का बेहतर संस्करण प्रस्तुत करने से चूक जाते हैं और हमें नौकरी मिलने की संभावना भी कम हो जाती है। इसलिए अपनी जिह्वा को हमेशा अपने वश में रखना चाहिए और समय पर सोच-विचार कर ही खोलना चाहिए। यानी हमें जो कहना है, उसके हर पहलू पर विचार करके ही बोलिए। फिर आपके बोलने का क्या परिणाम होगा उसका निरीक्षण करना भी आपकी जिम्मेदारी है। क्योंकि जब तक हमने कुछ नहीं कहा है, स्थिति हमारे नियंत्रण में होती है, लेकिन जैसे ही हमने अपनी बात रख दी, उसके बाद उस पर से हमारा नियंत्रण खत्म हो जाता है। कई बार इससे अपकीर्ति होने का भय भी रहता है। साथ ही लज्जित होने और पश्चाताप भर जाने का भी डर बना रहता है। इस संदर्भ में एक कहावत है कि यही मुंह पान भी खिलाता है और यही मुंह पिटाई भी खिलाता है या फिर जोखिम भरी परिस्थितियों में डाल देता है । इसका यह अर्थ भी नहीं है कि हम चुपचाप अपने मुंह को सिलकर बैठे रहें । अच्छी लगने वाली बातें करना भी एक कला है। मतलब हम जब किसी के साथ बैठे हों तो अपनी विद्वत्ता दिखाने के चक्कर में जरूरत से ज्यादा बोलना या डींग हांकना गलत बात है। शेख सादी का कथन है कि दो बातें हमेशा ध्यान रखनी चाहिए- एक तो बात करने के अवसर पर चुप हो जाना और दूसरे चुप रहने के स्थान पर बोलना । इसका अर्थ यह है कि मितभाषी बनने का प्रयास करना चाहिए। कम बोला जाए, लेकिन भली-भांति सोच- विचार कर बोला जाए। वाणी प्रयोग के अन्य नियमों में प्रिय वचन बोलना भी आता है। यानी कि हम जब भी बोलें, प्रिय बोलें। मन को शीतल करने वाले शब्दों का प्रयोग करें। अप्रिय न बोलें । एक प्रसिद्ध उक्ति है- 'सत्यं ब्रूयात, प्रियं ब्रूयात, न ब्रूयात सत्यं अप्रियं । यानी सत्य बोलें, प्रिय बोलें, लेकिन अप्रिय लगने वाले सत्य से भी परहेज करें। यह वाणी की मर्यादा है कि सत्य को भी इस प्रकार से बोलना चाहिए कि सुनने वाले को अप्रिय न लगे। सुनने वाले को यह नहीं लगना चाहिए कि हमारी भाषा से हमारा पद, धन या अभिमान बोल रहा है। वाणी हमेशा संयत, विनम्र और मधुर होनी चाहिए। ताकि सभी एक-दूसरे के निकट आ सकें। कभी-कभी लोग इसलिए भी बात करते हैं कि वे बस चाहते हैं कि कोई उनकी बात सुने । अपनी बात कहने के बाद वे बेहतर महसूस कर सकते हैं। चाणक्य की यह उक्ति मशहूर है कि जिस वाणी से लोग अच्छा अनुभव करते हों, ऐसी प्रिय वाणी बोलने में कंजूसी कैसी !

कितनी भी हो सैलरी, ऐसे बनाएं बजट- कभी कम नहीं पड़ेंगे

परिवहन विशेष न्यूज

50-30-20 Formula जॉब के साथ सेविंग करना बहुत जरूरी है। ऐसे में सेविंग और खर्चों को मैनेज करना कभी-कभी मुश्किल हो जाता है। ऐसे में एक सही बजट बनाना काफी जरूरी है। इसके लिए फाइनेंशियल 50-30-20 फॉर्मूला काफी कारगार साबित होता है। हम आपको इस आर्टिकल में बताएंगे कि 50-30-20 फॉर्मूला क्या है और यह कैसे काम करता हैं। पढ़ें पूरी खबर...

नई दिल्ली। हम जॉब करते हैं तो साथ में जिम्मेदारी भी आती है। हम कोशिश करते हैं कि अपने माता-पिता को कोई आर्थिक मदद करें। इसके अलावा हम ज्यादा से ज्यादा सेविंग करने की भी कोशिश करते हैं। लेकिन, इसके लिए सही प्लानिंग होना जरूरी है। प्लानिंग के साथ बजट और अनुशासन का भी अहम रोल है।

हम आपको आप फाइनेंशियल सशक्त होने और सही बजट तैयार करने में मदद करेंगे। वैसे तो वित्तीय तौर पर बजट बनाने के लिए कई फॉर्मूला है, लेकिन इन फॉर्मूला में सबसे पॉपुलर 50-30-20 फॉर्मूला (50-30-20 Formula) है।

क्या है 50-30-20 फॉर्मूला? (What is 50-30-20 Formula?)

इस फॉर्मूला में आप अपनी सैलरी को तीन भाग में बांटते हैं। फॉर्मूला में 50 फीसदी हिस्सा खर्च, 30 फीसदी जरूरत और 20 फीसदी सेविंग होता है। यह फॉर्मूला सेविंग के साथ एक्सपेंस को मैनेज करने में भी मदद करता है। इसके अलावा यह कई फाइनेंशियल गोल को पूरा करने में भी हेल्प करता है।

कैसे काम करता है ये फॉर्मूला? (How does the 50-30-20 Formula work?)

28 वर्षीय पूजा दिल्ली के पीजी में रहती है। वह मासिक 50,000 रुपये कमाती है। इसमें से वह हर महीने 10,000 रुपये अपने माता-पिता को भेजती है। अब सवाल आता है कि वह इस फॉर्मला के मदद से अपने खर्चों और आवश्यकताओं के साथ सेविंग कैसे करेगी?

पूजा हर महीने अपनी सैलरी से 10,000 रुपये माता-पिता को देती है। इसके बाद उसकी कुल सैलरी 40,000 रुपये होती है। 50-30-20 फॉर्मूला के हिसाब से पूजा को मासिक सैलरी का 50 फीसदी हिस्सा यानी 20,000 रुपये खर्च में होंगे। इस खर्च में पीजी का किराया, खाना,बिजली बिल आदि शामिल हैं।

अब बाकी बचे 50 फीसदी सैलरी को दो भाग में बांटे। बची हुई सैलरी का 30 फीसदी हिस्सा यानी 12,000 रुपये का इस्तेमाल जरूरत के लिए करें। जरूरत से हमारा मतलब लाइफस्टाइल से है जैसे जिम या कोई वर्कशॉप आदि पर खर्च करें।

आपको कोशिश करना चाहिए कि आप इन आवश्यकता में से भी कुछ राशि अवश्य बचाएं जो आपके छोटे गोल जैसे ट्रैवल ट्रिप या किसी महंगे ब्रांड के क्लोथ और स्मार्टफोन आदि को पूरा करने में मदद करें।

अब बाकी बचे 20 फीसदी यानी 8,000 रुपये को सेव करें। अपनी सेविंग और निवेश के साथ आपको हर महीने कुछ राशि इमरजेंसी फंड (Emergency Fund) में डालना चाहिए जो आपात स्थिति में आपको वित्तीय मदद करें। इसके अलावा आपको कुछ राशि को इन्वेस्ट करना चाहिए ताकि आपको रिटर्न मिले जो आपकी सेविंग को बढ़ाने में मदद करें। हालांकि, आपको इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि आपके सेविंग अकाउंट में हमेशा बैलेंस रहे जो मेडिकल इमरजेंसी में मदद करें।

इस तरह आप 50-30-20 फॉर्मूला की मदद से अपने खर्चों और जरूरतों के साथ सेविंग कर पाएंगे।

कभी नहीं होंगे फ्रॉड के शिकार, क्रेडिट कार्ड सेफ्टी के लिए अपनाएं ये 5 तरीके

परिवहन विशेष न्यूज

क्रेडिट कार्ड ने फाइनेंशियल ट्रांजैक्शन को आसान बना दिया है। अब अकाउंट में बैलेंस हो या नहीं आप क्रेडिट कार्ड के माध्यम से लेनदेन कर सकते हैं। डिजिटल फ्रॉड के मामले बढ़ रहे हैं। ऐसे में अपने क्रेडिट कार्ड को सिक्योर रखने के लिए हमें कुछ तरीकों को अपनाने की जरूरत है। आइए इस आर्टिकल में जानते हैं।

नई दिल्ली। डिजिटल ट्रांजैक्शन की संख्या बढ़ती जा रही है। इसी के साथ डिजिटल फ्रॉड (Digital Fraud) के मामले भी बढ़ गए हैं। ऐसे में क्रेडिट कार्ड (Credit Card) और डेबिट कार्ड को सिक्योर करना बहुत जरूरी है। अब सवाल आता है कि अपने क्रेडिट कार्ड को फिशिंग, बुलिंग, हैकिंग आदि से कैसे सेफ रखें?

हम आपको नीचे पांच तरीकों के बारे में बताएंगे जिसके जरिये आप अपने क्रेडिट कार्ड को सेफ रख सकते हैं।

सिक्योर वेबसाइट का करें इस्तेमाल

हमेशा ऑनलाइन ट्रांजैक्शन के लिए सिक्योर वेबसाइट का इस्तेमाल करें। अगर आप कोई असुरक्षित वेबसाइटों का उपयोग करते हैं तो अपने क्रेडिट कार्ड की डिटेल्स न डालें। इन वेबसाइट पर कई मालवेयर (Malware) होते हैं जो आपके कार्ड के डेटा को चोरी करके उसका गलत इस्तेमाल कर सकते हैं।

पब्लिक वाई-फाई का न करें इस्तेमाल

हमें कभी भी पब्लिक वाई-फाई (Public Wi-Fi) का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। दरअसल, पब्लिक वाई-फाई की मदद से हैकर्स आपके क्रेडिट कार्ड की डिटेल्स को आसानी से चुरा सकते हैं। इसके अलावा कभी भी ब्लूटिथ (Bluetooth) पेयरिंग करने से पहले भी ध्यान दें। ब्लूटिथ के माध्यम से भी हैकर्स डेटा की चोरी करते हैं।

टू फैक्टर ऑथेंटिकेशन (2FA) को रखें ऑन

अपने डेटा को सिक्योर रखने के लिए आपको हमेशा टू फैक्टर ऑथेंटिकेशन (2FA) को इनेबल रखना चाहिए। 2FA का फीचर यूजर के अकाउंट को पूरी तरह से सिक्योर रखत है। इस फीचर को मल्टी फैक्टर ऑथेन्टिकेशन, टू स्टेप वेरिफिकेशन भी कहा जाता है। यह आपके डेटा को एक्सट्रा प्राइवेसी देता है।

सोच-समझ कर शेयर करें कार्ड की जानकारी

क्रेडिट कार्ड पर कई ऐसी जानकारी होती हैं जो हमें किसी को शेयर नहीं करना चाहिए। आपको कभी कार्ड नंबर, CVV या OTP को शेयर नहीं करना चाहिए। यह जानकारी गोपनीय होती है। इसके माध्यम से हैकर्स आपके डिटेल्स को चोरी कर सकते हैं।

स्कैम से बचें

आज के टाइम में कई फिशिंग स्कैम चल रहे हैं। आपको इन स्कैम से बचना चाहिए। आपको फिशिंग स्कैम को लेकर अपडेट रहना चाहिए। हालांकि, इस तरह के स्कैम से बचने के लिए आपको कभी अनजान मेल, लिंक और अटैचमेंट को नहीं खोलना चाहिए।

एक ट्रिलियन डॉलर के पार पहुंचा प्रत्यक्ष विदेशी निवेश, ये सेक्टर्स हैं फेवरेट

FDI Inflow Data भारत ने आर्थिक विकास की यात्रा में एक बड़ी उपलब्धि हासिल की है। देश में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) का प्रवाह अप्रैल 2000 से अब तक एक ट्रिलियन डॉलर को पार कर गया है। मौजूदा समय में भारत के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का आकार करीब चार ट्रिलियन डॉलर है। आइए इस रिपोर्ट में विस्तार से जानते हैं।...

नई दिल्ली। भारत ने आर्थिक विकास की यात्रा में एक बड़ी उपलब्धि हासिल की है। देश में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) का प्रवाह अप्रैल 2000 से अब तक एक ट्रिलियन डॉलर को पार कर गया है। मौजूदा समय में भारत के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का आकार करीब चार ट्रिलियन डॉलर है।

इससे माना जा सकता है कि पिछले करीब दो दशकों में भारतीय अर्थव्यवस्था की रफ्तार बढ़ाने में एफडीआइ ने उत्प्रेरक की भूमिका निभाई है। एक ट्रिलियन डॉलर एफडीआई सिर्फ एक आर्थिक उपलब्धि नहीं है, यह वैश्विक आर्थिक व्यवस्था में भारत के बढ़ते प्रभाव को दिखाता है। आइये जानते हैं शीर्ष निवेशकों और उन कारकों के बारे में जो भारत को निवेश के लिहाज से सबसे आकर्षक गंतव्य बनाते हैं।

26 प्रतिशत बढ़ा है एफडीआई

चालू वित्त वर्ष 2024-25 की पहली तिमाही में42.1 अरब डॉलर का विदेशी निवेश आया है अप्रैल-सितंबर 2024 के दौरान 60 सेक्टर, 31 राज्य और केंद्र शासित क्षेत्रों में रहा है एफडीआई का प्रवाह

मॉरीशस और सिंगापुर हैं बड़े निवेशक

भारत में एफडीआई का सबसे बड़ा स्त्रोत मॉरीशस रहा है। मॉरीशस ने कुल विदेशी निवेश में 25 प्रतिशत का योगदान दिया है। सिंगापुर 24 प्रतिशत एफडीआई के साथ दूसरे स्थान पर है। अमेरिका 10 प्रतिशत निवेश के साथ तीसरे स्थान है। इसके अलावा बड़े निवेशक देशों में नीदरलैंड्स, जापान और ब्रिटेन शामिल हैं।

इन सुधारों से आकर्षित हुई विदेशी कंपनियां

- मेक इन इंडिया पहल
- सेक्टर में उदार नीतियां
- जीएसटी लागू होने से बढ़ा निवेशकों का भरोसा
- प्रतिस्पर्धी श्रमिक लागत और रणनीतिक प्रोत्साहन
- आर्थिक सुधारों को लगातार आगे बढ़ाया गया
- ज्यादातर सेक्टर में 100 प्रतिशत एफडीआई की अनुमति
- स्टार्टअप फंडिंग के लिए एंजेल टैक्स खत्म होना
- विदेशी कंपनियों के लिए कारपोरेट टैक्स में कमी

निवेश आकर्षित करने वाले प्रमुख सेक्टर

फाइनेंशियल सर्विसेज, आइटी और कंसल्टेंसी जैसे सब सेक्टर्स सहित सर्विस सेक्टर प्रमुख सेक्टर हैं। सबसे ज्यादा विदेशी निवेश कंप्यूटर साफ्टवेयर और हार्डवेयर, टेलीकम्युनिकेशंस, ट्रेडिंग और इन्फ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट में हुआ है।

जल्द बनना है करोड़पति तो कौन-सी स्कीम रहेगी बेस्ट, यहां समझें पूरा कैलकुलेशन

परिवहन विशेष न्यूज

NPS Vatsalya Yojana vs PPF वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने हाल ही में NPS Vatsalya Yojana लॉन्च की है। यह योजना बच्चों के लिए इन्वेस्टमेंट स्कीम है। इस स्कीम में माता-पिता निवेश करके बच्चों के लिए फंड तैयार कर सकते हैं। इस आर्टिकल में जानते हैं कि NPS वात्सल्य और पोस्ट पोस्ट ऑफिस की PPF योजना में से किस स्कीम में जल्द करोड़ रुपये का फंड तैयार हो जाएगा।...

नई दिल्ली। वित्त मंत्री ने हाल में बच्चों के लिए एनपीएस वात्सल्य योजना (NPS Vatsalya Yojana) शुरू की है। यह योजना स्पेशली बच्चों के लिए शुरू की गई है। इस योजना में माता-पिता बच्चो के लिए निवेश करेंगे जो कि बाद में बच्चों के काम आएगा।

एनपीएस वात्सल्य योजना के बारे में

इस योजना के तहत 18 साल से कम उम्र के बच्चो का एनपीएस अकाउंट (NPS Account) ओपन किया जा सकता है। अकाउंट ओपन करने के लिए कम से कम 1000 रुपये का निवेश करना होता है। इस योजना में अधिकतम निवेश की कोई सीमा नहीं है।

इस योजना में निवेश के 3 साल के बाद आंशिक निकासी कर सकते हैं। आंशिक निकासी केवल एजुकेशन या इलाज के लिए कर सकते हैं। अगर योजना मैच्योर हो जाती है तो इसे आगे भी बढ़ाया जा सकता है। बता दें कि वैसे तो यह योजना के 18 साल के बाद मैच्योर हो जाती है।

अगर एनपीएस वात्सल्य योजना के फंड में 2.5 लाख रुपये से कम की राशि होती है तो पुरी निकासी कर सकते हैं। लेकिन, 2.5 लाख रुपये से ज्यादा होने पर केवल 20 फीसदी ही निकाल सकते हैं। बाकी के 80 फीसदी की राशि से एन्युटी खरीद सकते हैं। एन्युटी की राशि से आपके बच्चे को 60 साल के बाद पेंशन का लाभ मिलना शुरू हो जाएगा।

कई निवेशक NPS वात्सल्य और पोस्ट पोस्ट ऑफिस की PPF योजना को लेकर काफी कन्फ्यू है। इन दोनों स्कीम में से किस स्कीम में बेहतर रिटर्न मिलेगा? किस स्कीम में निवेश करके कम समय में करोड़ रुपये का फंड तैयार हो जाएगा। ऐसे कई सवाल मन में आ रहे हैं। हम आपको बताएंगे कि इन दोनों स्कीम में से किस स्कीम में कम समय में करोड़ रुपये का फंड तैयार हो जाएगा।

कौन-सी स्कीम बनाएगी जल्द करोड़पति

अगर आप NPS वात्सल्य में सालाना 10 हजार रुपये जमा करते हैं तो 18 साल तक लगातार निवेश करने के बाद आपने कुल 5 लाख रुपये का निवेश किया। इस निवेश पर आपका सालाना लगभग 10 फीसदी का रिटर्न मिलेगा। अगर 60 साल तक फंड से कोई निकासी नहीं करते हैं को कुल 2.75 करोड़ रुपये का फंड तैयार हो जाएगा।

वहीं, अगर पीपीएफ में सालाना 1.5 लाख रुपये का निवेश करते हैं तो 25 साल तक लगातार निवेश करने पर आपका टोटल फंड 1,03,08,015 रुपये का होगा। बता दें कि अभी पीपीएफ स्कीम में 7.1 फीसदी का ब्याज मिल रहा है।

टाइम से पहले खत्म हो जाए लोन, प्री-पेमेंट सेलेक्ट करने से पहले जानें कहीं देना न पड़े पेनल्टी

परिवहन विशेष न्यूज

Home Loan से हम अपने आशियाना का सपना साकार तो कर सकते हैं लेकिन यह हमारे लिए कभी झंझट भरा हो जाता है। हर महीने टाइम पर ईएमआई का भुगतान करना पड़ता है। ऐसे में इस झंझट से जल्द आजाद पाने के लिए हम प्री-पेमेंट के ऑप्शन को सेलेक्ट करते हैं। आपको बता दें कि कई बार प्री-पेमेंट के ऑप्शन सेलेक्ट करने पर पेनल्टी देनी पड़ती है। पढ़े पूरी खबर....

नई दिल्ली। होम लोन (Home Loan) लेकर हम अपने घर के सपने को साकार कर सकते हैं। हालांकि, उसके बाद उसे सही समय पर चुकाना बड़ा काम लगता है। अगर लोन की किस्त टाइम से नहीं जाती है तो सिबिल स्कोर खराब होगा। इसके अलावा पेन्लटी भी देनी पड़ेगी। ऐसे में होम लोन की किस्त से छुटकारा पाने का एक अच्छा ऑप्शन प्री-पेमेंट होती है।

प्री-पेमेंट क्या है? (What is Loan Pre-Payment)

टाइम से पहले लोन को चुकाने के लिए लोनधारक के पास प्री-पेमेंट (Loan Pre-Payment) का ऑप्शन होता है। इसमें वह लोन के एक हिस्से का भुगतान करता है। इसको सेलेक्ट करने के बाद लोन की ईएमआई (Loan EMI) कम होती है और लोन राशि भी कम हो जाती है। यह जल्द से जल्द फाइनेंशियली फ्रीडम पाने का काफी अच्छा तरीका है।

अगर आप भी यह ऑप्शन सेलेक्ट करने का सोच रहे हैं तो बता दें कि बैंक इनपर चार्ज लगता है। हम आपको नीचे बताएंगे कि बैंक या वित्तीय संस्थान लोनधारक से कौन-से चार्ज लेता है।

प्री-पेमेंट पर लगती है पेनल्टी

कई बैंक समय से पहले लोन के भुगतान को रोकने के लिए प्री-पेमेंट पर पेनल्टी लगाते हैं। यह पेनल्टी लोन की बकाया राशि का फीसकी या फिर फ्लैट फीस हो सकती है। वैसे तो यह पेनल्टी लोन के शुरुआती सालों में लगाई जाती है। अगर किसी व्यक्ति ने 20 साल के लिए लोन लिया और वह शुरुआती 3 से 5 सालों में प्री-पेमेंट का ऑप्शन सेलेक्ट करता है तब बैंक या वित्तीय संस्थान यह पेनल्टी लगाता है। दरअसल, बैंक अपनी कॉस्ट की भरपाई के लिए यह चार्ज लगाता है।

कई बैंक और वित्तीय संस्थान लोन प्री-पेमेंट के ऑप्शन सेलेक्ट करने पर कोई पेनल्टी नहीं लगाती है। ऐसे में लोन लेते वक्त आपको प्री-पेमेंट पॉलिसी के बारे में अच्छे से जान लेना चाहिए ताकि भविष्य में कोई दिक्कत न हो।

इन बातों का अवश्य रखें ध्यान

आपको यह प्री-पेमेंट का ऑप्शन सेलेक्ट करने से पहले ईएमआई और सेविंग की कैलकुलेशन कर लेना चाहिए। आपको यह ध्यान देना चाहिए कि आप जो पेनल्टी दे रहे हैं वह आपके सेविंग से मिलने वाले इंटरेस्ट से ज्यादा है या नहीं। आप इसके लिए ऑनलाइन कैलकुलेटर का इस्तेमाल कर सकते हैं।

इस बात का अवश्य ध्यान दें कि प्री-पेमेंट का असर आपके इमरजेंसी फंड (Emergency Fund) और सेविंग (Saving) पर कोई असर न डालें। अगर यह आपके इमरजेंसी सेविंग पर असर डालता है तो भविष्य में आपको वित्तीय परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

आपको हमेशा इस चीज का ध्यान रखना चाहिए कि जो फंड आप प्री-पेमेंट के लिए इस्तेमाल कर रहें वह कहीं और निवेश करने पर बेहतर रिटर्न दे सकता है।

एटीएम से पीएफ का पैसा निकालने के लिए मिलेगा विशेष कार्ड; पीएफ नॉमिनी भी निकाल सकेंगे पैसा

परिवहन विशेष न्यूज

वर्ष 2025 से ईपीएफओ मेंबर्स एटीएम के माध्यम से पीएफ का पैसा निकालने की सुविधा मिल सकती है। इसके लिए सरकार काम कर रही है। इसके लिए ईपीएफओ की ओर से लाभार्थियों को एक डेडिकेटेड या विशेष कार्ड दिया जाएगा। मौजूदा व्यवस्था के तहत ईपीएफओ के सदस्यों को अपने ऑनलाइन दावे के निपटान के लिए 7-10 दिन का इंतजार करना पड़ता है।

नई दिल्ली। कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (ईपीएफओ) अपने सदस्यों को एटीएम के जरिये प्रोविडेंट फंड (पीएफ) का पैसा निकालने की सुविधा देने जा रहा है। इसके लिए ईपीएफओ की ओर से लाभार्थियों को एक डेडिकेटेड या विशेष कार्ड दिया जाएगा। केंद्रीय श्रम मंत्रालय की सचिव सुमिता डावरा ने बताया कि पीएफ संबंधी दावे के निपटान के बाद ही लाभार्थी सीधे एटीएम से पैसा निकाल सकेंगे।

ऑनलाइन दावे के निपटान के लिए 7-10 दिन का इंतजार

मौजूदा व्यवस्था के तहत ईपीएफओ के सदस्यों को अपने ऑनलाइन दावे के निपटान के लिए 7-10 दिन का इंतजार करना पड़ता है। इसके बाद यह पैसा सीधे लाभार्थी के बैंक खाते में भेज दिया जाता है। डावरा ने बताया कि ईपीएफओ अपने सात करोड़ से ज्यादा सदस्यों को पीएफ की सेवाओं बैंकों की तरह उपलब्ध कराने पर विचार कर रहा है।

आइटी इन्फ्रास्ट्रक्चर में कुछ महीनों से लगातार सुधार कर रहे हैं- मंत्री

उन्होंने कहा कि इस समय हमारा ध्यान सूचना प्रौद्योगिकी (आइटी) इन्फ्रास्ट्रक्चर में सुधार करने पर है। हम पिछले कुछ महीनों से लगातार सुधार कर रहे हैं। हार्डवेयर अपडेट होने के बाद जवरी 2025 में और अधिक सुधार देखने को मिलेंगे।

ईपीएफओ से दी जाती है ये सुविधा

डावरा ने कहा कि प्रणालीगत सुधार लाने के प्रयास किए जा रहे हैं, जिससे प्रक्रियाएं अधिक आसान और कुशल बन सकें। ईपीएफओ की ओर से अपने सदस्यों को पीएफ के अलावा मेडिकल हेल्थ कवरेज, पेंशन और अपंगता की स्थिति में वित्तीय सहायता भी प्रदान की जाती है।

एटीएम से निकलेगा पीएफ का पैसा

सुमिता डावरा ने यह भी कहा कि उम्मीद की जा सकती है कि वर्ष 2025 से ईपीएफओ मेंबर्स एटीएम के माध्यम से पीएफ का पैसा निकालने की सुविधा मिले। इसके लिए सरकार काम कर रही है। ईपीएफओ की बेहतर सर्विस को लेकर उन्होंने कहा कि पीएफ प्रावधान के लिए हम आईटी सिस्टम को बेहतर बनाने की कोशिश कर रहे हैं। इससे पहले भी ईपीएफओ की सर्विस में कई सुधार किये गए हैं। इन सुधार में क्लेम में तेजी और सेल्फ क्लेम शामिल हैं।

मरते दम तक अंग्रेजों के हाथ न आने वाले अमर बलिदानी प्रफुल्ल चाकी को नमन : ठाकुर संजीव कुमार सिंह

अमर बलिदानी प्रफुल्ल चाकी देश के पहले ऐसे युवा क्रांतिकारी थे, जिनका सिर काटकर अदालत में पेश किया गया : ठाकुर संजीव कुमार सिंह

नई दिल्ली, संजय साग़र सिंह। हमारा देश क्रांतिकारियों की वीरगाथाओं से भरा पड़ा है। अफुल्ल चाकी देश के पहले ऐसे युवा और वीर क्रांतिकारी थे, जिन्होंने देश के लिए अपने प्राणों का बलिदान कर दिया। इस युवा क्रांतिवीर ने अंग्रेजों से घिरने पर अपने सिर में गोली मार ली और स्वर्य को जीते जी देश के लिए बलिदान कर दिया।

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में देश के लिए

नवयुवक अमर बलिदानी प्रफुल्ल चाकी के त्याग और बलिदान को ठाकुर संजीव कुमार सिंह (राष्ट्रीय नेता कांग्रेस एआइसीसी एवं एडवोकेट सुप्रीम कोर्ट ऑफ़ इंडिया) ने याद कर नमन किया और कहा कि अमर बलिदानी प्रफुल्ल चाकी देश के पहले ऐसे युवा क्रांतिकारी थे, जिनका सिर काटकर अदालत में पेश किया गया। भारत के स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में मुजफ्फरपुर का किंग्सफोर्ड बम कांड खासा महत्व रखता है। यह कांड क्रांतिकारियों के अपमान के बदले के रूप में भी चर्चित है। 30 अप्रैल 1908 को मुजफ्फरपुर में किंग्सफोर्ड बम कांड को प्रफुल्ल और खुदीराम द्वारा अंजाम दिया गया था। इसके चलते गुलामी के इतिहास का दूसरा सबसे महत्वपूर्ण मुकदमा अलीपुर बम केस हुआ और बंगाल के क्रांतिकारियों के निर्भीक आत्मोत्सर्ग की क्रांतिकारी विचारधारा पूरे देश में आग की तरह फैल गई। सन्-1888 में 10 दिसम्बर के दिन जन्मे क्रांतिकारी प्रफुल्ल चाकी का नाम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में अत्यंत सम्मान के साथ लिया जाता है।

उन्होंने कहा, ₹मात्र 19 वर्ष के नवयुवक प्रफुल्ल चाकी ऐसे महान क्रांतिकारी थे, जिन्होंने अपने जीवन की आहुति स्वतंत्रता संघर्ष के यज्ञ में हंसते-हंसते दे दी। उनका जन्म 10 दिसम्बर, 1888 को उत्तरी बंगाल के बोगरा जिला (अब बंगलादेश में) के बिहारी गांव में एक ग़रीब दलित परिवार में हुआ था। वह 2 साल के थे तो पिता राजनारायण चाकी का निधन हो गया। माता स्वर्णोमयी देवी ने इनका पालन-पोषण अत्यंत कठिनाई से किया। विद्यार्थी जीवन में ही प्रफुल्ल का परिचय स्वामी महेश्वरानंद द्वारा स्थापित गुप्त क्रांतिकारी संगठन से हुआ और उनके अन्दर देश को स्वतंत्र कराने की भावना बलवती हो गई। वह स्वामी विवेकानंद के साहित्य से भी बहुत प्रभावित थे। इसी बीच 1905 में बंगाल का विभाजन हुआ जिसके विरोध में लोग उठ खड़े हुए। विद्यार्थियों ने भी इस आंदोलन में आगे बढ़कर भाग लिया। कक्षा 9 के छात्र प्रफुल्ल ईस्ट बंगाल कानून तोड़ने वाले छात्र प्रदर्शन में भाग लेने के लिए रंगपुर जिला स्कूल से निकाल दिए गए। इसके बाद क्रांतिकारी बारीद्र घोष उन्हें कलकत्ता ले आए, जहां इनका सम्पर्क क्रांतिकारियों की 'युगांतर' पार्टी से हो गया। क्रांतिकारियों को अपमानित करने के लिए कुख्यात कलकत्ता के चीफ प्रेसीडेंसी मजिस्ट्रेट किंग्सफोर्ड को क्रांतिकारियों ने जान से मार डालने का निर्णय लिया, तो यह कार्य प्रफुल्ल चाकी और खुदीराम बोस को सौंपा गया। दोनों क्रांतिकारी इस उद्देश्य से मुजफ्फरपुर पहुंचे, जहां किंग्सफोर्ड को सैशन जज बनाकर भेज दिया गया था। उन्होंने किंग्सफोर्ड की गतिविधियों का अध्ययन किया और 30 अप्रैल, 1908 को उसकी बग्घी पर बम फैंका लेकिन वह उसमें सवार नहीं था। उसकी जगह उसकी पत्नी और बेटी मारी गईं।

उन्होंने आगे कहा, ₹जब प्रफुल्ल और खुदीराम को यह बात पता चली कि किंग्स्फोर्ड बच गया और उसकी जगह गलती से दो महिलाएं मारी गई हैं तो वे दोनों दुखी और निराश हुए। खुदीराम बोस मुजफ्फरपुर में पकड़े गए और उन्हें इसी मामले में 11 अगस्त, 1908 को फांसी हो गई। उधर प्रफुल्ल चाकी ने समस्तीपुर पहुंच कर कपड़े बदले और ट्रेन में बैठ गए। उसी डिब्बे में पुलिस सब इंस्पेक्टर नंदलाल बनर्जी बैठा था, जिसे इन पर शक हो गया और उसने इसकी सूचना आगे दे दी। जब इसका अहसास प्रफुल्ल को हुआ तो वह मोकामा रेलवे स्टेशन पर उतर गए पर तब तक पुलिस ने पूरे मोकामा स्टेशन को घेर लिया था। 1 मई, 1908 की सुबह मोकामा में रेलवे की एक पुलिया पर दोनों ओर से दनादन गोलियां चल रही थीं। लगभग अढ़ाई घंटे तक बहादुर जांबाज ने खुद को चारों ओर से घिरा जानकर भी न तो अपने कदम पीछे खींचे और न ही आत्मसमर्पण किया। जब उन्होंने देखा कि आखिरी गोली बची है तो उन्होंने मां भारती को नमन किया, अपने आप को भारत माँ के चरणों में कुर्बान करने की कसम तो वो पहले ही ले चुका था पर उसकी आँखों से बहते आंसू ये बयान कर रहे थे कि वह जो अपनी धरती माँ के लिए करना चाहता था, वह अधूरा रह गया। पर उसका संकल्प कि जीते जी कभी भी किसी अंग्रेज के हाथों नहीं आएगा, पूरा होने जा रहा था। उसने अपनी आखिरी गोली को चूमा, वहां की धरती का आलिंगन किया और उस गोली से अपने ही सर को निशाना बना कर रिवाल्वर चला दी।

श्री सिंह ने बताया कि यह देख वहां मौजूद अंग्रेज भी हक्के बक्के रह गए और वहां मौजूद लोगों के मुंह खुले के खुले रह गए। जब गोलियों की आवाज आनी बंद हुई तो लोगों ने देखा कि पुलिया के उत्तर भाग में एक 20-21 साल का लड़का लहूलुहान गिरा पड़ा है और अंग्रेज पुलिस उसे चारों ओर से घेरे हुए है। कोई कुछ समझ पता उससे पहले ही अंग्रेज उस नवयुवक की लाश को अपने कब्जे में लेकर चलते बने। आजादी का ये दीवाना कोई और नहीं, प्रफुल्ल चंद चाकी ही थे। आजादी का ये वीर सपूत अपने बलिदान से मोकामा की धरती को भी अमर बना गया। अपने माता पिता की एकमात्र संतान होने के बावजूद चाकी ने देश को खातिर अपने को कुर्बान कर दिया। बिहार के मोकामा स्टेशन के पास प्रफुल्ल चाकी की मौत के बाद पुलिस उपनिरीक्षक एनएन बनर्जी ने चाकी का सिर काट कर उसे सबूत के तौर पर मुजफ्फरपुर की अदालत में पेश किया। यह अंग्रेज शासन की जघन्यतम घटनाओं में शामिल है।

उन्होंने यह भी कहा, अमर बलिदानी प्रफुल्ल चाकी का बलिदान जाने कितने ही युवकों का प्रेरणा स्त्रोत बना और उसी राह पर चलकर अनगिनत युवाओं ने मातृभूमि की बलिवेदी पर खुद को होम कर दिया। क्रांतिकारी प्रफुल्ल चंद्र चाकी के सम्मान में आजाद स्मारक समिति भी बनी। उनकी याद में दिल्ली के गांधी शांति प्रतिष्ठान में वर्ष 2006 में एक श्रद्धांजलि सभा का भी आयोजन किया गया, जिसमें मोकामा के सांसद की मौजूदगी में अमर बलिदानी प्रफुल्ल चाकी की प्रतिमा के साथ ही उन पर डाक टिकट भी जारी करने की मांग की गई लेकिन भारत माता के लाड़ले चाकी फिर भी विस्मृत और अबूझ ही बने रहे। उन पर 2010 में डाक टिकट जारी हुआ पर मोकामा में आज तक एक स्मारक भी नहीं बन सका है। जिस स्थान पर चाको शहीद हुए, वह जगह आज भी सरकार के कब्जे में है फिर भी वहां अमर बलिदानी प्रफुल्ल चाकी का स्मारक बनाने की अनुमति अब तक क्यों नहीं दी जा सकी है यह विचारणीय प्रश्न है। सत्यता तो यही है कि क्रांतिकारी प्रफुल्ल चाकी को सरकारें भले ही भूल जाएं लेकिन आम जन मानस में जब भी क्रांतिकारियों की चर्चा होगी प्रफुल्ल चाकी का नाम सबसे पहले लिया जाएगा। आज उनके जन्मदिन पर पुनः नमन और यह विश्वास कि शायद अब उनकी स्मृतियों को संजोया जाएं।

उन्होंने अंत में कहा, अमर बलिदानी प्रफुल्ल चाकी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महान नायकों में से एक थे, और उनकी वीरता ने न केवल उस समय के राष्ट्रवादी क्रांतिकारियों को बल्कि आज के युवाओं को भी प्रेरित किया। उनकी आत्मसमर्पण की भावना और अपने देश के लिए बलिदान का उदाहरण आज भी हमारे दिलों में जीवित है। किंग्सफोर्ड बम कांड, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक था। उनके द्वारा उठाया गया कदम और उनका संघर्ष आज भी हमारे देश की स्वतंत्रता की यात्रा को जीवित रखते हैं। उनका बलिदान हम सबके लिए प्रेरणा का स्रोत है, और यही कारण है कि उनके नाम को भारतीय इतिहास में हमेशा सम्मान से याद किया जाएगा। आज भी, उनकी वीरता और संघर्ष को जानने के लिए लोग प्रेरित होते हैं, और यह हम सभी का कर्तव्य है कि हम उनके बलिदान को सहेजकर रखें और आगामी पीढ़ी को इसके बारे में बताएं।

हमारे साथ बारात है आंसू ओ की मैंने दर्द की दुल्हन संग सगाई रचाई है

परिवहन विशेष

'हमारे साथ बारात है आँसू ओ की। मैने दर्द की दुल्हन संग सगाई रचाई है। तुम मेरे साथ चलकर मुस्कुरा सको, तो-विश्वास दिलाता हूँ, जिन्दगी का उपसंहार उजालो के आँगन मे होगा जहाँ आंनद की शहनाई और अपनत्व के मंगलाचार का महा महोत्सव होगा !! यह सृजनात्मक विचार संत शिरोमणि आचार्य श्री 108 विधासागर जी महाराज के परम शिष्य समाधिस्थ ऐलक श्री निशंक सागर जी महाराज के है जो मुस्कान के राजहंस थे, जो अपनी मुस्कान की स्मृतियों को छोडकर अपने अन्तस की चेतना में खो गये, हम सब से दूर जरूर हो गये ऐसे ऐलक श्री निशंक सागर जी का आज दसवीं समाधि दिवस पर हम सभी उन्हें उनकी स्मृतियों को सहेजने हेतू ऐलक श्री के बताये हुऐ मार्ग पर अपने आप को लगाये, जन जागृति के साथ समाज व धर्म के मार्ग पर चल कर आगे बढ़ते रहे।

इन्दौर शहर को अपनी पहचान दिलाने वाले जैन समाज की क्रीति को जगविख्यात करने वाले सर सेठ हुकुमचंद जी ने संस्कृति व सभ्यता को बचाने हेतू धर्म धारा को प्रभावमान बनाये रखने हेतू बहुत योगदान दिया। लोग अपने लिए बहुत कुछ करते है पर सेठ हुकुमचंद जी ने पीढियों की दिशा बदल दी। होस्टल धर्मशाला व विभिन्न मंदिरों का निर्माण किया, उसी प्रचीनतम धरोहरों मे इन्दौर शहर का सबसे पुराने दिगम्बर जैन मदिर मे पुराने शहर के मध्य जबरी बाग नसिया धर्मशाला स्तिथ चिंतामणि पाश्वँनाथ दिगम्बर जैन मंदिर बहुत ही अतिशय कारी व जागृत है। इस भव्य मंदिर को और भी प्रसिद्ध करने मे इस युग के भगवान परम पूज्य आचार्य श्री विधासागर जी महामुनिराज के परम वास्लय शिष्य समाधिस्थ ऐलक श्री निशंक सागर जी महाराज ने यहां मंदिर मे जीर्णोद्धार कराया और पंचकल्याणक व अन्य धार्मिक अनुष्ठान करा कर नसिया के भागवान पारसनाथ बाबा के अतिशय को भक्तों को बताया, इसी पुण्य योग से प्रचीन मानस्तम्भ जो प्रंगाण मे है उस मानस्तंभ का प्रतिवर्ष महामस्तकाभिषेक कराये जाने की परम्परा चालू की जो आज तक निंरतर चल रही है वही इस प्रचीन दिंगबर जैन मंदिर मे हम सभी के पुज्य आचार्य श्री विधासागर जी महामुनिराज का दो बार दर्शन का पुण्य प्राप्त हुआ, नसिया के बडे बाबा व छोटे बाबा का वह अतिशय बहुत पुण्य सोभाग्य से प्राप्त हुआ। यहां ऐलक श्री निशंक सागर जी महाराज का आशिर्वाद ही था जो आज नसिया जी मंदिर पूरे भारत में अपने अतिशय के लिए जाना जाता है। 16 दिसंबर को बंगला चोराहा मुंगावली अशोक नगर मध्यप्रदेश में हुई थी, जहां निशंक धाम बनाया गया है। परम पूज्य ऐलक श्री के दसवीं समथी दिवस पर उन्हें सभी भक्तों की और से विनयांजलि व शत शत नमन।।

उत्तर प्रदेश सरकार की बिजली बिल माफी योजना: उपभोक्ताओं को मिलेगी बड़ी राहत

इशिका मुख्य रिपोर्टर न्यूज परिवहन विशेष

उत्तर प्रदेश: उत्तर प्रदेश सरकार ने बिजली बकायेदारों के लिए एक महत्वपूर्ण योजना की घोषणा की है, जिससे लाखों उपभोक्ताओं को राहत मिलेगी। यह योजना ₹एकमुश्त समाधान योजना₹ (OTS) कहलाती है, जो 15 दिसंबर 2024 से शुरू होकर 31 जनवरी 2025 तक चलेगी।

योजना का विवरण

इस योजना के तहत, उपभोक्ता अपने बकाया बिजली बिलों पर भारी छूट का लाभ उठा सकते हैं। ऊर्जा मंत्री ए.के. शर्मा ने बताया कि इस योजना में तीन चरण होंगे, जिनमें उपभोक्ताओं को उनके बकाया बिलों पर छूट और आसान भुगतान विकल्प दिए जाएंगे।

- **पहला चरण:** 15 दिसंबर से 31 दिसंबर 2024 तक, जिसमें घरेलू उपभोक्ताओं को 100% सरचार्ज छूट मिलेगी।
- **दूसरा चरण:** 1 जनवरी से 15 जनवरी 2025 तक, इस दौरान सरचार्ज पर छूट घटकर 80% रह जाएगी।
- **तीसरा चरण:** 16 जनवरी से 31 जनवरी 2025 तक, इस अंतिम चरण में सरचार्ज पर 70% छूट दी जाएगी।

पंजीकरण की प्रक्रिया

योजना का लाभ उठाने के लिए उपभोक्ताओं को पंजीकरण कराना आवश्यक होगा। पंजीकरण के समय, उन्हें अपने बकाया बिलों के मूल धनराशि का 30% जमा करना होगा। उपभोक्ता अपने नजदीकी विभागीय कार्यालय, जनसेवा केंद्र या विभागीय वेबसाइट (www.uppcl.org) पर जाकर पंजीकरण कर सकते हैं।

विशेष लाभ

इस योजना में किसानों को भी विशेष लाभ दिया जाएगा। निजी नलकूपों पर बकाया बिलों पर छूट मिलेगी। इसके अलावा, वाणिज्यिक और औद्योगिक उपभोक्ताओं के लिए भी सरचार्ज में छूट का प्रावधान है।

समाज पर प्रभाव

यह योजना उन लोगों के लिए एक बड़ी राहत साबित होगी जो आर्थिक तंगी का सामना कर रहे हैं। कई परिवार ऐसे हैं जो बिजली बिल का भुगतान नहीं कर पाने के कारण परेशान हैं। इस योजना से उन्हें न केवल वित्तीय मदद मिलेगी, बल्कि यह उन्हें एक नई शुरुआत करने का अवसर भी देगी।

उत्तर प्रदेश सरकार की यह बिजली बिल माफी योजना उपभोक्ताओं के लिए एक सुनहरा अवसर है। सभी उपभोक्ताओं को सलाह दी जाती है कि वे जल्दी से जल्दी पंजीकरण कराएं और इस योजना का लाभ उठाएं। यह योजना न केवल आर्थिक राहत प्रदान करेगी, बल्कि लोगों को उनके बकाया बिजली बिलों से मुक्त करने में भी मदद करेगी।

जीवन की सच्ची पूंजी है समय !

किसी कवि ने समय के बारे में क्या खूब कहा है - 'समय-समय की वार्ता, समय-समय का फेर। समय लगा दे ठाठ-बाट, जाते न लागे देर।' इसलिए जीवन में मनुष्य को यह चाहिए कि वह सदैव समय की कद्र करे। मनुष्य जीवन में समय का बहुत बड़ा महत्व है। रविन्द्र नाथ टैगोर जी ने समय के बारे में कहा है कि -'

तितली महीनों को नहीं बल्कि क्षणों को गिनती है और उसके पास पर्याप्त समय होता है।' समय के महत्व को लेकर ही कहा गया है -'आछे दिन पाछे गए, हरि से किया न हेत। अब पछताए होत क्या, चिड़िया चुग गयी खेत।।' कहना ग़लत नहीं होगा कि समय मनुष्य जीवन का सबसे अनमोल और बेहतरीन उपहार है। समय से बलवान कोई नहीं, परंतु यह जानते हुए भी हम इसे बर्बाद करते रहते हैं। हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि इस जीव-जगत में सबकुछ समय पर निर्भर करता है। हम चाहें यह बात मानें या नहीं मानें, लेकिन समय से पहले कुछ भी नहीं होता। यदि मनुष्य के पास समय नहीं तो उसके पास कुछ भी नहीं है। वैसे ईश्वर ने सबको समान समय दिया है। आदमी को कुछ कर गुजरने के लिए समय को निकालना पड़ता है। जीतने वाले, आगे बढ़ने वालों के पास, सफलता प्राप्त करने वालों के पास कोई अलग से समय नहीं होता है। सभी के पास चौबीस घंटों का समय होता है, अब यह मनुष्य पर निर्भर करता है कि वह अपने समय का मैनेजमेंट कैसे, कब, कहां और क्यों करता है ? हमें यह चाहिए कि हम समय का मैनेजमेंट करें, क्यों कि समय की बर्बादी हमारे भविष्य को बर्बाद कर देती है। जोएल ओस्टीन कहते हैं -' जीवन उड़ता जा रहा है। आपके पास नकारात्मक, नाराज़ या कड़वा होने में एक मिनट भी बर्बाद करने का समय नहीं है। अगर किसी ने आपके साथ गलत किया है, तो उसे भूल जाएँ और आगे बढ़ें।' समय प्रबंधन हमें अनुशासन और धैर्य सिखाता है। यह हमें सिखाता है कि किस प्रकार अपने कार्यों को प्राथमिकता देकर हम अपने जीवन को सुव्यवस्थित और सुंदर बना सकते हैं। समय का सही उपयोग व्यक्ति को जीवन में सफल बनाता है। इसलिए वास्तव में हमें यह चाहिए कि हम समय के साथ हर पल संवाद करें। यानी कि हमें हर पल-हर क्षण को पूरी जागरूकता के साथ जीना चाहिए, क्योंकि जब हम जागरूक होते हैं, तो समय की कीमत को बेहतर समझते हैं। चार्ल्स बक्सटन कहते हैं-'आपको कभी भी किसी भी चीज़ के लिए समय नहीं मिलेगा। अगर आपको समय चाहिए तो आपको इसे बनाना होगा।' यह समय ही है जो हमें धन, समृद्धि और खुशी प्रदान करता है। सबकुछ समय के हाथों में है। एकबार जब समय निकल जाता है तो लौटकर वापस नहीं आता। समय अनवरत चलता ही रहता है और कभी रूकता नहीं है। इसलिए हमें यह चाहिए कि हम हमेशा समय के प्रति जागरूक और सचेत रहें। यदि हम समय के प्रति जागरूक हैं तो इसका मतलब यह है कि हम अपने जीवन के प्रति भी जागरूक हैं। हमें यह चाहिए कि हम कभी भी अपने समय को जाया या व्यर्थ न करें। समय की महत्ता कितनी है, यह हम इन बातों से सहज ही समझ सकते हैं जैसे कि एक साल की कीमत उस विद्यार्थी से पूछिए जो कि एक्जाम में फेल हो गया है। इसी तरह से 1 महीने की कीमत उससे पूछिए जिसे पिछले महीने की सैलरी ना मिली हो। इसी प्रकार से एक हफ्ते की कीमत हास्पीटल में दिन बिताने वाले से, एक दिन की कीमत सारा दिन भूखा रहने वाले से, एक घंटे की कीमत किसी का इंतजार करने वाले से, एक मिनट की कीमत ट्रेन मिस हो जाने वाले व्यक्ति से तथा एक सैंकड की कीमत ओलंपिक में मेडल जीतने वाले से पूछनी चाहिए, जिसने कि मात्र एक सैंकड के लिए मेडल को खो दिया। समय को 'काल' भी कहा गया है। संस्कृत में क्या खूब कहा गया है कि -'कालः पचति भूतानि कालः संहरते प्रजाः। कालः सुप्तेषु जागर्ति कालो हि दुरतिक्रमः।।' अर्थात तात्पर्य यह है कि-'काल सभी जीवो को निपुणता प्रदान करता है। वही सभी जीवो का संहार भी करता है। वह जागता रहता है जब सब सो जाते है। काल को कोई जीत नहीं सकता।' बहरहाल, समय के बारे में हमें यह भी अपने जेहन में रखना चाहिए कि समय कभी भी एकसा नहीं रहता है। यह सदैव बदलता रहता है। कभी अच्छा तो कभी खराब। इसलिए खराब समय में दुखी नहीं होना चाहिए और अच्छे समय में बहुत अधिक खुश होने की जरूरत नहीं है। बस समय के साथ सहजता से चलते रहना चाहिए। एक बात यहां पाठकों को कहना चाहूंगा कि हम अक्सर मुश्किल समय में खुद को सांत्वना देने के लिए यह कहते हुए सुनते हैं कि "यह भी बीत जाएगा", लेकिन हम अक्सर यह भूल जाते हैं कि यही वो पल होते हैं (यही वह समय होता है) जब हम सच में जीवन में आगे बढ़ते हैं, मजबूत होते हैं और विकसित होते हैं। समय के बारे में टिमोथी फेरिस कहते हैं-'किसी दिन' एक बीमारी है जो आपके सपनों को आपके साथ कब्र में ले जाएगी।'इस संसार में सबकुछ समय के अनुसार बदलता है क्योंकि, समय से कुछ भी स्वतंत्र नहीं है। हमें समय के महत्व को समझ कर उसका रचनात्मक ढंग से प्रयोग करना चाहिए, ताकि समय हमें समृद्ध, हमारे जीवन को खुशहाल करें। समय हमारे जीवन का सबसे मूल्यवान संसाधन, जिसे न तो संचित किया जा सकता है और न ही पुनः प्राप्त किया जा सकता है। हमें यह याद रखना चाहिए कि समय का सदुपयोग सफलता की कुंजी है, जबकि इसका दुरुपयोग असफलता और पछतावे का कारण बनता है। समय का सही सदुपयोग हमें हमारे लक्ष्यों व मंजिल तक पहुंचाता है। बिल कीन कहते हैं कि -' कल अतीत है, कल भविष्य है, लेकिन आज एक उपहार है। इसीलिए इसे वर्तमान कहा जाता है।'कहना ग़लत नहीं होगा कि समय का सही प्रबंधन ही जीवन का सही मार्गदर्शन है। जॉर्ज हर्बर्ट समय के बारे में क्या खूब कहते हैं -'इंतजार मत करो; समय कभी भी 'बिल्कुल सही' नहीं होगा। आप जहां खड़े हैं, वहीं से शुरू करें और अपने पास मौजूद किसी भी साधन के साथ काम करें, और जैसे-जैसे आप आगे बढ़ेंगे, बेहतर साधन मिलते जाएंगे।' अंत में, यही कहूंगा कि हमें समय का हमेशा सम्मान करना चाहिए, क्यों कि समय ही जीवन की सच्ची पूंजी है। फ्रैंकलिन फील्ड ने क्या खूब कहा है कि -'सफलता और असफलता के बीच की महान विभाजक रेखा को पाँच शब्दों में व्यक्त किया जा सकता है: 'मेरे पास समय नहीं था।'

वरिष्ठ नेता विजय महापात्र ने आज प्रतिनियुक्ति को लेकर गंभीर आरोप लगाए

परिवहन विशेष

भूबनेश्वर: वरिष्ठ नेता विजय महापात्र ने आज प्रतिनियुक्ति को लेकर गंभीर आरोप लगाए हैं। हालांकि उन्होंने बिजेड़ी के बारे में कुछ नहीं कहा, लेकिन वे दो आईपीएस अधिकारियों के बीजेपी के साथ संबंधों को लेकर चिंतित हैं। उन्होंने कहा, दो आईपीएस अधिकारियों को केंद्र में प्रतिनियुक्ति पर भेजा गया है। पिछली सरकार के दौरान ये दोनों अधिकारी बजे से ज्यादा प्रताड़ित बीजेपी नेता थे। चुनाव के दौरान खुर्दा विधायकों को जेल भेजने में उनकी अहम भूमिका थी। लेकिन राज्य की बीजेपी सरकार ने उन्हें दोषमुक्त कर दिया। भी के पांडियन बीजेडी सरकार में सत्ता के दूसरे केंद्र थे। और उनकी कोर टीम में आईपीएस अधिकारी डीएस कुट्टे और आशीष सिंह शामिल थे। इन दोनों व्यक्तियों ने सरकारी पार्टी और शासन व्यवस्था को नियंत्रित करने में प्रमुख भूमिका निभाई। वे ही थे जिन्होंने बीजेडी के असंतुष्ट नेताओं और बीजेपी के अग्रिम पंक्ति के नेताओं को हराने का खाका तैयार किया था। सभी को लगा था कि सरकार आने के बाद इन दोनों अधिकारियों पर बड़ी कार्रवाई होगी। लेकिन केंद्रीय प्रतिनियुक्ति पर भेजे जाने के बाद सारे आंकड़े उलट-पुलट हो गये हैं। इससे जहां बीजेपी नेता हैरान हैं वहीं बीजेपी नेताओं ने भी हैरानी जताई है। इस घटना ने राज्य की राजनीति में विवाद पैदा कर दिया है।

अब तक हार स्वीकार नहीं कर पाने वाले बिजेड़ी नेता इस समीकरण को लेकर असमंजस में हैं। पार्टी महल में अब यह सवाल उठ रहा है कि क्या पांडियन को पदाधिकारी बनाने वाली कोर टीम पहले से ही बीजेपी के संपर्क में थी? क्या बीजेपी के साथ डील ने पार्टी को हार की ओर नहीं धकेल दिया है? नहीं, चुनाव के बाद भाजपा का आश्रय स्थल बैठ गया है? बीजेपी उन्हें इतनी आसानी से कैसे माफ कर सकती है?

हालांकि बीजेडी के भीतर इस मुद्दे पर गरमागरम चर्चा चल रही थी, लेकिन नेताओं को समझ नहीं आ रहा था कि किससे स्पष्टीकरण मांगा जाए। दोनों अधिकारियों की प्रतिनियुक्ति को लेकर नोटिस जारी होने के बाद पार्टी के अंदर संशय का माहौल इतना बढ़ गया कि बड़ी बगावत का खतरा पैदा हो गया। पांडियन और उनकी टीम सभी नेताओं के संदेह के घेरे में है। इसलिए पिछले 4/5 दिनों में अचानक किसी घटना की आशंका से सभी नेताओं को नवीन आवास बुलाया गया है। ऐसे में संगठन स्तर पर कोई खास चर्चा नहीं हो पाई है। अध्यक्ष नवीन पटनायक अभियान को तेज करने के लिए सिर्फ दो-तीन लाइन की ही सलाह दे रहे हैं। यह दिखाने की कोशिश की जा रही है कि बिजेड़ी एकजुट है।

दहेज उत्पीड़न के मामलों में अदालतों की न्याय व्यवस्था पर उठते सवाल

देश में बनने वाला हर कानून नागरिकों के हितों की रक्षा के लिए बनाया जाता है, ताकि हर पीड़ित को इंसाफ और उसका हक मिल सके। महिलाओं के साथ होने वाले तमाम तरह के अपराधों, शारीरिक-मानसिक शोषण, प्रताड़ना और हिंसा से उन्हें बचाने के लिए उन्हें कई कानूनी कवच दिए गए हैं, इससे उनकी स्थिति पहले से मजबूत हुई है। लेकिन पिछले कुछ वर्षों में महिलाओं की सुरक्षा के लिए बनाएं गए कानूनों का दुरुपयोग बढ़ा है। आरोप लगाए जा रहे हैं कि महिलाओं की सुरक्षा के लिए बने कानून व्यक्तिगत प्रतिशोध के लिए हथियार के रूप में इस्तेमाल किए जा रहे है। असंतुष्ट पत्नियां दहेज विरोधी कानून का भी दुरुपयोग धड़ल्ले से कर रही हैं।

ऐसी घटनाएं वास्तव में देखने को मिली हैं कि पति से संबंध तोड़ने से पहले नाराज पत्नियां हिंसा और उत्पीड़न का इल्जाम न सिर्फ पति के पूरे परिवार, बल्कि दूरदराज के रिश्तेदारों पर भी लगा देती हैं। अकसर ऐसे आरोप कोर्ट में सिद्ध नहीं होते, मगर उसके पहले आरोपी बनाए गए व्यक्तियों को कोर्ट-कचहरी की प्रक्रिया के दौरान लंबी परेशानी से गुजरना पड़ता है। ऐसा ही एक मामला सामने आया है, जिसने इस कानून के दुरुपयोग को उजागर किया है। परिवार की कलह से तंग आ चुके एक एआई इंजीनियर ने आत्महत्या कर ली है, जिसने पूरे देश को हिलाकर रख दिया है। दरअसल सोशल मीडिया पर एक घंटा 20 मिनट का यह वीडियो वायरल हुआ है। आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस (एआई) इंजीनियर अतुल सुभाष ने इस वीडियो को रिकॉर्ड करने के बाद बेंगलुरु स्थित अपने घर में फांसी लगा ली थी। वीडियो में अतुल ने पत्नी की ओर से दर्ज कराए गए दहेज प्रताड़ना के आरोप से पैदा हुई परिस्थितियों पर अपनी बात रखी है। उन्होंने लिखा है कि उनकी पत्नी और ससुराल वाले उनके ही पैसे से उन्हें प्रताड़ित कर रहे हैं। उनका आरोप है कि उनकी पत्नी उन्हें उनके बेटे से न मिलने देती है और न ही फोन पर बात कराती है। अतुल ने 24 पत्रों का एक सुसाइड नोट लिखा है, जिसमें अपनी पत्नी के साथ-साथ ससुराल वालों के खिलाफ कई गंभीर आरोप लगाए हैं। सुभाष के मामले ने दहेज कानून के दुरुपयोग पर बहस शुरू कर दी है। मूल रूप से बिहार के समस्तीपुर जिले का रहने वाला अतुल अपनी नौकरी के चलते बेंगलुरु में रहता था। उनका ससुराल उत्तर प्रदेश के जौनपुर में था। उसने अपने सुसाइड नोट में पत्नी, ससुराल वालों और एक न्यायाधीश पर आत्महत्या, उत्पीड़न, जबरन वसूली और भ्रष्टाचार के लिए उकसाने का आरोप लगाया। ससुरालवालों पर आरोप है कि उन्होंने झूठा मामला दर्ज कराया और मामले के निपटारे के लिए 3 करोड़ रुपये देने की मांग की थी। आरोप है कि अतुल ने मानसिक और शारीरिक रूप से प्रताड़ित होकर आत्महत्या जैसा घातक कदम उठा लिया। सुसाइड नोट के हर पन्ने पर न्याय मिलना चाहिए लिखा है। पत्नी निकिता और ससुराल वालों के साथ-साथ सुभाष ने जौनपुर में एक पारिवारिक न्यायालय के जज पर भी उनकी सुनवाई न करने का आरोप लगाया है। सुभाष ने अपने कथित उत्पीड़न को बताने के लिए एक वीडियो भी रिकॉर्ड किया। इसमें परिजनों से कहा गया है कि न्याय मिलने तक उनकी अस्थियों को विसर्जित न किया जाए। नोट में चार साल के बेटे के लिए भी एक संदेश था जिसे अतुल ने अलग से रखा था। नोट में अतुल ने अपने माता-पिता को उनके बच्चे की कस्टडी देने की भी मांग की। नोट और वीडियो का लिंक एक एनजीओ के व्हाट्सएप ग्रुप पर भेजा गया था, जिससे अतुल जुड़े हुए थे। सुभाष ने अपने नोट में आरोप लगाया कि पत्नी निकिता सिंघानिया ने उनके खिलाफ हत्या, यौन उत्पीड़न, पैसे के लिए उत्पीड़न, घरेलू हिंसा और दहेज सहित नौ मामले दर्ज कराए थे। दरअसल दहेज कुप्रथा को रोकने के लिए हमारे देश में कई कानून बनाए हैं। असहाय महिलाओं के खिलाफ हिंसा को कम करने के लिए कानून बनाने पर जोर दिया गया था। इसके चलते दहेज निषेध अधिनियम, 1961 बना। दहेज की मांग के बाद घरेलू हिंसा की घटनाएं भी सामने आती रही हैं ऐसे में 'घरेलू हिंसा से महिलाओं का संरक्षण अधिनियम 2005 पारित किया गया। इसके साथ ही पुरानी आईपीसी में दहेज उत्पीड़न और दहेज हत्याओं को रोकने के लिए कई प्रावधान किए गए थे। आईपीसी की धारा 498 दहेज से पहले और बाद में किसी भी रूप में उत्पीड़न को दंडनीय और गैर-जमानती बनाती है। 1983 में संसद द्वारा एक आपराधिक अधिनियम 'आईपीसी 498 ए' पारित किया था जो कहता था कि दहेज वसूलने के लिए की गई क्रूरता पर तीन या अधिक वर्षों की अवधि की सजा और जुर्माना देना होगा। दहेज उत्पीड़न और दहेज हत्याओं को रोकने के लिए आईपीसी 1961 में एक नई धारा' आईपीसी 304 बी' जोड़ी गई। आईपीसी 304 बी में 'दहेज हत्या' का जिक्र है। भारतीय दंड संहिता की धारा 304 बी में कहा गया है कि अगर किसी महिला की शादी के सात साल के भीतर किसी भी प्रकार के जलने या शारीरिक चोट से मृत्यु हो जाती है या यह पता चला है कि उसकी मृत्यु से पहले वह अपने पति या पति के किसी अन्य रिश्तेदार द्वारा क्रूरता या उत्पीड़न के संपर्क में थी और इसका दहेज मांगने से संबंध है तब महिला की मृत्यु को दहेज मृत्यु माना जाएगा। दहेज हत्या के लिए सजा सात साल के कारावास की न्यूनतम सजा या आजीवन कारावास की अधिकतम सजा है। कानून पारित होते ही दहेज उत्पीड़न के हजारों मामले दर्ज होने लगे। कई बार यह विवाहित महिला के लिए सुरक्षा के बजाय हथियार बन गया जिस पर समय-समय पर अदालतों ने भी चिंता जताई। अतुल का मामला सामने आने के बाद एक बार फिर से शीर्ष न्यायालय ने चिंता जतायी है। सुप्रीम कोर्ट में एक अलग मामले में महिलाओं द्वारा अपने पतियों के खिलाफ दर्ज कराए गए वैवाहिक विवाद के मामलों में क्रूरता कानून के दुरुपयोग के खिलाफ चेतावनी दी। अदालत ने कहा है कि दहेज उत्पीड़न के मामलों में अदालतों को कानून का दुरुपयोग रोकने के लिए सावधानी बरतनी चाहिए और पति के सगे-संबंधियों को फंसाने की प्रवृत्ति को देखते हुए निर्दोष परिवार के सदस्यों को अनावश्यक परेशानी से बचाना चाहिए। जस्टिस बी. वी. नागरत्ना और जस्टिस एन. कोटिश्वर सिंह की पीठ ने कहा कि वैवाहिक विवाद से उत्पन्न आपराधिक मामले में परिवार के सदस्यों की सक्रिय भागीदारी को इंगित करने वाले विशिष्ट आरोपों के बिना उनके नाम का उल्लेख शुरू में ही रोक दिया जाना चाहिए।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023